

॥ ॐ ॥

॥ सोभासारेजकमे, वनममसोभेश्रीराज, अरहतगुरुके
ध्यानसे, सुधरे सगलाकाज ॥ १ ॥

॥ श्री जैन पुष्प रत्नमाला ॥

— १३३२६७३३.६७—

प्रात स्मरणीय, पुज्य श्री श्री १००८ श्री अमरनिहजी
महाराजके, सम्प्रदायके पयोवृद्ध स्वामीजी महाराज,
श्री १००८ श्री दयालचन्द्रजी महाराज,

—
प्रसिद्धरक्ता,

मुनी श्री १०८ श्री हेमराजजी महाराजके, सदुपदे-
शसे संग्रह करके, छपाके प्रसिद्ध कर्ता

शाधनराज गुमनाजी लुकड (खंडप)

ग्राम (मारवाड) पोष्ट (समदडि)

—
प्रथमावृत्ति १००० (वीर समत २४५२)

(विक्रम समत, १९८३ श्रावण सुद १३)

—
मुल्य सदुपयोग



वसंत मुद्रणालयमां चोमनलाल ईश्वरलाल भ्देषतऱ ढाऱु
डे सीधील हॉस्पताल-अमदावाद

(नोट)—इस पुस्तकको, उघाडे मुख, जो दिपकके, प्रकाशसे न पढे यतनासे पढे, इस पुस्तकको मावधानसे रखे, यतनासे,

(नोट)—जिस महाशयको, इस पुस्तककी आवश्य-
काहो, वह, चार, आनेके, टिकट डाक महमुलके, लिये
निम्न लिखित पतेसे भेजे टिकट पहुचतेही पुस्तक शीघ्र
भेजदी जायगि

(पुस्तक मिलनेका पत्ता)

- १ गिरधारीलाल गुमनाजी (मु खडप)
पोस्ट समदही (मारवाड)
- २ भाइ गिरधारीलाल सीताराम
मु खुरदारोड पोस्ट जटनी
जिह्वा पुगी

1 Girdharilal Gumnajee
(Village) Khandep
P O Sandari (Marwar)

2 Girdharilal Sitaram
Khurdhoad
P O Jatni Dt Puri
B N R

प्रस्तावना.

आधुनिक विज्ञानमय समयमें मुद्रयालयोंका पूर्ण आविष्कार होनेसे अनेकानेक विषयोंकी पुस्तके पाठक वर्गके सामने उपस्थित होती हैं और इसी कारणसे वाचनकी लालसा सभ्यसमाजमें बढ़ती जा रही है सत्तमग और कुसगका परिणाम जैसे मनुष्य हृदयमें अच्छा और बुरा प्रभाव जमाता है इसी तरह वाचनमेंभी अच्छी पुस्तके और हलकी पुस्तके अच्छा व गन्धा प्रभाव उत्पन्न करती है, अच्छी पुस्तके समाजमें शुभ भावना फैलाते हैं एवं हलकी पुस्तके अशुभ भावना फैलाती हैं

वर्तमान समयमें बहुतही पुस्तके मुद्रित हो चुकी हैं उसमें कितनी शर्कराकी तरह सर्वांश ग्रहण करने योग्य है और कितनी द्राक्षाकी तरह है जिसका बहुत अंश ग्रहण करने योग्य और अल्प भाग त्याग करने योग्य है और कितनी खारिकके समान है अर्थात् जिसका आधा भाग ग्राह्य है व आधा त्याज्य है कितनी बेर की समान है जिसका थोडा अंश ग्रहण करने योग्य और ज्यादा अंश त्याग करने योग्य है और कितनी धूल एवं ककरकी तरह है जिसका सर्वांश त्यागने योग्य है,

वर्तमान समयमें कितनीही पुस्तके श्रृंगार व गायनकी सजायटसे सजी हुई जहा तहा देखनेमें आती हैं जिन्होंसे विद्यार्थियोंका जीवनपर बहुतही बुरा असर उत्पन्न होता है

और समाजमें भावी उन्नतीसे वचित रहनेका प्रश्न उपस्थित होता है इस लिए एसी पुस्तकोंका प्रचार रोकनेके लिए व उन्हीकी जगह दूसरी ज्ञान और वैराग्यकी पुस्तके प्रकट करनेकी पूर्ण आवश्यकता है एसी इच्छा बहुत समय से मेरे हृदयमें लगी हुई थी

भवत् १९८१ का चातुर्मास में अमदावाद माधवपुरा में विराजमान स्वामीजी माहाराज पूज्य श्री १००८ श्री दयालचंद्रजी माहाराज तथा श्री हेमराजजी माहाराज सावकी सेवा में मेने पत्रद्वारा अपनी हृदयेछा प्रकट करी कि कोई धार्मिक व औपदेशिक पुस्तक तैयार होयतो मेरे लिए प्रदान करें जिसको मैं निजब्रह्म से छपवाकर समाज में अमूल्य वित्तीर्णकर निजब्रह्मका सदुपयोग करने का संभाग्य प्राप्त कर

माहाराज साव से मुझे पूर्ण सतोपका उत्तर मिला कि मेरे पास हालही में सशहकी ऊई एक "जैन पुष्परत्नमाला" है उक्त पुस्तक से मानव संसार का बहुत कुछ उपकार हो सकता है इस में प्रस्ताविक सज्ञाय वस्तवनोंका पूरा समावेश किया गया है कितने ही स्तवन प्राचीन मुनिव यकि रचित है जो कि धार्मिक उपदेश से पूरिन वैराग्य भाव के दर्शक है और तुमारी एसी धर्म भावना से मैं प्रसन्नता प्रकट करता हुवा यह तुम्हे उपदेशरूपसे पुष्पमाला प्रदान करता हू एसी माहाराज साव की फरमायश

से मुझे बहुत खुशी हुई और महाराज सावसे उक्त पुस्त-
को ग्रहण कर समाज हितार्थ छपवाकर धर्म प्रेमी भायोंकी
सेवा में अर्पण करता हुना अपने को कृत कृत्य मानताहू

स १९८३ पौष शुक्ल }
५ मंगलवार }

आपका
धनराज गुमनाजी.
मु गंडप, (मारवाड)

(मारवाड) गंडप के निवासी सुश्रावक पुण्यप्रभाधिक
देवगुरु भक्तिकारक गुमनाजी लुकड के सुपुत्र बडे गिर
धारीलालजी सावल चदजी सीतारामजी रुगनाथमलजी
वजराजजीने यह पुस्तक छपवाके अमूल्य भेट कीया



अनुक्रमणिका.

| नं. | नाम. | पृष्ठ. |
|-----|-----------------------------------|--------|
| १ | भक्तिक चौधीशजिनद सुमरणा | २ |
| २ | गणधरधुधाला थाने मनविगोतम देवता | २ |
| ३ | नवकार मंत्रका चौक | ४ |
| ४ | सिम्यारो चौक | ७ |
| ५ | दानसोल तपने भावना चौक | १३ |
| ६ | इततो कायामे प्रभुजी सात समुद्र छे | १९ |
| ७ | देवदेवने परतक्ष देवरोट्टि | १९ |
| ८ | आलोचना नानी | २१ |
| ९ | पडिकमणानि सज्ञाय | २३ |
| १० | जुवाको | २५ |
| ११ | सांलमा जीनजी मातीनाथ साताकारीजी | |
| १२ | मतको जोरे सग गुघटवालीको | २९ |
| १२ | मुखडा क्या जोवे दरपनमे | ३० |
| १३ | अमलकि सज्ञाय | ३१ |
| १४ | मोरादेजिरो कोडपुग्बलग पामीसाता | ३४ |
| १५ | एजगजाल सपनकी माया उपदेशी | ३६ |
| १६ | सुणो२ अंगरेज वादुर गौअग्जि करती | ३८ |
| १८ | कर पडिकमणो भावसु | ३९ |
| १९ | मत खावोरे वोर जनम विगडे मत | ४२ |

- २० निंदा मारि कोइ करोरे
- २१ एकलडि भत मेलो पियाजी मोने एक ४४
- २२ तज गप प्राण काया कुमलाणी उपदेशी ४४
- २३ तेरे पथीयारों मारग फीको ४५
- २४ दश परकार वावे सुर आउपो ४७
- २५ अनत कायना दोष अनता ४९
- २६ इण लकागढमे आइरे अमवारी राजारामरी ५१
- २७ कामदेव श्रावक श्री श्रीरनो चंपा ५३
- २८ मुखो गाडी देव मुलकावे ५५
- २९ देगो कुलजुग हदि छाया घरमे मालक वनालु ५७
- ३० कागदीयो लिख भेजु हो संग केनही ५९
- ३१ मेहाजग नाकर तेरा ६१
- ३२ दमका नही विश्वासा ६१
- ३३ गजुल पुकारे नेमपे ६२
- ३४ श्रीशक्ति प्रभुजी सातावरतेजी ६३
- ३५ निंद करो निंदक तु मत मरजेरे ६४
- ३६ सुध नमायक करणि दोरि ६५
- ३७ मारा गुरुजी गुणवता आछो ग्यान सुणायो ६६
- ३८ तुम दवा रगदीयो ग्यानी गुरु मीलीया वेद
द्वकीमजी ६७
- ३९ श्रावक नाम धराय लियो ६८
- ४० कोडी जगमे अजब चीज हे ६९
- ४१ चावडानी पुतली भजन करहे ७०

| | | |
|----|----------------------------------------|-----|
| ४२ | महावीरजीरी पालखडी | ७१ |
| ४३ | जीनेस्वर मोहनी जीताजी | ७२ |
| ४४ | मनवा समजलेरे वीर | ७५ |
| ४५ | अरीहत पहले पदजाणी नाम जपो नवकर वाली | ७६ |
| ४६ | पूज पुनमचदजी महाराजरा गुण | ७८ |
| ४७ | मेध्याउ गुरु धनराज सारदा माता | ८० |
| ४८ | काँइरे प्रमाद करे जीवडा | ८१ |
| ४९ | समकितद्वार गुवारेपेसता | ८२ |
| ५० | भजनगढ वाधारे भाइ | ८४ |
| ५१ | जन्म सारो वाता मे वित गयोरे | ८४ |
| ५२ | जिवा समकित विना न तिरो | ८५ |
| ५३ | तेरी फुलसी देह पलकमे पालटे | ८६ |
| ५४ | खोटो लालचियो | ८६ |
| ५५ | गणघरजीरा गुणमे गासा | ८७ |
| ५६ | साचकी लावणी | ८९ |
| ५७ | नेमकी जानवणी भारी | ९२ |
| ५८ | जिवरा जतन करो भाइ | ९५ |
| ५९ | उमर अजन ज्यु जावे | ९६ |
| ६० | एक मत कर गरभ दीवाना | ९८ |
| ६१ | भलाइ करले यधा | ९९ |
| ६२ | म्हाविरजिनेस्वर आपवीरा जो मुक्ति मेलमे | १०१ |
| ६३ | विना भेद वारे मत भटको | १०२ |

| | | |
|----|---------------------------------------|-----|
| ६४ | घमे घर ताल लागीरे | १०३ |
| ६५ | म्हारी वीनतडी अवधारो साहीत्र श्रीमिदर | १०४ |
| ६६ | कह्नीये मीलसे श्रावक पहवा | १०८ |
| ६७ | कर्म समां नदि फोड | १११ |
| ६८ | गोतम सामीरा कडा | ११० |
| ६९ | मेगरथ राजारी लावणी | ११९ |
| ७० | जीवारी सझाय | १२४ |
| ७१ | खीम्पाकीया सुख उपजे | १३८ |
| ७२ | हांभाजदरा कडा | १३० |
| ७३ | पारसनाथजी रोसी लोको | १३५ |
| ७४ | चदा प्रभुजीनो सीलोको | १४५ |
| ७५ | पुनमचदजी माराजरो सीलोको | १४८ |
| ७६ | पुज पुनमचंदजी माराजरा गुण | १५२ |
| ७७ | दयालचदजी माराजरा गुण | १५६ |
| ७८ | पारसनाथजीरी लावणी | १५८ |
| ७९ | सगत करलेरे साधुकी | १६१ |
| ८० | गज सुखमालजीरी लावणी | १६१ |
| ८१ | दशदानरो सझाय | १६५ |
| ८२ | गरभनकिजेहो कीणही चातरो | १७० |
| ८३ | सूत्र भगवती शतक पेलडेरे लाल | १७२ |
| ८४ | काया काचिरे भव जिवा मुर्णजी | १७५ |
| ८५ | सिखामणनो सझाय | १७७ |
| ८६ | विसजिणा मुवादनकाजे | १७९ |

| | | |
|-----|-------------------------------------|-----|
| ८७ | जीवानि सञ्जाय जिवा तुतो भोलोरे प्रा | १८१ |
| ८८ | रुखमणीनी सञ्जाय | १८८ |
| ८९ | चेतन चेतोरे उकाल भवातर फटकेले सीरे | १९० |
| ९० | जतनां सुतो जीतनो फोड | १९२ |
| ९१ | फाटकारी सञ्जाय | १९४ |
| ९२ | धिणजारानी सञ्जाय | १९७ |
| ९३ | चेतनरे तु ध्यान आरक्तक्यु ध्याये | १९९ |
| ९४ | नीदकनी सञ्जाय | २०० |
| ९५ | गर्भनी लावणी | २०१ |
| ९६ | तेरे मिरपर आया केश धोला तुलजरे | |
| | उपदेशी | २०४ |
| ९७ | तजो पराइ कथ हाथ नही आवे उपदेशी | २०५ |
| ९८ | लाखाने फौजामे रोपभ एकलोरे लोल | २०७ |
| ९९ | चौवीसी अटक | २०९ |
| १०० | मारी रस सेलडी आज आ देश, २ | |
| | कीधो पारणो | २११ |
| १०१ | तग वडोरे संसारमें | २१२ |
| १०२ | वारेवृत्तरी सञ्जाय | २१४ |
| १०३ | आरति | २१६ |
| १०४ | पचज्ञानरी आरति. | २१८ |
| १०५ | सखारथ मीधरी सञ्जाय | २१९ |
| १०६ | पंचम आरानो सञ्जाय | २२२ |
| १०७ | दिक्षा मत देजे अजोगने | २२५ |

| | | |
|-----|----------------------------------------------------|------|
| १०८ | वाहुवलनी सञ्जाय विरा मोरा गज थकी उतरो | २२९ |
| १०९ | उठ सवारे धंधे लागीये | २३० |
| ११० | चित्त समाधहु वेद सवोले | २३२ |
| १११ | दग्गसण दिठोजी मुनीराय श्री दयाचंदजी माराजरा गुण | १३६ |
| ११२ | प्रउठी गोतम प्रणमी जे प्रभाती | २३८ |
| ११३ | चोवीसी जीनराजरो लेखो लघु | २३९ |
| ११४ | म्हाजनरी सञ्जाय | २४४ |
| ११५ | आप थापी परनंदकनी सञ्जाय | २४४ |
| ११६ | चार पोररो दिनहु वेरे लोल | २४६ |
| ११७ | पंचमी तपना सञ्जाय | २४९ |
| ११८ | धरमरुचीनी सञ्जाय | २५१ |
| ११९ | संतांभाइ कुवे भांग पडी | २५२ |
| १२० | भनारे तोने किण विध कर समझाउ | २५५ |
| १२१ | धनाजीरो सत ढाल्यो | २५६ |
| १२२ | जमराजजी महाराजरा गुण | २६९ |
| १२३ | कोइ गुरु विन ग्यान नही पावे | २७४ |
| १२४ | पटप्रव्यनी सञ्जाय | २७७ |
| १२५ | श्रावक फोगट नाम धरावेरे | २७८ |
| १२६ | धना मुनो धनमां नच भव पायो | २८० |
| १२७ | कीसनाजी आरज्याजीरा गुणोरो तिलोको | २८१ |
| १२८ | तेरे पंथीयारी भावना | २८५ |
| १२९ | वधातारी तवन | २/१९ |

| | | |
|-----|------------------------------------------|-----|
| १३० | जिवापटलायारी | २८८ |
| १३१ | चितामणी पारग्रनाथजीरो स्तोत्र सुगुरुचिता | २९० |
| १३२ | परनारीरी सज्ञाय | २९१ |
| १३३ | घरके लोक अनाडी हे | २९३ |
| १३४ | ग्यान नही पायागे नही पाया | २९५ |
| १३५ | विनेचदजीरी चोवीसी | २९६ |
| १३६ | जंयुजीरी लावणी | ३२७ |
| १३७ | चोवीसी सांजीरी बोलवानी | ३३० |

॥ ॐ ॥

॥ श्री वितरागायनमः ॥

॥ श्रीजैनपुस्वरतनमाला ॥

॥ तत्तनप्रजाती ॥ गृहशांतीनोः ॥

॥ नंबर ॥१॥

ऋषिक चोवीस जिनंद सिमरणाः इणविध
गृहशांतीकरणा. ऋ० टेक ॥ रविवारमे पदम प्रचू-
जी, एक चित दीलमे धरणा; चंद्र दशामां चंदा
प्रचुजी भज सर्वने रोग हरणा. ॥ऋ०१॥ वासूपुज
द्वादसमाध्यावो, जोमिसुतगृहहरणा आठ जिनंद
ऋजबूधवासर; ज्यारा न्यारा न्यारा करु निरणा.
॥ऋ०२॥ विमल अनंत धर्म शांती कुथुजी, अरयना-
थजी उधरणा; नमीनाथ माहाविर जीनेसर, जेटो
सदायांरा चरणा. ॥ऋ०३॥ ऋषऋजीतसंऋव अ-
भिनंदन सुमती प्रचुजगतरना सुपारसशितल
श्रेयंशजीनंदका गुरुकी दशामे लेवो सरणा. ॥ऋ.४॥

सुवधीनाथ चतुर्वारे सिवरो राखी मुखपे जरणा,
 शनीवारे मुनिसुव्रत वंदो, मीट जावे जनम ने
 मरणा. ॥ ज० ५ ॥ राहूग्रहे होय शांतिचावमे, नेम प्रभु
 गुण वरणा; मल्लि प्रभु पार्श्वजिन प्रणम्यां, केतु
 दोस वीसरणा. ॥ ज० ६ ॥ ग्रहे पीडा कबूह नही
 व्यापे, प्रभूगुण उरमे धरणा; सुपसंपत्त बहु लील
 विलासे, आपदसर्वविकरना. ॥ ज० ७ ॥ चोवीसे
 जीनवर इणपर ध्यावोथे ओर जंजाल नपरणा,
 रीषचंनणमलक हे जीनवरतुठां; पामेलासुषशि-
 वपुरना. ॥ ज० ८ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ नं० ॥ २ ॥

॥ लावणीफि चाल ॥

गणधर पुंदाळा, थाने मनावे गोतम देवता;
 द्वादशांगी सुंदाळा; सुरपतनरपतथांने सेवता. ॥
 ॥ टेक० ॥ महादेव मोटा माहाविरजी, धरमतात
 ठेराया जवरी गवरो रंभा तुमची; जिनवाणीसुत

जाया के जिणसे जागीयां, मोहनिद्रासे उठ छुट
 सब त्यागीया. ॥ग०१॥ प्रथम संघेण संठाण विराजे
 सातहात तनु सोहे, रुपरसाला सुंरु सुंमाला,
 सुरनरना मन मोहे, सुरनरना मन मोहेके; जिग-
 मिगदीपता, पाषंकी करत कोइ नही जीणसे
 जीपता. ग० ॥१॥ मंगलचरण प्रथम तुं देव वि-
 नायक, मे समरीयागण इस; सुपसंपत आणंद
 वरतायो, संपत करो जगदीश, संपत करो जग-
 दीसके मे शरणे आवीयो; ऋपनेमीचंद गजानंद
 एसो गावीयो. ग० ॥३॥ इग्यारे गणधर च वदे
 सहेश्रमुनी, सवमे शिरोमणी आप, श्रीमुपन्नग-
 वइ चाषीयो सकांइ, दिन २ चढत प्रताप, दिन
 २ चढत प्रताप के लब्धी भंकारहो; अष्टसिद्ध
 नवनिद्रवधीका दातारहो. ग० ॥४॥ अमरसिंघा-
 कोपुजपुनमगरु, मे जेत्या वरुजाग; उगणीसे
 सरुसट असाकु, नागोरीयां के वाग, नागोरीयां

या वागके भिलामे आवियादरीषांनाधामी वाल-
केचोमासाठावीया. ग० ॥५॥ इती संपूर्णः ॥

॥ नवकारमंत्रकि लावणी लिखंतेः ॥

सवमंत्रांमें श्रीकारयही मंत्र हे महाराज इसी-
पेने चाजोरपताजी नवकारमंत्र प्रजावचूतपिण्ठल
नहीसकताजी. टे १ ॥ एकहीती प्रतीष्टहेनगर;
राजवल करता, म. ज्यांजीनदत श्रावगरेताजी, एक
दीन वर्षाजोर नंदी चढआश्षेतांजी; रश्यत राजा-
नंदी देशने वोचलता, म. आया वीजोरावहेताजी
देशतेरूपे लिया करुवाय. चुपकुदीना महेताजी,
वहोतस्वादलगे नृपकहेये दरषतकह्याहे; म. लावो
तुमपवरा पुगताजी. ॥न॥ १ ॥ नरनंदीतीरगये दूर
वगीचाआया म. लोकके चितर न धसनाजी इहा-
जक्षकरेगातुंमक्ष जावोटलजो जुगवसनाजी. पि-
ठा आया सुचट कहे जावे सो नही आवे म.
नही मीटी चुपके तृष्णाजो, सवनामवरो चोठी

मालघरामे बूरीहेरसनाजो नितकुंवारी कन्याके
 हातसे चिठी निकाले. म. जावेनर वोही चीम-
 कताजी न. १ ॥ वोतज जीनकी आशनराश हो
 धता. म. लेफनंवानदीमेंवतांजी वाञ्छुतप्राण ले
 लुटगयासो पिठा न आताजी इहांतेरुताकतार-
 हेवीजोरादके. म. जुपकूरोजषीलाताजी इमनित-
 खपता वीनमोत बहोत दूनीया धवराताजी, सब
 मीलकहे नृपसे नगरखालीहोयजासो म. पीठे कुण
 राषेगा नुषताजी: न. ३ ॥ नहीमांनी नृपन्नरो-
 श सवीकुं हटावे. म. लोकतो केके जयेहेरानीज
 एक दीन चिठी आइ श्रावकको जीन दासपहीचां-
 ना सागारी कियासंथा राजायवांप जंचे म धरया
 नवकारमंत्रका ध्यान, वोञ्छुतका बलगयालुट.काजी
 लुट नहीसके ऊसीका प्राण नवपदसेदालमो ज्ञान
 जक्षेदि ना म.वोपिठलाभ वकुनिरपताजी.न०॥१॥
 लेसंजमकुंदीयाविराध सोविंतरहुवा, म० नहीतो

होता सुरपद निर्वाणाजी, देव लगेसेठके पाय; तुंही
 गुरु मेरा जांण्यां भगवान, तुमवर मागो देवद-
 र्शन निरस नहीं जावे. म० सब जीवकुं दो अभे-
 दानाजी, और मेरे कल्लु नहीं चाय; एक वीजोरा
 दो नित आंण; जक्षमांन वचन जब सेठकुं ठेट
 पहुंचाया. म० नेश्वेसेजपनही भषताजी, न०॥५॥
 तेरु कहे वीजोरा नहीं आया सेठकुं लाया. म०
 ठेट नहीं गया कियातोफानाजी, सेठकिया वीजोरा
 जेट; अचंचापायातेराजना, और मरथाने तुज
 वरथाकहो केसे जाइ, म० सेठने के दीया सर्वा
 वयांनाजी, सुण जमी आसताभुप कहे मंत्र वरु
 वनवांन; किया नगरशेठ दिवांन देशका थापे
 म० लोकतो सर्वा हरषताजी, न० ॥६॥ जक्ष करे
 वीजोरा भेट सेठ दे नृपकुं, म० नगरमे जस
 विस्तरीयाजी, देव करे सेठ किवेठदेषो नवपदकी
 किरियाजी; नितमरत वंचाया सेठ विसुदगत

पाया, म० अमरसिंघजीके गणधरीयाजी, ऋष-
 नेमोचंद कहे पूज पुनमगरु ज्ञानका दरीयाजी;
 संवत् उगणीसे तेसठकी साल जिकर चोमासा.
 म० जवजीव धर्म करो संतरेवे टिकताजी,

॥ न० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ न० ॥ ४ ॥ खिम्यानो चोक ॥

सार धर्महे प्रथम साडुका, डुकरषीम्या-
 करणेका; जीनवर फुरमावे, जगतमे मारगहे
 वोतिरणेका. ॥ जी० टेक० ॥ द्वारामती नगरीके
 अंदर, कृसन माराजा राज करे; हे पिताजीनोके,
 वसुदेव देवकि मातसीरे. गजसुखमाल, नन्दन तसु
 व्याही निनांणुं अंते उर आनधरे, सामी सोमल
 कन्या रूपदेखी कृष्णजी मेहलधरे, तिणसमे नेम
 समोसरथा, नंदनवन मजारजी माधववंदनको

चले, लिये गजकुं लारजी, वाणी नुणी श्रीनेमनी
 गज लीनोतो संजमचारजी, ओठव किधोश्री
 कृस्नजी, अंतगढमे इधकारजी. ॥लावणी॥ पूठे
 जीनवरको एसी जो दिलमे आइ, मने उपरवामे
 कीसेरो दोदिषलाइ; जिनत्रिषुनी पकीमा द्वाद-
 शमी फुरमाइ; चल गये मशाणके विच ध्यां
 नदीयो ठाइ. ॥ दोरु ॥ आये सोमल तिणवार,
 देषा गज अणगार; भुसं स्वांन गजलार, जेसेकोप
 किया २ विना गुंनेमेरीवाल; इणठोकी ततकाल,
 सिर बांधी माटो पाल, पीरा मेल दिया २ हुंते
 सुसरा ने जमाइ, सगपण गीएया तसु नाइ; मुनिषी
 म्या चितलाइ, समरस कुंपियार दोय घमी केरे
 म्यांन; मुनी ध्यायो सुकल ध्यांन, पाम्या केवल
 ज्ञान; अनंतज्ञान लह्या २ मोलत लाषां जवका
 देणा चुकाया, सोच किया नही मरणेका. ॥जी॥
 ॥१॥ परदेशी परजत्र नही माने, मिथ्या मतकी

संग लागी एक केशी मुनीजी जीनोकुं गरु मी-
 लगये वझेजागी, प्रत्न इग्यारे पुठे रायजी; जीन
 दर्शनका बेरागी, एक वेले श करे पारणो, गजतणी
 त्रीसना त्यागी (सेर) राय तणे राणीहुंती, सुरी
 कंता पटनारजी; चितप्रधानथो स्वारथो एक
 सुरीकंत कुमारजी, स्वारथरीसगायां, जोझजोइण
 संसारजी; राणी राजाकुं मारवाको; करत हे वि-
 चारजी. (लावणी) थयो धर्म गेलको कंतराज तज
 दीनो, तव कुमरको बुलवाय; मारण मन कीनो;
 ए वचन मातका सुण मोन धरलीना, सुण आप
 गयो मुकान, कांननही दीना; (दोरु) जवरांणीने
 विचारी, कुमर करेगो जहारी, जाय रायपे पूकारी
 रांणी एम कहीर थाकोपारणो माहाराज, मांके
 मेलां करो आज; राजा जांण्यो न अकाज, अर्ज
 मांन लहीर रांणी वणाया हेमाल, माहे जेरदीयो
 घाल, आणप हुं तो काल: जांण्यो भुप सहीहै

कथाकार केजो मांय; रांणी टुंपो दीयो जाय,
तोइ राजा कीगीयो नाय, षिम्यातीकी रही २
(मीलत) सुरीयाञ्च नवकर मोक्ष जावेगा काम
नही नव फिरणेका. जी० ॥२॥ नगरी सावथी
कनक केतुकी, मृगावती है पटनारी; सुतषंदक
कूमरजी, जीनोके फरजन हे उत्तम प्राणी; जोव-
नवयमे परण्या लालजी, एक दीवसमे गरुवाणी
सुण हुवा वेरागी, जीणोने संजम लियो सुद
मन आणी, (सेर) मायतांतै हट कीनी घणी;
मांन्यो नही लीगारजी, सुनट दीया संग पांचसे
वेठानेचालेलारजी, वेनतणे पुर आवीया, मुनी
करत एकल वीहारजी; पुरसिंह राजा कूंती नगरी,
आयासेर मजारजी. (लावणी) राजाने राणी
रांमत गोषां करते, राणी देरव्यो निज त्रात नेण
जलजलते, राजा चिंते इसको जारपूरपको इन-
रते; उठ चल्यो सत्ताके विच कोप दील धरते;

(दोड) जब नफरकूं बुलवाये; मुनीराजको मंग
वाये, स्मशानकुं भीजवाये; एसा हुकम दीया
तिखेपाठणे सेजाल, सब उतारदी बीषाल, ना
सल नही घाल, लोइ वेहगयाःमुनीपरी साही सहे
सगपण नही कहे; क्कम्या करी शिव लहे; अं
ज्ञान लिया १ जब नृपने विचारा, राजा राण
षेवो पार, सारे गये अणगार; वके जुलम किय
२ [मीलत] सुत्तट पांचसे लियो संजमसुण
सोच किये नृप डरनेका, ॥जी० ॥३॥ इम अनेव
तरथाक्कम्यासे, किस१ कामे दाषूं नांम; एकपंदव
रुषीजीशाक्षपांचसे, पीले घाणीमे पहुंता शिव
ठाम, इणहीज आरे जतदेत्रे; देश पंजाव आं
उतम गाम, एक अमरसिधजी पूजनेये शिव
वसाधनका (सेर) अजीत दीलीके पातस्या, वाजे
तो राज रुघनाथजी सवत सतरे पुज पदारे, सुणो
उसी वगतकी वातजी, जीणधर्म सुन दीवानजी

रंगी तो सातुं धातजी, मुरधर देशकी विनती;
 उन्ना करजोमी हातजी, (लावणी) मुंनी कहे
 किम आवों थारे देश सादकुंमारे, बंदोवस्त कियो
 परधान वाइ सरजवामे; एक जोधपूरमे विचरत
 पुजपदारे, पूदराज तलेटी विच मुंनीकुं उतारे;
 [दोरु] मिथ्याती कुठ जाणे नांइ; आसोवकी
 हवेली वताइ, प्रधान तो जाणे नांइ, छाने जुलम
 किया २ उसमे थादे वजोग; कांइ न जाय सके
 लोग, मुनी करे नही चिंता सोग; जठे मुनी समो-
 सरथाइ देवरातकुं चल आये, सर्प सींघवनवाये,
 वोत मुनीकुं संताये, क्षम्या करी मुनी नमरथाइ
 ज्ञाणुंछार सुणवाये, देव आय लगे पाये; प्रातः
 जयेलोक आये, देषा मुंनी नमरथा (मीलत) उद्योत
 हुवा रुपनेमीचंद कहे, कांम वडा जीन शरणे-
 का, ॥जी०॥४॥ (कलश) पुज जीवराजर्जा संवत
 सोलेमें हुवा; पिंरुतपढ अंगजी, तसपाटपुजश्रीलाल

चंदजी, तसपाट पूज अमरसींगजी; तुलठीराम
 पूजपाट अमरके, तिजे पाट सुजाणजी, चोते पाट
 श्रीजीतमलजी, पांचमे मुनी चंद्रग्यानजी, शशि
 उध्योपूज पुनमचंदजी, ठटे मेरा गरुराज हे,
 तस पाटे जेष्ट मुनी नेम चापे, सात थिडीरो जश
 गाजहे? इति संपूर्ण ॥

॥ नं० ॥ ५ ॥ दांनको चोक ॥

दांन शील तप चौथी जावना, कोयक
 चितसे जावेगा, जगवत दरसावे; जीनोसे अषे
 अमरपद पावेगा, ज० ॥टेर॥ संगम गवालीया
 पुरव जवमे, मुनीवरकुं वेराइपीर, नये शालज-
 द्रजी शेठ गोजद्र तणे घर वाले सीर, एक दी-
 वस आयें वोपारी, रत्नकांवलतो सोले जीण
 तीर, राजगृहीमे फिरे जीनोके विकीनही होगये
 दलगीर, (सेर) जद्रा तो वेठी गोंधने, लियावो

पारीजांकजो; सुष मांग्यां दाम दीना, मेटी नग
 रनी वांकजी, षंरु वतीसे करदीया, नारथानेवे
 वेलोराषजी, सासुक्यूंमेलीयाचापला, बहुयाने दीय
 नांषजी, (लावणी) एक लेकर जंगण गइ रा
 के माही, रांणीने देष श्रेणकको सर्व सुणवा
 नृपकर असवारी चले सेठ घर तांइ, जड्रा
 दीयो बहु मांन कुमरको लाइ, (दोरु) बुट
 परसेवाकी सेर, मारे माथे धणी फेर; किन
 करणी मांइ देर. एसी दिल आइश नारीवत
 सुंइलेष, नित तजे एकाएक, सुजद्रा वेनी देष
 केसी करी जाइर धनो कहे सुणनार, एतो काय
 गिमार, लिया शालाजीकु लार, आतु ठीटकाइ
 धनो धण संजमधार, गये मुक्ती मजार, शाल
 जड्र अणगार स्वार्थसीऊ मांइ (मीलत) दां
 तणा फल परतद्द देपो, एक जवकर शिव ज
 वेगा, ज० ॥१॥ महेंद्ररायकी भूया अंजना, पव

कुमर सेव्या वकीया, जबसे ठीटकाइ वर्स वारे
 कुवर कटक गया, पंषी जोग छांने आये, शती
 पेरमी गया, जब गर्ज रया उदर वृधी देषी, सा-
 सुने शतियांके सीर दोश दीया, (सेर) देषा तो
 दीश सहे नांणका, सासुतो माने नायजी, वस्त
 मालाटेरकुटी, घनी एक तेरातायजी, तुम सुत
 आवे ज्या लगे, राषोतो मोरी मायजी, सासुतो
 अनका त्याग कीना, पिहर दो पहुंचायजी,
 [लावणी] कर दोनुके काला वेस पीहर पोचाइ,
 माइ तां कीनो द्वेष कलंक लेआइ; फिरिसोबंधव
 घरद्वार किणीन वतलाइ, देषो किण हीनपायो
 निर फेर दी डाइ [दोरु] लुटी आंसुकेके
 धार, विप्र पाये जलवार, गइ वनके मजार मीले
 गरुझानीर धूठे पूर्वजव विचार, जायो हणुवंत
 कुमार, माश धित गया वार, मांमा घर आणी
 पवन लंकासे जब आए, घरनारी नही पाये,

सब वनकुं हुंढाए छाती घवरांणी शती प्रगटो
 हे मोशाल, आए मिले ततकाल, सब उतर गये
 आल, सति हरपांणी, [मीलत] शियल तणा
 परजाव जव रहे, सुरपती सोइ गुण गावेगा, ज०
 ॥ २ ॥ काकंदि नगरीके अंदर चद्रा स्वार्थवाही
 हे, सुतधनोजीनोके; उसकुंवतीस रंजा परणाइ
 हे; सुष जोग जोगवंतो विरवांणी सुण एसी तो
 दीलमे आइ हे, सुधसंजम लिनो जीणांने ठती
 ऊरु ढीटकाइ हे, (सेर) दिक्काके दिन श्रीविरपे,
 जोड्या तो दोनु हातजी, वेले तो वेले पारणो,
 जावजीव करायदो नाथजी; रंकादिक तो वंछे
 नही, जे सातो लेणा जातजी; अन मीले तो
 जल नही, जल मीलेतो नही अनजातजी,
 [लावणी] मुनीकर२ तपस्या पंषरकर दिवी
 काया, सुरु जणे इग्यारा अंग राजगृही प्रचु आया
 तिहां राजा श्रेणक पुछे शिसन माया, करणीमे

षण् श्रीकार विरवतलाया (दोरु) सादु चवदे
 हजार, रजत जे मांहे सार; धन घनो अणगार,
 पुण्यग्राम किया २ श्रेणक वंदे वारंवार धन्य मुनीनो
 अवतार, सब नमे नरनार, निज धाम गया २
 त्रव माश पंकेधार, पाली सुध संजमचार; एक
 माशके संचार. स्वार्थसीध लया २ तप केरा फल-
 तांण मिले महा सुषांण, चोष्ट मणके परमांण;
 मोती लटक रया २ (मीलत) मोक्षजाशी माहा-
 विदेहकेत्रमे, फिर गरजावास नही आवेगा.
 । न० ३ ॥ प्रस्नचंद्र राजा अतीताजी, श्री वीर-
 मेलियो संजमचारजी; वनपंरुके माय ध्यान ठा-
 दीया एक नरक हे तीणवारजी, नगर तुमारो
 ारी लुंटे हे सुणी मुनी मन मेतकरारजी. हय
 ाय रथ पायक सज करो, वेरी लेवुं मारजी (सेर)
 णक पुछे विरजंपे, अती भये मुनी ध्यानजी,
 वीवर्मांतो आयुष पतजावे, सतमी नरक मायजी.

इतरेतो मुनी सीर मुगट जोतां, ध्यायोतो सुकल
 ध्यानजी; चाइतो नीरमल जावना, पायोतो के-
 वलज्ञानजी. (लावणी) नृप श्रुनी दूंदवी चीम-
 तकार चीतपायो, प्रश्नचंद पांमे, मोक्ष विरवत
 लायो; ए दांन शिल तप जाव च्यारमे गायो,
 पुज अमरासिंघजी माराजके सिंघामे मोयो. (दोड)
 छटे पाटपे विराजे, पुज पुनवचंदजी गाजे; जग
 चूमामणी ठाजे, गूणके ग्राही २ तस शिद्ध नेमो-
 चंद, ए सागरुलिया वंद; चीतपायो हे आणंद,
 कुंमी कळु नांही. २ संवंत उगणीसे फेर, वर्स
 ठपनेकी लेर; चतुरमासा कीया सेर, जिरुरमांही २
 माश कार्तिक हे सुद, ज्ञानपंचमी हे पूद; एतो
 वार जलो बूध, जोमी चितचाही. २ (मोलत)
 ये च्यारे अराधे तीरे चोत जीव निज मनकुं व-
 सलावेगा. ॥ ज० ४ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ६ ॥ उपदेशी ॥

इणतो कायामे प्रभुजी सात समुद्र छे,
 कांइ जीण रोतो नीर मीठो धारो १ सुंदर काया
 ठोरु चळ्यो वीणजारो, विणजारो धुतारो मोहन-
 गारो, मारी सुद. ॥ टे० ॥ इणतो कायामे प्रभुजी
 पांच रतन ठे, कांइ परपे छे परवणहारो ॥सु०॥
 इणतो कायामे प्रभुजी पांच पणीहारी, नीर जरे
 छे न्यारोश ॥सु०३॥ इणतो कायामे प्रभुजी नवसे
 नाकी, तीणरो सजाव न्यारोश ॥ सु० ४ ॥ पुट
 गयो तेल ने बूज गइ वतीयां कांइ मिंदरमे जयो
 अंधारो ॥सु० ५॥ ढस गयो मंदरप सगया थंजा,
 कांइ माटीमे मिल गयो गारो ॥ सु० ६ ॥ कहेत
 कवीर सुणो जाइ साधो, कांइ जुठो छे सर्व सं-
 सारो ॥ सु० ७ ॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ७ ॥ उपदेशी ॥

देव देवमे प्रत्यक्ष देवरोटी, तांनमांनगीत

ज्ञान एह वीना सर्व वात हे षोटी; ॥ टे० २ ॥
 जीनराजम्मुनी राज, वने ध्यान धारी; घडी थाय
 सोलमी, गोचरी संजारी, ॥ दे० २ ॥ चक्रवृती
 वासुदेव, धून्यना छे वलीया; घडी थाय सोलमी
 तो अंगजावे गलीया, दे० २ छत्रपती पातसाहा,
 छत्र चमर ढोले; घडी थाय सोलमी तो रोटीयां
 संजाले. दे० सेठ वने साहूकार, लिषेलापहुनी,
 घडी थाय सोलमी तो आंष जावे उंकी, दे० ४
 स सनेही नगिनदास अंग चसमी लगावे; घडी
 थाय सोलमी तो अलषही जगाने. दे० ५ ध्यान
 धरे नाश्रीका रुवक माला मोटी, घडी थाय सो-
 लमी तो, याद करे रोटी. दे० ६ संग लेइ संग-
 वीने प्रयाण पंथ चलावे, घडी थाय सोलमी,
 मुकांस संजावे. दे० ७ पेट पुर रोटला सर्व कांस
 सुंजे, पेट पुर अनघास गाय जेंस दुजे. दे० ८
 धन २ वीतराग, रुपवदेवसांमी; एक वर्स आहार

त्यागी, वंदू सीरनांमो. दे० ए विर २ महावीर,
 जगत वीर दोपे; षट्मास आहार त्यागी, कर्म
 सहु जीपे. ॥ दे १० ॥ दीपकवो संगतिर्थ, अढी
 दिप राजे, ठट अठम पवमास, धीरमुनी गाजे.
 ॥ दे० ११ ॥ इतो संपुर्ण ॥

॥ नं० ८ ॥ आलोवणा ॥

श्री अरिहंत सिध साज आगलेरे, पाप
 आलोवुं जोयरे; इण जव परभव जे मे करयारे,
 ते मीठामी दूकळंमोयरे. १ पाप आलोवुं प्रभु आ-
 गलेरे ॥ टे० २ उ १ ॥ पूरव जव मे पापणीरे
 सोकांने दीधो सरापरे, पुत्र तणो सुष नवी लो-
 योरे, अथवा जप्या पोटा जापरे. ॥ ते० २ ॥ केमे
 थापण राषी पारकीरे, केमे दिधो कुळो आलरं,
 केमे पांणीरे कारणेरे, सरोवर फोनी पालरे. ॥ ते० ३ ॥
 केमे रांमतरे कारणेरे तरवर तोमी डालरे गर्व ग-

जीवछकायना आरंभसमारंज, तिष्ठ परीणमिकीनो
 क्रांध कशाय करी जुटो वोळ्यो, अदतादांन वली
 लीधा ॥ सं० ३ ॥ परइस्त्री देखी प्रेम वधारथ्यो,
 धन लोभे मन धायो, दिसोदीस इधकी वधारी
 षावे पर वेथायो, ॥ सं० ४ ॥ कर्मादांन अनरथा
 दंरुने, समायक सुभ्र आव्यो; दशाविगासी आ-
 ठम पर्षा, पोसा भलो ते जाव्यो ॥ सं० ५ ॥
 जीमण वेला जीमवा वेठो, साथ चिंतवणा वी-
 सरीयो, सलेहणा तप वीरजि भाष्या, एकसो
 चोवीस दोषण भरीयो; ॥ सं० ६ ॥ जांण अजांण
 जे पडीकमसे, कर्मे हलवो थासे वरणनाग नटवा
 ना मोत्रने दृष्टांते, पेला मुक्ति जासे, ॥ सं० ७ ॥
 समायक पोसो पनीकमणो, अशाता सहित जे
 करसे उना नगरमे मुंनी तेजसिंघ चाषे; दया
 धर्मना साषे, ॥ सं० ८ ॥ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० १० ॥ जुवाका स्तन ॥

उजल कुलने कलंक लगावे, जीणसुया ते
मन मोडदेरे; प्यारे बूरा विसन तु ठोरुदेरे,
ठोडदे छोऊदे छोरुदेरे. ॥ प्या० १ ॥ जुव विसन
ज्यांन गमावे, मत पोवो हलाहल ढोलदेरे,
॥ प्या० २ ॥ हाथ घसे अरु आथनसेला, लगी
प्रीतया तोरुदेरे. ॥ प्या० ३ ॥ नांम इसीका जु-
वा जगतमे, नरकादीकमे ठांडदेरे. ॥ प्या० ४ ॥
चोतमल कहे पाली चोमासे, नाथ चरण चीत
जोडदेरे ॥ प्या० ५ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ११ ॥ प्रजाति ॥

सोलमा जीनजी शंतनाथ साताकारोजी
थांरा दर्शनरो बलीहारी थांरी महीमा जगतमाहे
चारीजी, ॥ सो० १ ॥ हथणापुर वासुसेनराया
रांणी अचलादे राजायाजी सो स्वार्थसीद्धयी

चवी आया माता चवदे सुपना पायाजि ॥सो०२॥
 आगे हुंतो हथणापुर मायो मृगीरो रोग मिटा-
 योजी, सो थयो शंती २ सदा सुपदायो जेजेकार
 वरतायोजी ॥सो०३॥ चाद्रवा वद सातम आया
 जेष्टा वद तेरस राजायोजी सो माता पीता नांम
 ज दीघो शंतीकुंवर पर सीधोजी ॥ सो० ४ ॥
 कुवरपणे रह्या सारो वर्स पचीस हजारोजी सो
 पठे हुवा मंडलीक रायो सहेश्र पचीस वर्स था-
 योजी ॥ सो० ५ ॥ पुर्व पुन्य क्रिधा चारी चक्र-
 वृतरि पदवी धारीजी सो लाष चोरासी गजरथ
 घोडो पायदल छिनु किरोडोजी ॥सो०६॥ एकलाष
 ने वाणु हजारो ज्यारे राण्या रोप रीवारोजी सो
 दिन २ हरष सजोडो, वेटा हुवा डोडकी रोमोजी
 ॥सो०७॥ पट पंडके राइसो राजा सहेश्र वतीसो-
 जी सो छोटा राजा वतीस हजारो सगला नमावे
 सीसोजी ॥ सो० ८ ॥ सोले सहेश्र रतनारी षांनो

विस सहेश्र सोना रुपारी जानोजी सो ज्यारे घरमे
 छे नवनिधानो धनरो किम आवे मानोजी ॥सो०७॥
 चवदे रतन चंडारो देव सेवे पचीस हजारोजी
 सो एक दीवसनोर सोडो घांन सीजे मण चारकी
 रोडोजी ॥सो० १०॥ पेले पोरमे वावे बीजे पोरमे
 पावेजी सो तीजा पोरमे पकावे चोथा पोरमे
 पावेजी ॥ सो० ११ ॥ दस लाख मण लुणो इण
 सुंन लागे उणोजी सो चालीस मण हींगरो वगा-
 रो निनाणु मण वेसवारोजी ॥ सो० १२ ॥ असी
 लाख मण जाणो ज्यारे वृत्तरो परमाणोजी सो
 और मशावो सारो गिणतां नही आवे पारोजी
 ॥सो० १३॥ चक्रवृत्तरी पदवी सारो भोगवी बर्स
 पचीस हजारोजी सो इसडी कृष् प्रभु पाइ छीन
 मांहे छीटकाइजी ॥ सो० १४ ॥ वरसीदांन देइ
 सारो जुरतो मेळ्यो परीवारोजी सो जाण्यो इथर
 संसारो सहेश्र जीणांसुं होय गया त्यारोजी सो०

१५॥ जेष्टा वद चवद लिधो दीक्षया किनो छका-
 यां रीरुद्धाजी सो एक मासमे केवल पाया सारो
 तुरत कियो उपगाराजी ॥ सो० १६ ॥ जीनमार्ग
 उजवाढ्यो मीथ्यामतने गाल्योजी सो वासट
 सहेस अणगारो आरज्यां निवासी हजारोजी
 ॥ सा०१७ ॥ कवली तीनसेन च्यार हजारो ज्यांने
 मारो नमसकारोजी सो श्रावग दाय लाप ने नव
 हजारो श्रावगसें ठावत धाराजी ॥सो० १८॥ दश
 लाप ने तयांसी हजारो श्रावीकांनो परीवारोजी
 सो च्यारुंही तिर्थ तारया नव जीवांरा कार्ज सा-
 रयाजी ॥ सो० १९ ॥ दिष्या पाली वर्स पचीस
 हजारो जोर कीयो उपगारोजी सो नवसे साधांसुं
 संधारो कोधो जेष्टा वद तेरस सिंधोजी ॥सो०२०॥
 हुंतो जीनमारग साचो जाणु ओरहि रदे न्हंहीं
 आणुजी सो पाषरु देव आपरे आगे पीण मारे
 दाय न लागेजी ॥सो०२१॥ मुज उपर कीर्पा कीजो

अजर अमर सुष दीजोजी सो श्री चंद्रनांणज
 सांमी ज्यारीमे आझा पांमीजी ॥ सो० १२
 रुप सुषलाल करे अरदासो माने दीजो मुक्तीन
 वासोजी सो प्रजाते उठ गुंण गावे ज्यांरे संतह
 संत वरतावेजी ॥ सो० १३ ॥ इती सपूर्ण ॥

॥ नं० १२ ॥ वुंसो वाजेरे माहाराज सिरदार
 सिंगको ए देशी ॥

मत किजोरे संग गुगटवालीको ॥ टे० २ ॥ एव
 रंगीली आली पांणीरे चाली भाली हजारीसिंग
 उरसाली ॥ म० १ ॥ तांम हजारी सिंघता सब
 कारी यारी करेगे मोसे मतवारी ॥ म० २ ॥ शिलसु
 रंगी नारी मोहनगारी ठमक २ चाली दे गाली
 ॥ म० ३ ॥ तिजे दीन निज घर बूलाया नेनेंकी
 कर सनकारी ॥ म० ४ कंत आयो जद डजन
 लागो मुज वचादे मे गड थारी ॥ म० ५ ॥ फटे

चुटे सब वसन पेराये सारी पेन वनगी वीसारी
 ॥ म० ६ ॥ सारी रात वीतावी उसमे अजब मार
 उस दीन मारी ॥ म० ७ ॥ छोरु दिया गुप चुष
 चल आयो, वात एह फीर अजमाली ॥ म० ८ ॥
 चूनदाव क्या पाली सगरी हसन लगी घणदे
 ताली ॥ म० ९ ॥ परनारीको पाप कह्यो जीनः
 जीनसे संग देवो टाली ॥ म० १० ॥ चोथमल
 नथमुनीको चेलो, जोडी किसनगढ मजारी ॥ म०
 ११ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० १३ ॥ उपदेशी ॥

मुषका क्या जोवे दर्पनमे तेरे दया धर्म
 नहीं मनमे. ॥टे०श॥ जवल्लग फूल रहे वामीमे,
 वास रहेगी उनमे; हंसा ठोरु चल्या जवदेही,
 गंध उठेगी तेरे तनमे. ॥मु०१॥ कवनी २ माया
 जोडी सुरत रही नीज धनमे, दस दरवाजा घेर

लिया जब रहे गइ मनरी मनमे. ॥ मु० २ ॥
 नंदीयां गेरी नाव पुरांणी, उतरा चावे ठीनमे
 सतगरु होयतो पार उतारे नुगरा डवोवे उनमे.
 ॥ मु० ३ ॥ दादर मोर पपैया चोले कोयल चोले
 उनमे घरवारी तो घरमे राजी जोगीतो राजी
 रनमे. ॥ मु० ४ ॥ पटीयां पाके पाग सवारि जुलपी
 जुलावे तनने कहेत कवीर सुणो चाइ साडु, एक
 एक दीन वासो वनमे. ॥ मु० ५ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० १४ ॥ कंत तमाष्ट परहरो ए देशी ॥

श्री जीनवांणी मन धरी सतगरु दे उपदेश
 मोरालाल, चावीस अजद माहे कयो अमल
 अजक्ष विशेष. ॥ मो० १ ॥ अमल मषावो साजना
 अमल विगोवे तनमां लंग वगास्या घेरणी आवे
 आषो दीन ॥ मो० अ० २ ॥ अमली अमलने
 सारसो आवे आनंद थाय मो उतरतां आरत घणी

धीरज जीवन धराय ॥ मो० अ० ३ ॥ आलस उजागरो
 अती घणो वेठो टक्क्यां पाय मो अकल कांइ
 न उपजे धर्मकथा न सुणाय ॥ मो० अ० ४ ॥ काला
 अहीथी उपनो नांमे जे अफीण मो संग करे कुंण
 एहनो पिरुत लोक प्रवीण ॥ मो० अ० ५ ॥ पेला
 मुष करुवो हूवो वले कंठ घेराय मो उदर वधे
 नित आफरो इणथी अवगुण थाय ॥ मो० अ० ६ ॥
 नाक वंधावे बोलता आधो वचन बोलाय मो
 अमीय सुकावे जीजनी, इणने पाय वलाय ॥ मो०
 अ० ७ ॥ डाढीने मुंछां दीसी उगे नही अंकुर
 मो काया काली चस्म हुवे, गावकी गाले नुर.
 ॥ मो० अ० ८ ॥ पलक अवेलो जो लीये तो आ-
 त्म अकुलाय मो नाक चुये नेणां ऊरे, काम करी
 न सकाय ॥ मो० अ० ९ ॥ ए अधविच मारगमां पडे,
 जीवत मृत्यु समांन मो हात पगांरी न सांगले
 अमली हूवे वेस्चान ॥ मो० अ० १० ॥ आगरारो

आछो कयो मालवीमांय भेल मो आपदसुं सषरो
 नही मिसरी सुं मन भेल ॥मो० अ० ११ ॥ नव-
 टांक जे नर जीरवे तेसु अही वीष न जणाय
 मो अमल घणो षाधां थकां कंदरप बल मोट
 जाय ॥ मो० अ० १२ ॥ अमलीने उनो रुचे ठाको
 न आवे दाय मो षोवी रोटी षांडथो ऊपर दूध
 सुहाय ॥ मो० अ० १३ ॥ कुलवंती जे कामनी
 जांण जुगतीसु जांण मो कातीवीषो रण करे अ-
 मलीने दीये आंण ॥मो०अ०१४॥ प्रीतम आसा
 पूरती नं करे रीस लीगार मो कथन न लोपे
 कंथनो ते वीरली संसार ॥मो०अ०१५॥ दुरजागणी
 नारी जीका बोले करकस वेण मो ररे अधम अ-
 फाणीया, आलशवंत अजांण ॥मो० अ० १६ ॥
 परणी लायो पारकी स्युं किधो थे धेट मो पोतानुं
 पीण पेट ए निटानिट जराय ॥ मो० अ० १७ ॥
 कांन कंठ शुद्धण सहु वेची षादो तेह मो निर-

लज तुज घरवासमां केहवो सुप पामेस ॥ मो
 अ० १७ अमल सम अमुगो नही मांनो ए सु
 सीप मो बोले सुंदर देहकी अंते मंगावे जिष
 अ० १८ ॥ दालीद्रिने दोहीलो सुरवीरने सेल
 श्रीमतने पीण नही चलो जोता ए जंजाल म
 अ० २० ॥ सासु बहु वढतां छतां रीसे अम
 जषंत मो वालक षावे अजाणतो जे घर अम
 होवंत ॥ मो अ० २१ ॥ प्राणबंध जीणसुं
 तेतो तजीये दूर मो कर्मादान दसमो कयो विष
 पार पंहुर मो० अ० २२ चतुर वीचारी च्री
 किजे अमल परीहार मो क्षम्यावजि पिंकुत त
 कहे माणक मनोहार ॥ मो० अ० २३ ॥ इती संपु

॥ नं० १५ ॥ ऊपदेश ॥

नगर वनीता भली वीराजे जीगमीग २ सोहे
 कंचन मांहे कोट वीराजे सुर नरेना मनमोहेजी ।

इण कोरु पुर्व लग पांमी साता मोरादेवी साता-
 जी ॥ टे० २ ॥ आदेसर आय उपना मरुदेवीने
 पेटोजी जांमण जगमें हुइ अतीचावी जीण्यो
 रीषव जीनेसर वेटोजी ॥ इ० २ ॥ सेज्या उपर
 वेठा सोहे त्रीवना तकीया गादीजी भर्त वाहुवल
 सराषा पोता जगमे दिपे दादीजी ॥ इ० ३ ॥
 अठाणुं वले नांना पोतां बुल २ पाए लागीजी
 रूप अनोपम अवल विराजे मुलकंता मुष आगेर्जी
 ॥ इ० ४ ॥ दांमी सुंदरी दोनुं पोती रही अकन
 कुमारीजी मोटी सतीयां मुक्त पहीती जगमे म-
 हीमा भारीजी ॥ इ० ५ ॥ षेष्ट हजार पिढ्या
 निजरा दीठी नांम तीणां राध रीयाजी सोग सं-
 ताप कदे नही क्रीनो पुरा पुनज करीयाजी ॥ इ० ६ ॥
 अगमे कदे न हुइ असाता ठसको कदेय न कि-
 धोजी जीव्या ज्यां लग मरुदेव्यांजी उषद एक
 न लिधोजी ॥ इ० ७ ॥ आदेनाथजी अठे पदारथा

दीनी भर्त वधाइजी हर्ष थइने हस्ती वेठा पुत्र
 वंदणने आइजी ॥ ३० ८ ॥ इंद्र इद्राणी देवी
 देवता नर नारथांना वृंदोजी समोसर्णमांहीं सा-
 हव सोवे जीम तारां वीच चंदोजी ॥ ३० ९ ॥
 जग तारणमे जोती जांमण घ्यायो उजल ध्यांनो
 जी मोह कर्म जीत्या मरुदेवी पांम्या केवलग्यांनो
 जी ॥ ३० १० ॥ इण चोवीसीमे सगला पेळी
 शिव रमणीमे पेठाजी मरुदेव्याजी मुक्त पहोता
 हाथी होदे वेठाजी ॥ ३० ११ ॥ श्री आदनाथने
 उदरे धरिया मुक्ती पहुंती माताजी शष रायचंद
 कहै जे गुण गावे ते नर पामे साताजी ॥ ३० १२ ॥
 संवत अठारे वर्ससैं तीसे मेडते नगर चउमासो
 जी काती वद सासम गुंण गाया मुंणतां लील-
 न्नीलासोजी ॥ ३० १३ ॥ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० १६ ॥ उपदेशि ॥

ए जगजाल सुपनेकि माया इस पर क्या

गर्वानारे घट गड़ आव रहेन नही पावे कूण
 राजां कूण राणारे ॥ ए० १ ॥ करमेका चराच मुष
 निर्ये देष २ हर्षनारे सुंदर नार षनी मुष आगल
 सेवट वास समशानारे ॥ ए० २ ॥ गादी वेस गर्भ
 अती तोले वोले मगज भरांनारे अंतरज्ञान
 श्तो नही सोचे आपर निकट पयानारे ॥ ए० ३ ॥
 कर २ कपट निपट धन मेढ्यो संचर एक दांनारे
 समत ठक्यो मनमे नही सोचे आषीर माल
 त्रिरांनारे ॥ ए० ४ ॥ छांणा चुग कर लियो विश्रांमौ
 सुपने पुत मीलानारे उड गड़ निंद शूली जव
 अंषीयां अंत ठानका छांनारे ॥ ए० ५ ॥ सुपने
 राज लियो त्रीहु जगको सिर पर छत्र धरांनारे
 जाग्यां पत्र छत्रकी जायगा मांग २ अन पांनारे
 ॥ ए० ६ ॥ थोडेजी तवमे कर्म बहु बांधे कर २
 नेक मठांनारे पोढण अवसर परभव पहुंचतो ठाली
 पढ्या ठीकांनारे ॥ ए० ७ ॥ रत्नचंद्र ए उदेश

इथरता-निज-गुण मन ठहेरांनारे अल्प-जगे
 सतगरुके वचने पुद्गल भर्म नीटानारे ॥ ए०८॥
 ॥ इती संपुर्ण-॥

॥ नं० १७ ॥ उपदेशी ॥

सुणो २ अंगरेज बहादूर गड अर्जि करती मुजमे
 क्या तकसीर आज मे विनाहक मरती ॥सु०१॥
 मेरा दूध सब दुनियां पीवत केहवत हे माता ईसी
 वातका विचार देषो क्यूं मुजकुं मरवाता ॥सु०२॥
 वे दरदी तेरी अकल कीदर गइ जुल्म हुवा जाता
 उवे दरदी कसाइ होकर मुजे मारपाता ॥सु०३॥
 नर दुनियांमे ज्ञान पायकर चोरी छीनवाता मुजे
 मारकर पाप बांधता क्या गरु शिषलाता ॥सु०४॥
 मेरा दिलकी मेइज जाणुं कहं किसे अरजी-ज्ञानी
 समजे अपने ज्ञानमे ओर सब-गरजी ॥ सु०५॥
 सब साहिव तुम समज देषो गज-वहोत करती

मे लाचारी गरवि होय कर सवकुं सुष करती
 ॥ सुं० ६ ॥ दुध पिलाती पुत्र जीणती दुंनीयां
 पालणकुं जमीदारकुं पैसा दीलाती हाशिल राजाकुं
 ॥ सुं० ७ ॥ गार्कीके मेरा पुत्र जुताजी सुलक दे-
 षणकुं सोजा सहेरमे श्धकी होती गोवर लीप-
 णेकु ॥ सुं० ८ ॥ दुध दही घृत घरमे रपती छछ
 वांटणेकुं इतना सुप मेरे संग होता लष्ट पूष्टणेकुं
 ॥ सुं० ९ ॥ वछ वारसने पुजे सहेलीयां मंगल
 करणेकुं पाव पेरणने होवे भोजनी कंटक चूरणकुं
 ॥ सुं० १० ॥ ठोल नगारा चंग ढोलकी दुनीया
 मंरुवाती श्री ठाकुरका मंदीर मांहे रंगराग होती
 ॥ सुं० ११ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० १८ ॥ परकीमणारी सज्जाय ॥

कर परकीमणो जावसुं दोय घजी सुन्न
 ध्यांन लालरे पाप अठारे छोरुने जीनवर अज्ञां

मांन लालरे ॥ क० १ ॥ मुल सुत्र नवकार गुणो
 देवगरु धर्म सार ला. ज्ञान दर्शन चारीत्र सही
 पालो नीरतीचार ला० ॥ क० २ ॥ समता आव-
 सक पे लको चोवी सतो तंत सार ला. दोय आ-
 वसग पुरा हुवा वंदणा दोदो वार ला० ॥ क० ३ ॥
 चोथारी अज्ञा मांगने वृतरा कहे अतीचार ला.
 अक्षरमांही उप्योग दे निद्रा वात निवार ला.
 ॥ क० ४ ॥ लागो दोषज देषने गरु पासे आलोय
 ला प्रायचित्त लेइ सुध हुवो साल मरापो कोय
 ला. ॥ क० ५ ॥ पांचु ५ पद पमायने पांचु अंग
 न माय ला. वंदना अरीहंत सिद्धने साधारे लग
 पाय ला. ॥ क० ६ ॥ लष चोरासी जीवने समचे
 सर्व पमाय ला. वेर न राषे केहसुं एसा जाव उ-
 जल लाय ला. ॥ क० ७ ॥ आवसग कावसग
 पांचमो कीजे अंग संकोच ला. मन वच काया
 वस करी धर्म ध्यान आलोच ला. ॥ क० ८ ॥ छटो

आवसग इम कहे आगमी केरा जाण ला. दसु
 चोल चितारने करे सगत सारु पचषाण ला. ॥ क०
 ९ ॥ वेसे मावो गोमो उंचो करी कहे नमोथुणं
 दोयश ला. एक सीझां ने वीजो गरु तणो इण विध
 आवसग होय ला. ॥ क० १० ॥ करतां आवसग
 इण विध आवे काल अजाण ला. जाय मोद
 उरहो रहेतो निश्चे देव विमान ला. ॥ क० ११ ॥
 श्रेणक राजा पुछीयो विर समीपे जाय ला. मोल
 समाझक ऐकनो श्रीमुष दो फूरमाय ला. ॥ क० १२ ॥
 विर जीनेसर इम कहे सुण तु श्रेणक राय ला.
 सोनेरी वावन सुंगरी दलालिमे जाय ला. ॥ क०
 १३ ॥ मोल नही इण मालरो धर्म अमोलक जाण
 ला. आराधे सुधे मने तो पहुंचे निर्वाण ला.
 ॥ क० १४ ॥ श्रेणक मन इचरज थयो सुण जोनधर्म
 अमोल ला. श्रीमुषसुं फरमावीयो ज्ञान पटारो
 पोल ला. ॥ क० १५ ॥ वीषेकपाय पाडो पातली

नवतत्व हिरदे धार लां कहे मयाचंद घनतीके
 श्रावग इण संसार लां ॥ क० १६ ॥ इति संपुर्णं ॥

॥ न० १७ ॥ वोरकों स्तवन ॥

मती पात्रोरे वोर जनम विगडे ॥ म० १ ॥
 संस आहारका दोष लगत हे, तस जीव भषे
 सीर धुल पडे ॥ म० १ ॥ वोर कूपत कया वेदक
 से रोग उठे ने देही वीगमे ॥ म० २ ॥ परजवमे
 वदलो नही बुटे, काटे जीभ करे टुकमे ॥ म० ३ ॥
 चषू इंद्रीवश पतंग परुत हे अगन शिषासु जाय
 अडे ॥ म० ४ ॥ रस इंहीवस राज गमायो कुपत
 अंब भषीने मरे ॥ म० ५ ॥ उत्राध्येन अथेन सातमे
 दोषो मांश वधाय मरे वकरे ॥ म० ६ ॥ कंदमुल
 तुंतो जषे मती मुर्ष नर्क नीगोदांमे जाय पने
 ॥ म० ७ ॥ शतगरू शिष मांने नही मुर्ष भुंभुं
 कर उलटो जगमे ॥ म० ८ ॥ मुगमां ठमती पा-

वारे भीजाया प्रत्यक्ष देषो प्रगटे अंकुरे ॥ म० ए ॥
 अचके जोग वग्यो अतभारी शिवरमणीके वन
 जावो वनडे ॥ म० १० ॥ वार २ नरजव नही पावे
 काल जेमे पकडे २ ॥ म० ११ ॥ कर्णमुनी उपदेश
 सुणावे जनम मरणके मेटो दुषडे ॥ म० १२ ॥
 इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ॥ २० ॥ राग काफी ॥

निध्या मोरी कोइ करोरे दोष वीना सोच
 न कोय ॥ नि० १ ॥ निर्मल संजम सुघ प्रणामे
 कासुं कहसी लोय ॥ नि० २ ॥ आप तणा गुंण
 करकर मेला निरमल करदे मोय ॥ नि० ३ ॥
 विन साबु रोजगार दियां वीनां कर्म मेल दे धोय
 ॥ नि० ४ ॥ निंदक सम उपगार करे कूण अंतर
 करके जोय ॥ नि० ५ ॥ रतन जडत कर थीर
 मन रापो ज्युं सोने काट न होय निध्या मोरी

कांडू करोरे ॥ ६ ॥ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० २१ ॥ उपदेशी ॥

एकलडी मत मेलो पियाजी माने ए टे०२
 काया सुंदरीने जीव लाडलो दोय मील मांड्यो
 मेलो पिलंग उपरथी धरती पोढायो पड्यो कट्टु
 वेहेलो ॥ पि० १ ॥ चालोनी आपना रंग महेलमे
 चोपडवा साषेलो अबकी बाजी दाव पीयाजी
 प्रभु भज लाहो लेलो ॥ पी० २ ॥ सुमत सपीकी
 सीष मानलो कूमताने आगी ठेलो वार २ मे
 करुं वीनती हेलो झुरो षेजेलो ॥ पी० ३ ॥ कुटुंब
 कवीलो झुरतो रहे गयो हंस उठ चलयो अकेलो
 चोकचंद कहे सुणो नरनारी अबके मीलवो दो-
 हेलो ॥ पी० ४ ॥ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० २२ ॥ उपदेशी ॥

तज गये प्रांण कायाकु मलाणी मंदीरमां

क मुंदर छोडी गाय ने जेस घर घोडी हरीहर
 रकी नार सुलषणां छोडी दोय पुत्र नकी जोडी
 त० १ ॥ च्यार जणी मील जान वणांइ वणी
 गठकी होरीह. जाय नंदीमे फूंक दीवी फाग-
 णके होरी ॥ त० २ ॥ घरमे तेरी माता रोवे पृंण
 रोवे गोरी तुलडीदाश कहे कर जोडी जीण जोडी
 तीण छीनमांहे तोडी ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ॥ २३ ॥ वनाकि देशि ॥

तेरापंथी यांरो मारग फीको बावी सांको
 लागे निकोजी ॥ ते टे० २ ॥ उणां दया तणी जडी
 काटी या कीण वीध रहेसी नाकीजी ॥ ते० १ ॥
 यो धर्म दयामे होवे एह नाक जनम विगोवेजी
 ॥ ते० २ ॥ मुज टाल दुजाने नहीं देणो इसोकु म
 त्यां रोकेणोजी ॥ ते० ३ ॥ अनुकंपा प्रभुजी भाषी
 सूत्र भगवत्ति साषीजी ॥ ते० ४ ॥ पुन्य नव प्र-

कारे भाष्यो नही सावज निरवद दाष्योजी ॥ते०
 ५॥ पापि कहे सादु टाली देवेसो वहुल संसारीजी
 ॥ ते० ६ ॥ वे शास्त्रभेद नही जाणे कुंमती नीज
 रूढ तांणेजी ॥ ते० ७ ॥ अनुकंपा गोशालानी
 आंणी करी शितल लेस्या अगवांणीजी ॥ते० ८॥
 दुष्टी कहे प्रजुजी चुका ए निदव चक वाडुकांजी
 ॥ ते० ९ ॥ ए गरुनां अवगुण बोले येही ये अज्ञां
 नही डोलोजी ॥ ते० १० ॥ वे धर्म मर्म नही
 जाणे वे रूढ आपणी तांणेजी ॥ ते० ११ ॥ पुछी
 यां जवाव नही आवे जद वांतासु वीलमावेजी
 ॥ ते० १२ ॥ करो दुष्ट धर्मको टालो भवी सुद्ध
 धर्म संभालोजी ॥ ते० १३ ॥ हुवे दांन दयाथी
 तीरणो करो जीनवचनारो निरणोजी ॥ते० १४॥
 नथमल रोयटमे गावे पुनवंत निरणो पावेजी ॥ते०
 १५ ॥ उगणीसे व्होतेर साली दिक्षा परजावां
 पालीजी ॥ ते० १६ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० २४ ॥ रसियारा गीतकी देशी ॥

दश प्रकारे बंधेसुर आउषो करतो पिठयाता
 प सुंग्पांनी उजल रापेहो मनरी भावना ज्युं थारा
 कटसी पाप ॥ सु. द. १ ॥ साध पदारया हो मारा
 सेरमे हुं फस्यो प्रमादरे माय सु. कारज लागो हो
 काचा जगतसुं मे नही कीयो दरशन आय ॥ सु.
 द. २ ॥ दुजे वोलें हो सतगरुनी देशना हुं सुण
 नही सकीयो आय सु. घेपगमाइ हो जाणुं कोइ
 मोटकी तोपीण देवता थाय ॥ सु. द. ३ ॥ मुनी
 पदारया हो मारे आंगणे घरमे नही सुजतो आहार
 सु. अंतर सोच करे मांहीलो तोपीण नफो अपार
 ॥ सु. द. ४ ॥ समांयक पडीकमणो हुवो नही
 सोच करे मनमांय सु. सोच करंतां हो टांको
 झलं गयो तोपीण देवता थाय ॥ सु. द. ५ ॥ वोलें
 सुंणीजे हो भवीयण पांचमो गुरु मिढ्या ग्यांनरी

भंडार सु. उदम न किनो हो ज्ञान भणवा तणा
 दियो जमारो हार ॥ सु. द. ६ ॥ साधर्मिनी सार
 संभाल कीदी नही चुक पडयो भरपुर सु. साचो
 सगपण मारे सांमी तणो कर्म कीया चकचुर ॥ सु.
 द. ७ ॥ मुनीवर पगल्या हो कीना मारे आंगणे
 घरमे सुऊजो अनपांण सु. मुनीवरजीरे आहार
 षपे नही पिस्तां थांसु देव विमाण ॥ सु. द. ८ ॥
 धमजागर्णा पाचली रयण किधी नही निद्रा पा-
 पणी आय सु. धर्मने ध्यानमारे सजीयो नही पि-
 स्तायां सुदेव विमाण ॥ सु. द. ९ ॥ साद पदारथा
 हो मारे सहेरमे मोटा गुंणारी माल सु. उषदभेषद
 आहारपांणी तणी मे पुठी नही सार संभाल ॥ सु.
 द १० ॥ बोल सुणिजे हो दशमो हितकरी मुनिवर
 किदो विहार सु. पहोचा वण रिषेप रहि नहि,
 मारे दिल वसिया अणगार. ॥ सु. द. ११ ॥ दस

बोलांरोहो लावोलीजीयेः ज्यारामोटाजाग सु रात-
 दीवस मारे मन मे वसरया देवगरु धर्मसुं राग सु.द.
 १२ समत अठारे हो वर्स वावने फागुण मांश म-
 जार सु चंडावल मेहो जोकी जुगतसुं मुनीआस-
 करण अणगार सु. द. १३ ॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ॥ २५ ॥ श्रावक धर्मकरो सुवदाईए ॥

अनंतकायना दोष अनंता जांणीजवीयण
 प्रांणीरे गुरुउपदेशे ते परीहरजो एहवी जीनवर-
 वांणीरे अ १ प्रथवी पांणी अगनी ने वायु वनस्प-
 यती प्रत्येकारे ए पांचे थावर गरुमुषथी सांजलजो
 सु वीवेकारे अ २ वेइंद्री तेइंद्री चउरिंद्री पंचेद्री
 प्रमुषारे एकेकि काय जीनराय जाण्याजीव असं-
 ख्यारे अ ३ ए ठ कायतणा जे जीवाः ते सहुएकण
 पासेरे कंदमुल सु इने अग्रे जीव अनंत प्रकासेरे
 अ ४ वहू हिंस्यानो कारण जाणी आणी मनसु
 विचारोरे कंदमुल जक्षण परहरीयो करजो सफल

जन्मारोरे अ ५ अनंतकायना वहू चेद जाख्या
 पनवणाउपंगेरे श्री गोतमगणधरने आगे विर जी-
 णंद मन रंगेरे अ ६ नर्कतणा ठे चार दूवारा रात्री-
 भोजन पहेलुरे परस्त्री बीजुं अथएणुं तीजुं अनंत-
 काय तीमहेलुरे अ ७ ए च्यारे जेनर परीहरस्ये
 दया धर्म आदरस्येरे किरत कमलात्त सविस्तरसे
 शिवमंदीर संचरयेरे अ ८ चवदे नियम संभारी
 संपेपो पकीकमणो दूवारोरे गरु उपदेश सुणोमन
 रंगे ए श्रावक आचारीरे अ ए पांचे परवे पोसो
 कीजे भावे गरुने पुजेरे संपतसारु दांनदीजे इण-
 भव लाहो लीजेरे अ १० पर उपगार करी निज-
 सगते कूमतक दाग्रहे मुंकोरे नवो उपदेशसुणीने
 मुल धर्म मत चूकोरे ॥ अ ११ ॥ तपगह नायक
 शिवसुपदायक श्री विजेएत्तसुरेंदारे तास पसाये
 दीनस्थाये जवसागर आणंदारे अ १२ ॥ इतीसंपूर्ण ॥

करसी जोररे ॥ ई ७ ॥ कहे रावण सुणहे मंकोवर
 तुं पराईजाई इंद्रजीतसा पुत्र हमारे कुंनकरणसा
 चाईरे ॥ ई ८ ॥ तुं सुण माहाराणी राम आयोतो
 मारो सुं लीयो ॥ टेरे ॥ हनुमानसा पायकउनके
 लक्ष्मण सरीसा भाई जलती अगनमे कूदपकेगा
 कोट गीणे नही खाईरे ॥ ९ ॥ तुंम सुण होप्रतिम
 राम आयोहे दल लेकरी ॥ टेरे ॥ सुग्रीव चाव मं-
 कलमिलोया मीलीया नलनेनिल लंकालेवण ता-
 हरी सरे कांई न करसी ढीलरे ॥ तुं १० ॥ जगनो
 उनसुं जीतनेसरे सबकुं करसुं जेर कुटपिटने वारे
 काहु मारे चडणरीदेरजी ॥ तुं ११ ॥ जनमरको चा-
 कर मारो इणकी कांई वरुाई जुळुमांही उंमारी
 लेसुं रामलक्ष्मण दोय भाइरे ॥ तुं १२ ॥ दशमाथा
 उड जावसी सरे घर सुं जासी राज लंका जासी
 सोवनीसरे कांई न सुद्धरे काजरे ॥ तुं १३ ॥ इम-
 कहीने करी तयारी मिलीया सुजट अपार मंडो-

वरी निज गई मेलमे हो सीहोवणहाररे ॥ ई१४ ॥
 सातवार समजावीयोसरे तोई न माने वात जीव
 इण्णगमावीयोसरे याराषसरी जातरे ॥ ई १५ ॥
 रामलाठमण जीतीयासरे शिता लेने आया राम
 पुवाइ फिरी शहेरमे राजवभीक्षण पायारे ॥ ई१६ ॥
 ॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं १७ ॥ जलानी देशि ॥

एक दीन इंद्र प्रसंसीयोजो भरीरे सभारे
 मांय द्रढताइ कांमदेवनी कोइ देव न सकेनी गाय
 १ श्रावग श्री विरनो चंपानो वासीरे :टेर: शरदीयो
 नही एक देवताजी रुपपिचास वणाय कांमदेव
 श्रावग कने आयो पोष दसाळारे माय श्रा २ हं-
 जोरे कांमदेवजी तोने कलपे नही ठे कोय थारो
 धर्म तुं ठोमे नही पीण हुं ठोडाव सुंतोय श्रा. ३
 रुपपिचाशनो देषनेजी रुरप्यो नहीरे लिगार जा-
 प्यो सीथ्याती देवता वेठो श्रुद्ध मन ध्यानजधार

श्रा ४ एक वार मुपसुं कर्होजी देव, कहे वारंवार
 श्रावग मन करना चलयो तव देवता आयो वार
 ॥ श्रा ५ ॥ हाथीनो रुप वेक्रे कियो पिचासपणो
 कीयो दूर पोष दसाला मे आयनेजी बोले वचन
 करु श्रा. ६ मनमेही नहो कंपियोजी हाती सुंड
 मेजाल पोष दशाला वारे आयने दियो आकाशे
 उछाल ॥ श्रा ७ ॥ दंतुसल मेजालनेजी कांवलनी
 परेलोल उऊल वेदना उपनीजी न चलयो ध्यांन
 अरुल ॥ श्रा ८ ॥ गजतजने सर्प वण्योजी कालो
 माहाविवराल रुंक दीयो ठाती चढीजी क्रोधी माहा
 चंमाल ॥ श्रा ९ ॥ अतुल वेदना उपनीजी चल्या
 नही तीलमात सुरती हां प्रगट थयोजी देवता
 रुप साष्यात ॥ श्रा १० ॥ कर जोरुने इम कहे
 थारा सुरपत कीया, वखाण मे नही सरध्या मुढ-
 मती मे उपसर्ग कीनो आण ॥ श्रा ११ ॥ तन
 मन कर चलयो नहो थे धर्म पाया परमाणु षमो

अपराध थे माहरो ईम कही सुर गयो ठाण ॥
 ॥ आ १२ ॥ विरजीणंद समो सरीयाजो कांमदेव
 वंदण जाय विर कहे उपसर्ग दीयो तोने देव
 मीथ्याता आय ॥ आ १३ ॥ हंता सांमीसा चहेजी
 समणासमणी लीयाबुलाय घरवेठा उपसर्ग सयोजो
 ईमऊंपे जीनराय ॥ आ १४ ॥ वीस वर्स ल-
 गपा लीयाजी श्रावगना वृत वार पहेले स्वर्गे
 उपनाजी चवजासी भवपार ॥ आ १५ ॥ आ हडता
 इदेषनेजी पालो श्रावगधर्म कांमदेव श्रावगनी
 परेजी थेपां मोर्साव सुषधर्म ॥ आ १६ ॥ मुरधर
 देससुं आयनेजी जेपुर कियो हे चोमास अष्टा-
 दशंछीयासयिजी रूपकुशालचंदजी किनो प्रकाश
 ॥ आ १७ ॥ इती संपूर्ण

॥ नं २७ ॥ उपदेशि ॥

मुर्पो गानी देषी मळकावे उमर तेरी रेलतणी
 पर जावे ॥ टेर ॥ संसार रुपी गानी वनावी राग

द्वेष दो पाटा देहक वापलशपेका तेम फिरे आ
 उषाना आंठारे ॥ मु. १ ॥ कर्म अंजन कसाय
 अगनी विषे वारी मे जम्यो त्रसना जुंगल आगल
 कन्यो च्यार गती मांहे रल्यो ॥ मु. २ ॥ प्रेमरुपी
 आ कका लगाव्या रुवेडवा जोरुथा जाई पुर्वजवनी
 षरछी लेइने चेतन वेसारु वेठा मांइरे ॥ मु. ३ ॥
 कोइ कटि कटली आनकतीर्यजंचना कोइ कलि-
 द्वा मनुद्वादेवा कोइ ऐटी कटलीधासी धगतीना
 पांमवाई मृत मेवारे ॥ मु. ४ ॥ घकीघकीघडीयाल
 वागे रात दीवश ऐ मवही जावे वाजे सीटी ने
 उपडे गाडी मासामासना मेलज आवेरे ॥ मु. ५ ॥
 आयुसरुपी आव्यो इस्टेसन हंसलो ते हलुहलु
 थावे पाप जरी पाकीट लेई जाता काल कोटवाल
 त्यां आवेरे मु. ६ काल नकमां जमराय पासै जायने
 सुप्यो ततकाले आरंज करीने आव्योरेप्रांणी कूंची
 पाकमे घालेरे ॥ मु. ७ ॥ लाप चोरासी जीवा

जोनीमां जीवको ते फिरफ़ीर आवे सत गुरु शिखजे
 आराधे ते पांमे मुक्ती दुवाररे ॥ मु ७ ॥ सने
 अढारेसे ठाक्षीसे वर्षे आत्मध्यांन लगाई गोपाल
 गुरुना पसायथी मोहने आगामी गाईरे ॥ मु
 ८ ॥ इती संपूर्ण.

॥ नं० २९ ॥ उपदेशि ॥

देषोकुल जगहंदीछाया ईणमेमालकवणी लु-
 गांयां ॥ टेर ॥ घरमेवेठी हुकमचलावे जोडे वडी
 हतांयां घरको पावंद तो दुगमगजोवे जाणे मायजे-
 लयादेषो १॥ नारी ज्युंवाकरेघूरका धुजणलागीकाय
 जीणसुं डरतो घरमे नही आवे: जाणे कालीकाषाया।
 ॥देश॥ घरषांवंदनेलेषोपुठे: कितना दाम कमाया:
 रोकन हूवे सो घरमे सुंपो: पीवपरदेश सिधाया
 ॥ दे ३ ॥ हलवे घोक्षणमे नही समजे जाणे ढोल
 वजायां: मना करेतो दुणी होवे: लेसोटो धमकाया:

॥ दे ४ ॥ मनमांने ज्युं फिरेजटकतीः सारी रीत
 उठायांः गुंगट गाती डुर कियाः सवमेटदीवीअव-
 कायां ॥ दे ५ ॥ इणमोड्या सुं कांई न होवेः थोती
 करे वनायांः मे नही आई थिजदे घरमेःधूल उरुतीः
 अबदेपो सारे घरकी माया ॥ दे ६ ॥ हात जोरने
 षांवंदवोलेः मेतो सहू जरपायाः ईणपाघरुोरी सर्म
 राषणीः तो मेलाषकमाया ॥ दे ७ ॥ लाय लंकारी
 मीली करकसाः पापयजदे मुजआयाः मना करे तो
 माने नांही करेजो मनका चाया ॥ दे ८ ॥ इतरा
 काया कीणपर होगयाः एक लुगाई लायाः पेली-
 पोच विचारी नाहीः अबे कांई होवे पिठतायांः॥
 दे ९ ॥ सीऊो लुगायां मीलगई थांनेः दमना नही
 पुलायाः तिणसुं गरजनही छे थारेः वोलो म्रगज
 भराया ॥ दे १० ॥ वृमावीसनु महेश जगतमेः मो
 आगल जरमायाः तुं दीशे माठरको जायोः जोर
 कांई चलाया ॥ दे ११ ॥ नारीसेतीकरेसांमनो कोई

फते नहीपावे मुंछ मरोनी वेठजावे तो लाषां
 लोकहेराया ॥ दे १२ ॥ सारी नारी नही सारसो
 कीसन कहे सुणजाया प्रीत्मकेण कदे नही लोपे
 जाण्णे इश्वर पाया ॥ दे १३ ॥ इतो संपुर्ण ॥

॥ नं० ३० ॥

पुर्व पुषळावती वीजजे मे नमीयाजी नगरी पुरु
 रीकणी नांम राजरूद्धठोडीहो संजम आदर्यो श्री-
 श्रीमंदर सांम ॥ १ ॥ कागदीयो लीष जेजु हो संगु
 को नही ॥ टेर ॥ चोतीश अतीसे हो प्रभुजी पर-
 वर्या वांणी गुण पेंतीश एक सहेश्रने आठ लक्षण
 धणी प्रतुजील्यारागनेरूश का २ तिनतोज्ञान हूंता
 घरमे थकांजी दिक्षा लियां चोथो थाय केवल
 उपना हो सर्वज्ञानी थया थारा दर्शनरी मन चाय
 का ३ जगन दशलाष हूवाथारंकेवली सादूहूवेसो
 कोरु तिनलोकना साहीवथे धणी थारा चरणवां-
 दणरोकोड का ४ वारे गुणांकर प्रभुजी दीपता मोटा

प्रतहारज आठ दोष अठारे मांहे लोको नहीजी
 संच्यापुननाथा का ५ सतरमा जीनजीरं वारे ज-
 नमीया मुनीसुवृतवारेदीक्षा लीध उदयपेटालहो-
 सीजीन आठमो विचेथासो जीतुंमेसीध का ६
 दुरदेशावर जीणरो पीउवसे तेनी नार सुहागण
 कहाय माहावीदेहमे प्रभुजीवीराजीया कहो नीर
 धनीयां केमथाय का ७ आरुंगरनेहो नंदीया
 अतघणी विचेविकटविध्याधर गांम वांणी सुण-
 चानेहो आयसकूं नही यांही लेसु तुमांरो नाम
 का ८ कूवधीकदाग्रही जर्तमेघणा अपछंदाअव-
 नीत ऐकआधारप्रभु मुजमोटको मारेसुतररीपर-
 तीत का एभर्तषेत्र मेहो प्रभुजीहुं वसुं पुपलावती
 जीनराय कोश्कदीनि प्रभुजीसुं मीलवातणी मारे-
 दीसेबे अंतराय का १० कोमां कोसांराहोप्रभुजी
 सुं आंतरो आवूं केमहजुर पूजजेमलजी करेथांसुं
 चीनती मारीवंदणाजगते सुर का११इती संपूर्णमा॥

॥ नं० ३१ ॥

मे हाजर नोकर तेरा प्रभुपटोली घायदोमेरा
 टेर. आतमंगाउ कलममंगाउं पांनामगाउंकोरा
 सुगतपुरीको पटोलीघायदो सीसनमाउं मेरा मे १
 कोनीर मायाजोमी मालकीयावहू जेला जमका
 दूत आयफिन्या जवलुंटलिया सवमेरा मे २ दिव
 के विचदरीया बलगाहे दरवाजापर पेरा सुमतसी-
 पाही हाजरराधू चोरनघाले घेरा मे ३ मुनालालकी
 आई अर्जहे प्रभु चरणे चीतमेरा जनममरणका
 फेराटालो पारलगादो बेना मे ४ संपुर्ण ॥

॥ नं० ३२ ॥ उपदेशि ॥

॥ दमकानही वीस्वासा जेसे पांणीमें गले
 पतासा ॥ टेर ॥ एक दीन एसा होगारे लोकां
 जंगल होगा वासा वहां तेरे पर द्रोवज मेगी पश्रु
 चरेगी घासा ॥ द० १ ॥ जुठाही अन धन जुठा-

ही जो वन जुटा है घर वासा जुटारा चरच्या
 घूनीयां मे जुठाहे मे वासा ॥ द० १ ॥ एकवार
 श्री जीनजीका जजले मन हुलासा नवल कहे
 मे कटु न विस्वासा जब लग घटमें स्वासा ॥
 ॥ द० ३ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ३३ ॥ नेमराजुलकी ॥

॥ राजुल पुकारे नेमपीया ए सीक्या करी ठोरु
 के चले चूक हमसे कीयापरी ॥ रा० १ ॥ हुय
 आशकी निरास उदास नीत धरी प्यारा वसन
 हीमे राजी तम पीरमे परी ॥ रा० २ ॥ संग लीजीए
 दयाल दया धर्म आदरी निशदीन तुमेरा कहेत
 ज्ञानकी जरी मुनी चंद्रवीज चर्ण कमल चित्तमे
 धरी ॥ रा० ३ संपुर्ण ॥

॥ नं० ३४ ॥ ख्यालकी ॥

॥ श्रीशंती प्रभुजीसाता वरतेजी थांरा नांमसु॥
 टेरा॥ उदर आये जव मरी मीटाइ वरतायो सुष-
 सारे संकट जंजनवीरद तुमारोः शास्त्र मुनींद्र पु
 कारेसुषसंपतको आपो प्रभुजी आपद सहु नीवारो
 जी ॥ श्री० १ ॥ ताव तप तो कदेय न आवे
 सीयोदाहू नही ठेरे सिर वेदन तो जजी नरेवे दू-
 श्मन ठोमे वेरे चुत प्रेत तो अलर्गही नासे ईमृत
 होवे जेरजी॥श्री०२॥प्रत्यक्षपर चोथांरो प्रभुजीवेरी
 जावे चाज सुध मन सेती समरेतांने सुधरे सगला
 काजः अष्ट महात्तय दूर पुलावे आदर देवे राज
 जी ॥ श्री ३॥ शंता करता विरद तुमारोः सवही
 रोग मीटावोः गांम गयो रोकुशले आवेः होवे हर्ष
 वधावोः दिन २ लक्ष्मी वधे चोगणीः पांमे राजप
 सावोजी ॥श्री०४॥वांज कांमणी पुत्र(ज) लज्जरावे
 निरधनीयां धन पावे अंधा वेरा होवे ज अठा

पापी पाप गमावे रांमचंद्र कहे नित सुप वरते
शंतप्रभुने ध्यवोजी ॥ श्री० ५ ॥ इति संपुर्ण

॥ नं० ३५ ॥

धोवी धोवे कापकारे: निंदक धोवे मेल: जार
हमारो लेचल्योरे: ज्युं विणजाराको वेल॥१॥निंदक
तुं मती मरजेरे: मारी निंध्या करेला कूण: नि॥टेरा॥
निंदक नेडो राषजोरे: आंगण कूटी वणाय: विण
सातू पांणी वीनारे: मारापाप मेल धुप जाय॥निं२॥
निंदक वेठो जरी सजांमे: चीत निंध्यारे माय: ज्ञान
ध्यांनतो सब जुलगयो पीण कूवदज जुट्यो नायानि
३॥निंदक निंध्या करे घणेरी: चले आपर ठांदे: गरु
मांड तांरी निंध्या करमे: कर्म घणेरं वांधे ॥ निं०
४ ॥ परना अवगुण रांड जीतरा: मेरु ज्युं देषावे:
पोताना तो अवगुण ढकतो बोले: धका नकमे खावे
॥ निं०५॥ चोरी जुगारी काठ लंपटी जुठा बोलो
सोड परना छेद्र तकतो चाले नवशमे दुपीयोहोय

नी० ॥६॥ निंदक तुंगल जावसीरे ज्युं पांणी मेलुं
 ण कवीररे तो रांमजारे निंद करे कहो कूण ॥निं०
 ७ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥नं० ३६ ॥ नवकार मंत्रजी शेष्यांन घटोए देशि॥

॥ परमाद मांहे वेस जावे पछे समायकने
 मोडो आवे फेर राग द्वेष रीलगी डोरी सुध समा-
 यक करणी दोरी ॥ १ ॥ विषय विषेनी जर जोवे
 फेर मेल परायो नित धोवे निज उंगणने ढक
 वोरी ॥सु० २॥ मुडो वांधने वेस जावे मेल उतारे
 षत जमावे मुषसु वोलेजी महोरी ॥ सु० ३ ॥
 विकथामां डरयो च्यारे विन कारण उं ठोलीयो
 लारे श्रावक वाज रयो घोरी ॥ सु० ४ ॥ समायक
 मांहे करे जटको वले नयणांशे कर रयो मटको
 हसे हसावे नर गोरी ॥ सु० ५ ॥ संतोसेतीकरे
 कजीया कदे कजीयावीनां नही रंजीया पर निंदीया

करणी सोरी ॥ सु० ६ ॥ विनय भक्त सुर हे दूरो
 पर निंदा करणने सदा सुरो दसमे अंग कही
 चोरी ॥ सु० ७ ॥ जीव अजीव नहीं उलषीया
 श्रावग मांहे वाजरया मुषीया ठाह नहीं श्रदा कोरी
 ॥ सु० ८ ॥ छल छेद्र जोवे परका उंगण नहीं
 जोवे घरका सवज चाषा बोलेजोरी सु० ९ राम-
 चंद कहे सुण लीजो सुद्ध समाइक थे कीजो
 ज्ञानी सकारे जोमतोरी सु० १० ॥ ईती सपूर्ण ॥

॥ नं० ॥ ३७ ॥

मारा गुरजीगुणवंता आछोज्ञान सुणायो टेर.
 जीवतोअनादी मोहनिंदमेछायो ज्ञानको जलछांट
 मोकुं आपजगायो मा० १ प्यासीयाने ठारनिर्मल
 नीरजोपायो चुषानेपीर षांडकोजीम जातजीमायो
 मा० २ रागसुण ज्युं नागरहे वहूतघूमायो चाद्र वे
 वरसादज्युंऊड आपलगायो मां० ३ घोरयो सं-

सारसागर आप फूरमायो रुवताईणमांय मांके
 आप वंचायो मा० ४ महामुनी नंदलालजीत स-
 शिक्षहूलसायो उगणीसे तेसटमांहे गढ चितोरुमे
 गायो मा० ५ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ न० ३७ ॥ खएलकी ॥

तुंमदवापरोदो ज्ञानोगरुमीलोया वेदहकीमजी
 ॥टेरा॥ अष्टकर्मको रोग अच्यंतर जनममरण दूष
 जारो तुरत फुग्त सब रोग मीटेलो दवा वोत
 गुणकारीजी ॥ तु० १ ॥ बोटो वडी मीठी करुवी
 गोह्यां हे तैयार आंष मोचकर झटपटलेलो मत
 करो औरविचारजी ॥तु०२॥ समज सर्यांना वार
 वार ए जोग मीले नही ऐसा हित मुफतकी दवा
 पीलादे कोरुी लगेनही पेसाजी ॥तु० ३॥ जीत-
 वांणोका चूर्णलीयां वादी हरे तमाम जो इतना
 ही सोपरघोतो होवे पर्म आरांमजी ॥ तु० ४ ॥
 माहामुनी नंदलालतणा शीष जोरुकरी ईमगावे

ऐसा मोषा आणमीलेतो रोगसोग मोट जावेजी
॥ तु० ५ ॥ ईती सपुर्ण ॥

॥ नं० ३९ ॥ पूरो सुपनही पंचमा आरे ए राग ॥

श्रावक नाम धरायलीया ज्यांरे त्रशथावरनी
नही ठे दया शुद्ध नही ज्यारे नवकारो ए श्रावगनो
नही आचारो ॥ टेर १ ॥ थापण मेले ज्यांरी दवा
करे सुं कषाईशकुमी साषत्तरे मरनही परत्तवजावारो
॥ ए० २॥ चोरीकरे परधन हरे कुमा तोलाने मा-
पाकरे षोटा वीणज करे न्यारो ॥ ए० ३॥ घरकि
नही मरजादा करे परदारसेती गमन करे कांण
मरजाद नही थारो ॥ ए० ४॥ धनके काज अका-
ज करे तेतो कीणवीध संसार तीरे आरंभ करे
अती विस्तारो ॥ ए० ५॥ वन कटावे बहू जारत्तरे
वली सखना संजोग करे सरोवरनी फोमावे पालो
॥ ए० ६॥ धर्मस्थांनकमे कबू नही आवे वली रां-

मत देषणनेजावे कांमनही प्रतीकमणारो॥ए०७॥
 निर्मल पाले ज्यांने श्रावगपणो ज्यांरो सुत्रमे वि-
 स्तार घणो जोर लगायकीयो पेवोपारो ॥ए० ८॥
 छपने वेशाष सुद चवदशपरी सेर सीतामाहुमे
 जोरुकरी पुवचंद कहे वारंवारी॥ए०९॥इती संपुर्ण॥

॥ नं० ४० ॥

आकोनी जगमे अजव चीज हे चारीई, कोनी
 वीनवांता जुटकरोल पराई ॥टेरा॥ कवनी सेवनी
 यान फोवीणज कर आवे कवनीसे भुमानार परण
 घर लावे कवनीसे भाइवंद पुवारे ले जावे कवडीसे
 निचको उंच वेण वतलावे ॥ को० १ ॥ कवनीसे
 सासुसुसराने सोई कवनीसे पूसामद करत सबकोइ
 कवडीरेपातर वचावैच देमाई कवडीरेपातर सोसो
 सोगनषाई ॥क० २॥ कवडीसे लशकर वेठचलेरा
 जींदका कवनीसे मोरचा घेरलीया दुस्मनका क-
 वडीसे मंगल ऐसकरे जंगलमे कवडीसे पालषी

वेठचले नगरमे ॥ को० ३ ॥ कवडीसे डफरावाजे
 आणंदपुर माई, कवडीसे जगमे निशाण उंछव
 होई कवडीसे कडाकीलंगी मोतीहे चाई; कवडी
 की लावणी जीवणदासनेगाई ॥ को० ४ ॥ इतीसंपुर्ण ॥

॥ नं० ४१ ॥

चांभरारा हातीघोडा चांभरारा उंट चांभरारा
 वाजावाजे चारुईपूटचांभरारी पुतलीतुतोभजनकरे
 ॥ १ ॥ चांभरारी पुतलीने चावे वीरुपांन चारीरे
 कपडापेरे कर्तगुमांन ॥ चा० २ ॥ चांभरारावाच-
 नाने चांभरारी गाय चांभरारा डुवणवाला
 चांभरामेजाय ॥ चा० ३ ॥ चांभरारापातसाने चांभ-
 रारो वजीर चांभरारी सारीदूनीया कहेतकबीर
 ॥ चा० ४ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ४२ ॥ देशिवनाकी ॥

माहाविरजीरी पालपडी रतनांजडी हांहाजी-
 नजी रतनाजडीने हीरांजडी हां, मोल्यारी लागी

जगमगजोतो ॥मा०१॥ हां,कवरीतो छोडी केलमे
 हां मेलामे छोडी नार ॥ मा० २ ॥ हां: चोष्ट इंद्र
 आवीया हां सिवका उठावणकाज ॥मा०३॥ हां:
 हर्षधरीने चालता हा धनदीहाडो आज॥मा०४॥
 हां नगरीवीचे होय निसरया हां सुरनरनारयांना
 थाट ॥मा०५॥ हां चांतश्वीर दावली हा बोले छे
 चारण चाट ॥मा०६॥ हा देवदेविं तीहां आवीया
 हां लागीजी गामगजोत ॥,मा० ७ ॥ हा गीतज
 गावे नारीयां हां नगरीमे हुवो उधोत ॥मा०८॥
 हां संजमलीनो चुंपसुं हां मीगसर दशमी मास
 ॥मा०९॥ हा ग्यांनध्यान वध्योवणो हा पूरीमनरी
 आस ॥मा०१०॥ हां पूर्व पुनइसडाकीया हा इंद्र
 जुता तीणवार॥मा०११॥ हा गोत्म गणधरतारीया
 हा करदीयोपे वो पार॥मा०१२॥हा रायसीधारतना
 डीकराहा त्रीशलादे थारीमाय ॥मा०१३॥ हां कर्म-
 पपाय मुगते गया हां चावीदीवालीनी रात ॥मा

१४॥ हां नाममिठोमी श्रीजीसोहा ध्यावुछुंरे मन
 माय ॥मा०१५॥ हां गुंणकरतां धायुंनही हां दे-
 षणरी रहीचाय ॥मा०१६॥ हां गांमगगरांणो दी-
 पतो हा सहेरमे डतारेपास ॥मा० १७॥ चोथमल
 करे विनती हां मानलेजो अरदास॥मा०१८॥संपूर्ण
 ॥ नं० ४३ ॥

राजारांणीरे कलुंबोधणोजी द्विपतीकुमरांनी
 जोरु संसार वंधन सांकलजीसा काचा सुत ज्युं नां-
 षएतोरु १ जीनेसश्मोहनी जीताजी धनश् हो
 गया न चीताजी ॥टेर॥ श्रीशषन्नजीरे दोय वेटी
 यांजी नर्तादीकसो पुत सगलाई संजम आदरये
 जो दीधा मुगतीरा सुत ॥ जी०२ ॥ श्री अजीत
 जीरे वेटीयां नहीजी सेजेई टलगयो पाप संसा
 वेठाने छुरे घणाजी प्रजुनहीकीयां संताप ॥ जी०
 ३ ॥ परो नांम जीनधर्मनोजी अजेताई नीतनव
 नामः पापरो नाम कीसे कांमरोजी तीणसु पां

सारी ठाम ॥ जी०४ ॥ संजव अजीनंदण सुमत-
 जीरे तिनुरे तिनरुपुत पदमप्रभुजीरे तेरेवेठाजी
 ज्यांराचारी घरांरा सुत ॥ जी० ५ ॥ सुपार्श्वजीरे
 सतरे वेठाजी चंदा प्रभुजीरे दस आंठ उगणीस
 सुवद जीण दरेजी करता मेढ्या अरकाट ॥ जी०
 ६ ॥ शितलदोय वारे अंसजीरे निनांणु सुतवास-
 पुजश्री वीमलजीरे वेठोनहीजी संजमले मांरुथो
 जुज ॥ जी०७ ॥ अनंतजीरे अक्यासी वेठाजी धर्म
 जीरे उगणीस प्रभुजी संजम आदरयोजी नही
 आप्यो रागनेद्वेस ॥ जी०८ ॥ डोरुक्रोड शंतनाथ-
 जीरे वारेजव भेलाकीया सुध वरुवेठा संजमली-
 याजी वडागणधर निर्मलवूध ॥ जी०९ ॥ मोरुक्रोरु
 क्रुंथ नाथजीरे अरनाथजीरे सवाक्रोरु प्रभुजी सं-
 जम आदरयोजी विलस्ता दीयाछोड ॥ जी०१० ॥
 श्रीमलीनाथजी क्रवांरारयाजी चालत्रमचारी वरु-
 वातविशमांरे इग्यारेवेठाजी करतांमेल्या वीलापात

॥जी०११॥श्रीनेमोजीरेवेठानही जीवलेहीनेमकुंमार
 बालव्रमचारी जग प्रगटयाजी तोरण जाय छोडी
 राजुलनार॥जी१२॥श्रीपार्श्वजीरे वेठानहोजीश्रीची
 रजीरेवेठीएकसुणउपदेश संजमलीयोजीजमालीज
 माई लीजोदेष॥जी०१३॥ अजीतवीमल मलीनाथ
 जीरे नमीनेमी पार्श्वजीणंद सातमावीर जीनेस-
 रुजी ज्यांरे वेठारो नहीफंद ॥जी०१५॥ सवाचार-
 क्रोरु सर्व हूवाजी प्रभुच्यारसे उपरसात सतरे-
 जीनजीरे इतरावेटाजी तीनवेटयांरी चाळीवात ॥
 जी०१५॥ संसारना सगपणजांणनेजी किधालुषा-
 चावआंण तोपीणमुक्तगांमो हूवाजी समकीतरा-
 जव आंण ॥ जी०१६॥ पालीमे पांनो पायोजी तीण
 अनुसारे कीधीजोड रुप सुषलालजी ईम कहेजी
 इतरा वेटांने दीधा ठोरु ॥जी१७॥ गरु श्री चंद्र-
 चांणजी तिहांरेपरसादेत वनप्रकास संवत अठारे
 चिउंतरजी सुद, चोत मंगलवार ॥ जी१८॥संपुर्ण.

॥ नं० ४४ ॥

मनवा समजलेरे वीर सांकडीसेरीमेतने चलणो-
 पलीतीर ॥टेर॥ सांनवरो भवनिठजपायो तुं क्युं
 हारेगीमार सुंसवृतले आपकी तुंपर चीलेनीलार
 ॥म०१॥ तुं जांणे घर माहरोरे हूं घरनो सीरदार
 काल आय थारी घांटी पकमी कोई न राषणहार
 ॥म०२॥ राजारांणा पातस्यारे वडेश्मुपाल मुंठडी-
 यांवटघालता ज्यांनेही लेगयोकाल ॥म०३॥सुतांर
 कांई करेरे सुतां आवेनिंद काल सीरांणे आय
 षको ज्युं तोरण आयोविद ॥ म०४ ॥ अतरथ सुं
 धन निपजे ते सुकतमे कामजाय के चाटोकुटावसी
 केलुचा सोदापाय ॥ म०५॥ उगे ज्यां वावे नहीरे
 वावे ज्यां बलजाय एसा नरांरा देषलो वेमालम
 सकरापाय ॥ म०६॥ निगुरा माणस मंती मीलोरे
 पापी मीलो हजार एक निगुरानासी सउपर लष
 पापीनो चार॥म०७॥नरनारायण देहमीलीरे निगुरो

रहीयेनांय निगुरो नरतो पसुवरावर दरसण क-
 रीये नांय ॥म०७॥ निगुरो समरण नितही करेरे
 दिनमे सोसो वार नगर नायका सत्य करे तो व-
 लेकीसके लार ॥म०८॥ सोवाकी माला सबकोई
 फेरे पिणदीलकी फेरे नाय ज्यो वधवाको जालरो
 लटक रयो गलमांय ॥म०९॥ गरुवीन माला फेर-
 तारे गरुवीन देतादांन गरुवीनानी रफल जावसीरे
 देशो वेदपुरांन ॥म०११॥ रामकृष्णसे कोन वरारे
 जीणने सतगुरु किन तिनषंरुको नाथ कहीजे
 गरुआगे आधीन ॥म०१२॥ संसारमांहे दुषघणेरा
 केता न आवे पार दलीचंद कहे धर्मकरोनी जीम
 उत्तरो नवपार ॥ म०१३ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ४५ ॥ पूरो सुषर्नही पंचमेअरे ए देसी ॥
 अरीहंत पेले पदजांणी प्रभु अनंतदर्सन अनंत

ज्ञानी ए तीनुंही लोक रयात्राली नित नांमजपो
 नवकरवाली १ सुरनर ज्यांरी सेवासारे प्रभु आ-
 पतीरया अवराने तारे ज्यांरो नांम तुटे कर्मजाली
 ॥ नि० २ ॥ सीवनगरीमे डेरा दीधा ज्यां आत्म
 कार्य सीध कीधा आवागमन फेरा दीया टाली
 ॥ नि० ३ ॥ अजरअमर पद रोगनही निराकार-
 नीरंजन जोत सहीः प्रभुकर्मारा बीजदिया वाली
 ॥ नि० ४ ॥ गणधर ज्ञानतणा दरीया तीके चर्णकर्ण
 सुत्तगुण जरीया साध साधवीयांरो करो प्रतीपाली
 ॥ नि० ५ ॥ मुनी उवजाय वंदु जावे जीके सुत्र अर्थ
 कर समजावे आगम पोट देवे टाली ॥ नि० ६ ॥
 साडुजी सुध संजमपाली अतीचार दोक्षण टाली
 तपकर कर्म देवे गाली ॥ नि० ७ ॥ पांचूपद रागुण
 ऐकसोने आठो इतनाही मणीया नहीघाटो इण
 माला सुं लगावो ताली ॥ नि० ८ ॥ नवकार वालीरो
 जापजपो तो क्रोडभर्वरा कर्मषपो आलपंपाल

देवो टाली ॥नि०ए॥, भुतवेताल व्यंतर जारी, क-
 रतां आवे मारमारी इण मंत्रथकी नमे ततकाली
 ॥नि०१०॥ ए नव करवो दुषदहे अरु मोष तणा-
 वली सुषलहे नहीतर ईणसुं टांको देवो जाली ॥
 नि०११ ॥ अठारेइ गतीसे तींवरी चोमासो कहेकु-
 साल गरु छूर्ग प्रसादो नवकार मंत्र ठे संगट टाली
 ॥ नि०१२ ॥ इती संपूर्ण ॥ :

॥ नं० ४६ ॥ दोहा ॥

सासण नायक समरीये विघनवीकारण वीर
 जाव सहीत गरु भेटतां हर्षे हीवको हीर १ उम-
 जीरे घरउपना फूलांजीकु षरेमांय वाई तुलठां वे
 हुंजणा पूनमचंदलगुजाय २ तुलठांजी के नेतरे
 भाई थे सुणजो जेद संजम तोले सांसही मारे मन
 उमेद ३ वेनजाइ वे हुंजणा मनमे लीधीधार झानि
 गरुपदारीया लीधो संजमजार ४

॥ राग आशावर ठे ॥

पुनममुंनी दर्शन हे सुषकारी थांरी सुर्त मोह-
 नगारी ज्ञानी गरुशी वथांरा सुषकारी आप पू-
 जरी पदत्री धारी परमगरु दर्शनरी ठवी न्यारी
 ॥पु०१॥ जालोर सहेर जगतमे वांको कोटकीलारी
 ठवीन्यारी सहूकोई लोकवसे वहू सुषीया श्रावग
 समकीत धारी ॥पु०२॥ जालोर सहेर रत्न जीम
 दिपे केसर हंडी क्यारी संजमलीधो बहु श्रावग
 सतीयां मोटाश माहा वृतधारी ॥पु०३॥ पंचमाहा
 वृत पालो मुनीसर पालोपंच आचारी नमर भीष्यां
 मुनी सुजतीलेवे दोष वयांलीसटाली ॥ पु० ४ ॥
 त्यागी वेरागी ने नीरलोत्री त्रसना तो डूर काटी
 ज्ञान गरुके पाट विराजे पुजजी वाल त्रमचारी॥
 ॥पु०५॥ चैरो देषसुरगथो चवीआया थेरुप संपदा
 पाइ पुरवभवमे करणी कीधी दिनश जोत सवाई
 ॥पु०६॥ गुंण सतावीस करने दीपे वारु सहीत

वृत्तधारी तेज प्रकाशहे समगोतको मिटेतमृच्छं-
 धारी ॥ पु० ७ ॥ अंगउपंगमे नयनिषेपा नवतत्व-
 निरणा ज्ञारी जिनशभाव जगोतीरावांचो बूध थारी
 पेलेपारी ॥ पु० ८ ॥ सेंसकलाकर सशिजीम सोभे
 तपजप करोया ज्ञारी पांचंद्रो वसकरलोनी जीता
 हे विषयवीकारी ॥ पु० ९ ॥ जनमलोयो जालोरमे-
 स्वांमी विचरतवसु धाम ज्ञारी चंद्रचकोर ज्युं मा
 रामने वाट जोवे नरनारी ॥ पु० १० ॥ चोमासो
 सरधर्मी वे कीजो श्रावकां एम विचारी दर्शनदीजो
 करपाकीजो अरजलोजो अवधारी पु० ११ संपूर्ण ॥

॥ नं० ४७ ॥ पटावली ॥ चाल लावणीको ॥

मेध्यावुं गरुधनराज शारदामाता मोयदोत्रांणी
 सुजवरण दयाकरदाता श्री आदनांम अरीहंत
 नमुजगनाथाश गुंनगावूं मुंनीजी नग्यांन सदासुष-
 साता १ जगजाहर मुंनीजीविराज वक्रा धर्मध्यांनी
 तिण पाटे मुनी जीनलाल साष्टु सुजज्ञांनी उदयो

तिणपाटे अमरसिंघ धर्मदाता ॥गुं०२॥ मुन अमर
 पाट तुलचे सत्रयेअवतारी२ तीणगादीसु गरुसु-
 जाण सादू सुषकारी ज्यांके पांचूशिक प्रमानउदे-
 रीवप्राता ॥गुं०३॥ एकसेज रांम माहाराज धर्मके
 धोरी२ जीवणजी परमपवाण कर्म अठतोरी मुंनी-
 ज्ञान अने जीतमाल तपेवरस्ताता ॥गुं०४॥ ज्ञानके
 पुनमचंद नवलपुनपाजा२ मुंनीका ठवाठ निकलं
 करीषे सरराजा कवी अचल करेकरजोड वंदन-
 दोउहाथा ॥गुं०५॥ संपूर्ण ॥

॥ नं० ४७ ॥ कांइरे जवावकरुं रसिया ए राग ॥

सतगरुत्रापे ईमृतवाणी चेतो२ तुंमे उत्तम-
 प्राणी कांइरे प्रमाद करेजविका २ नवघाटी मांहे
 तटकतआयो तो दूर्लज मानवरो जवपायो ॥कां०१॥
 वालपणो हसषेल गमायो जोवनम तरुणी चित-
 लायो ॥कां० ३॥ मेलु२ करमाया सेली कोकरवय
 रुंगर थईकेली ॥कां०४॥ भुरापेते थोषाट संजायो

तोई समताम नमे नहीलायो ॥ कां० ५ ॥ षाय-
 षाय थेतो दीवस गमायो धर्मरत्न हाते नही
 आयो ॥ कां० ६ ॥ पाचुइंद्री ते वसनही कीदी तेनी
 वनर्कनी गानीदीनी ॥ कां० ७ ॥ प्रमादकियां गो ता-
 तनेदेगो च्यारगातिसु लागरहेगो ॥ कां० ८ ॥ कूंर-
 रीक सहेश्रवसलगतसेठो प्रमादरे वस सातमी वेठो
 ॥ कां० ९ ॥ पार्श्वनाथजी रीसादव्यांजाणी प्रमादरे
 वस थई इंद्राणी ॥ कां० १० ॥ राजतेजमे थारो जीव
 फुल्यो सतगरूजीनी सवा भुल्यो ॥ कां० ११ ॥ हिं-
 स्यामांहे थारो जीव वसीयो नर्कनी गोदरो तुही
 रसायो ॥ कां० १२ ॥ ईमजाणी प्रमादनिवारी तिरया
 तीरे घणा नरनारी ॥ कां० १३ ॥ बुसी गांम सदा
 सुपकारी सेवासारे घणा नरनारी ॥ कां० १४ ॥ संवत
 अठारे अठावनेवासो ऊटे चोतमल कीयो होली
 चोमासो ॥ कां० १५ ॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ४९ ॥ समकीतनुं स्तवन ॥

समकीतद्वार गंभारे पेसतांजी पापपद्म लगया

पूरे माता मरुदेवीनो लाम्बोजी दीठो उ मीठो
 आणंद पुरे ॥स० १॥ आयुर्वर्जित साते कर्मनीजी
 नागर कोना कोडी हीनरे स्थिती प्रथम करणे
 तरीजी विर्य अपुर्व मोघर लीनरे ॥स० २॥ भुंगळ
 नागी आद कषायनीरे मिथ्या मोहनी सांकळ
 नाथरे वार उघारुथा ठे संवेगनाजी दिठा श्री
 अनुभव जवीयण नाथरे ॥स० ३॥ तोरण वांघ्यो
 तीव्रदया तणोजी साथीठ पुरो श्रर्धारूपरे धूपघटा
 म्भुगुण अनुमोदनाजी दिप मंगलआठ अनुपरे
 ॥स० ४॥ संवरपांणीये अंगपपा लीयेजी केसरचं-
 नण उत्तम घ्यांनरे आतमरुची मृगमद महेजी
 त्वाचार कूसम प्रधानरे ॥स० ५॥ भावे पूजोर पा-
 न आतमाजी पूजो परमेसर परमपवीत्ररे कारण
 तोगे कारण नीपजेजी क्षमा वीजयजीन आगम
 तेतरे ॥स० ६॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ५० ॥

भजनगट वांधारे मेराचाई, तेरीजमसे होत
लगाई ॥भ०टर॥ ज्ञानको घटकर धर्मकंगर रपले
समताकी जरलेवोषाई शिलसंतोष सीपाहूरिपंले
लोचकूं मार हटाई ॥भ०१॥ दयारीतोपंकू त्यारी
रपले भर्मका गोंला जराई सतकी चकमक अगन
देषाइतो कांमकी फोज हटाई ॥ज०२॥ नेणनकीकी
वांमीढकले श्रवणकी वारी वंधाईः रूणकारधुन
ध्यांन धरले तो जीणर्हा चतुर समजाई ॥ज०३॥
पांचकूं मार पचीसकूं वसकर जोतमेजात मीलाई
केतकवीर सुणोचाई सादां जीणसुं फते होयजाई
॥भ०४ ॥ संपूर्ण ॥ ॥ नं० ५१ ॥

जनमसारो वांतांमे वीतगयारे थेतो कबुह न
नाम लीयोरे ॥ज०टेरा॥ दसवर्स लरुकपणेमे षोयो
विसोमे जदा जयोरे मगर पचीसी, मायाके कारण
देशप्रदेश फीरीयोरे ॥ज०१॥ तिसवर्स तीरीयासंग

मोलीयो जोवन अंद जयोरे वृद्धयो देह कंपण
 लागी जव जमतांणरयोरे ॥ज०२॥ क्या ले आयो
 क्या ले जासी ना कलुदांन दीयोरे धनजावन सु
 पनेकी संपत् रीते हातरयोरे ॥ज०३॥ षो संसार
 होटकोमेलां जूठो ठाठ जयोरे केतकवीर समज-
 मनमेरा क्यूं तुं राचरयोरे ॥ज०४॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ५२ ॥

जीवा समकीतवीना न तीरो जावे कोरु जतन
 करो ॥टेरा॥ जाय वनमें लाय तनमे अतुल ध्यान
 धरयो विसदो य सहीपरीसा तपतदेह जरयो ॥
 जी०१॥ वोत लाभ न भयोकवहुन मुंन धरतफिरयो
 कोरु लाप उपवास करके कष्टसेतीमरयो ॥जी०२॥
 भातरके शास्त्र जांणे अर्थ करतधरो रहेत नीज
 आराध नामे चीरकाल भ्रमतफीरयो ॥ जी० ३ ॥
 सार अमल अनोप अनुभव अतुल रस जरयो
 देवीदास मुक्तीचाहे समकितनावीसरीयो ॥जी०४॥

॥ नं० ५३ ॥ उपदेशी ॥

तेरीफूलसी देह पलकमाहे पलटे क्यामगरुडी
 राषेरे आतमज्ञान अभिरसतजने जेहरजकीकीम
 चापेरे ॥ते०१॥ कावचेरी थारेलारे लागो ज्युं पीसे
 ज्युं फाकेरे जरा मंजारी ठलकर वेठी जीम मुशा
 पर ताकेरे ॥ते०२॥ सीरपर पाग लगी कसवोही
 ते वडा छोगा राषेरे निरषेनार पारकीनेणां वचन
 वीषे रसचाषेर ॥ते० ३ ॥ रत्नचंद जगदेषधरता
 वांदीये कर्मवीणकेरे शिवसुषज्ञान दीयो सोये
 सतगुर तीणसुंषरी अचीलाषेरे ॥ते०४॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ५४ ॥ कोरोकावजीयो ए ॥

आगममांहे जोयलो कोणक नृपदसचाय षोटो
 लालचीयो उं मारे मायने बाप० षो० प्रगटे प्रत्यक्ष
 पाप० षो० भुक्ते आपो आप० षो० भाषीयो श्री जीन
 राय ॥षो०१॥ वापभणी दीयो पिंजरे मरकर नर्कमे
 जाय ॥षो०२॥ कनकरथ नृप देषलो राजरुद्ध मुरठाय

॥षो०३॥ पुत्रारोनुक सांनकर मरमाटी गतजाय
 ॥षो०४॥ उदाई नृपभांणैजो मारयो मुर्नारजात ॥
 षो०५॥ सगपण ऋ सगपण गीणीयो नही जोवो
 परीग्रानीवात ॥षो०६॥ माहा सतक श्रावगवडो
 तीणरे तेरे नारा ॥षो०७॥ रेवंती मोटी कही सोकां
 मारीवार ॥षो०८॥ कांम जोगबु वदीघणी नित-
 दोयवाठामार ॥षो०९॥ मांशश्रुलातल करी षट-
 मद् पीवे नार ॥षो०१०॥ माठी गतरी पांवणी वले
 सुरी कंतानार ॥षो०११॥ राय प्रदेशी मारीयो गई
 ज मारोहार ॥षो०१२॥ ईण परीग्रारे कारणे माया
 जो नरनेनार ॥षो०१३॥ नरत्नवरत्न गमायने कांल
 सर्पमंजार ॥षो०१४॥ अनरथ जांणी चेतजो थेदो
 परीग्रो छीटकाय ॥षो०१५॥ रामकृस्न परीग्रोतजी
 जनम मरण मीट जाय ॥ षो०१६ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ५५ ॥ घुमर राग ॥

गणधरजीरा गुंणमेगासा ज्यासुं पर्मआणंदसुप

पासों हो राज ॥ग०टे॥ इंद्रजुती नाम गोत्मगोतर
 अगनजुती गणधरदूजा हो राज वायजुतीने वी-
 गतवषाणुं ज्यारा चर्णकमल नितपुजु हो राज ॥
 ग०१ ॥ पांचमा गणधर गुणारासागर ज्यांरो नाम
 सुधर्मावाजे हो राज च्यारुही सिंघमे शशि जीम
 सोचे एतो प्रजुजीरे पाट वीराजेहो राज ॥ग०२॥
 मंकी पुत्रने मोरी पुत्र दोनुं ज्ञान गुणारा दरीयां
 हो राज वेरागी लीवलागी मुक्तीसुं चर्णे चीतधरीया
 हो राज ॥ग०३॥ अकमपीतछे आठमागणधर ज्यां
 भावसुं ज्ञानी गुरु चेटथा हो राज अचलचृतानी
 ज आतमातारी भवशना पातीक मेटाए हो राज
 ॥ग०४॥ मेतारजने श्री प्रजासा एकादस गणधर-
 जाणी हो राज अंतरमहुर्तमे अनुन्नवजागी थया
 चवदे पुरव चाहुनाणी हो राज ॥ग०५॥ ए इग्यारे
 ब्रामण कीरीयामे वीर वचन सुण चीना हो राज
 साथे चउमालीसे संजमलीनो सहु जनसमरणसुं

वीना हो राज ॥ ग० ६ ॥ कठण कर्म तपस्या कर
 तोरुया ज्यासुध मनसमता आंणी हो राज नव-
 गणधरतो प्रभूजीरे पेलापहुताठे निर्वाणी हो राज
 ॥ ग० ७ ॥ कूशालचंदजी गुणकरगेरा गितारथज्ञान
 राप्यासी हो राज जगवांनदाश ज्यांरे प्रसादे जु-
 गतसुंजोरु प्रकासी होराज ॥ ग० ८ ॥ अष्टादस अ-
 कांणवेविचरत केह गांममे आया हो राज कृस्न-
 पक्षतिथतीजमाहारी जठे गणधरजरि गुण गाया
 हो राज ॥ ग० ९ ॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ५६ ॥ दोहा ॥

प्रथमनवेसे पंचमे वेसेतोकरदे ठान कलजु-
 गनी पंचायती हे अनरथरीषां न ॥ १ ॥ साच वरा-
 वर तपनही साच धर्मरोवीज रिजेसुरनर साचसुं
 साच जगतमे चीज २

॥ लाजमेरी रपले जवांनी ॥

साचसेसेव करेदेवा साचसे जीते नीतमेवा
 साचसे धीजहीउतरजेवा साचसे पारही उतरदेवा ॥

॥दोहा॥ पारउतारे साचही साच वडो संसार कार्ज-
 हुवे सव साचसुं साचवो लाउलार॥साचसे षडाषडा
 गुंजो साचका पगल्या नीत पुजोः साचसो धर्म नही
 दुजो १ साचसुं पेटजमेभारी साचसुं रिजे नरनारी
 साचकी वात लगे प्यारी साचसे धीजे वोपारी॥दो॥
 संपतपावे साचसुं आपदा जावे दूर जीणनर साच
 न राषीयो तीणकीयोज मारोधुल कुंठसो दूस्मन
 नही दुजो सा०२ महीपत साचकुं परषेतीहां सव
 देवकुं करषे कहो मुजमुष्टीमे हरषे जोतसी वोलो
 वे धडके ॥दो॥ देवज्ञशास्त्रहेरने कहे स्वेत गोलम-
 टोल कहो सकुनी जुमशकुंनकुं मे पुबुं ईणठोर
 शकुंनीशकुनां कुंबुजो सा०३ शकुनी जोवेठे जे हवे
 कन्या केशनी चोवे ते हवे मोती अणवींध मुष्टीमे
 पंच तवआए द्रष्टीमे ॥दो॥ पंचवीचारे आपसुं कर-
 णोकी सो उपाय विना इलमको वोलवो वीनबो-
 ल्यां हरुमतजाय आवे अत्र अंरु आमोकुंजो सा०४

पंच कहे करणे अवकांड वोट्यां वीन सरसे कव
 तांड पंचायती जूठी नही जाषी आपे नही
 रुषारुषीराषी दो. परमेश्वर साषी करी नरपरभव-
 को राष घोट्टी न करी पंचायती जुंठ न कयो
 हक नाक आंपां अव वोलत क्युं धुजो ॥ सा०
 ५ ॥ पंचाने परमेश्वर केवे पंचां कोउठो सवलेवे
 पंचांकुं कर-काटी देवे पंचांके जरोसे रेवे दो.
 पंच परमेश्वर सारषा प्रगट कहे संसार लाक्ष क-
 हो सव मील करी जली करे कीरतार आंपां पष
 परमेश्वर दूजो ॥ सा० ६ ॥ पंच कहे लालही घोलो
 नृप कहे आलोची वोलो पंच कहे सुणोये माहा-
 राजा साचसे सुधरे सव काजा दो. काज सुधारे
 साचही लाजरष जीनराज मोती फीट हुइ लाल-
 ही देपे दूंनीयां राय साच हे मिश्री कोकुंजो
 ॥ सा० ७ ॥ महीपत साचकुं परण्यो पंचा पर-
 तन मन कर हरण्यो पंचांको वचन नही सरण्यो

कयोसो लालही निरप्यो दो. नीरप्यो साच प्र-
जावको दियो झुंठकु त्याग मुंनोरांम. कहे धन
साच हे साच बोले वरु जाग जुट तज तिरयो
चाहे तुं जो ॥ सा० ७ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ५७ ॥ ॥ पुर्वत राग ॥

नेमकी जान वणी जारी देषणकूं आवे नर-
नारी नेमकी सुर्त हद प्यारी जान ले आवे
मुरारी टेर. कोडां घोडा अरुहाथी मनुक्षकी गीण-
ती नही आती हय गय पर धजा फर राती धमक
सुण धरती धर राती दोहा. समुद्र वोजे जीका
लारुला नेम कूंवरजी नाम राजुलदेकूं आवे पर-
णवा उग्रसेण के धाम प्रस्त भये सबही नरनारी.
॥ ने० १ ॥ कसुंवल वागा अतीजारी कोर गोठ;
न की छत्री न्यारी माल मोतीयनकी गलधारी
किलंगी सोवे सुपकारी दो. कांना कूंमल जोग-

मीगे, सिससेवरो जाण कहां लग कहं थोप मांतां
 की सोचा इंद्र समान वाज रहे, वाजा एक सारी
 ॥ ने० २ ॥ छुट रहे कोटी चरराई बाण मेता-
 वढो लगाई जरोषे राजुल दे आई जानकुं देपत
 सुषयाई दो. उग्रसेन - जब देषके मनमे, कीयो
 वीचार पशु जीव सब करथा एकठा वामा-भररथा
 अपार करी इन जोजनकी त्यारी ॥ ने० ३ ॥ निकट
 जब तोरण पे आये पसु जीव सबही वील लाए
 नेमजी वचनज फूरमाए पसु तुम काएकूं लाए
 दो. इनको जोजन हो वसी जान वास्ते सोय
 ईतनो वचन सुण्यो नेमजी थर हर कंण्यो सोय
 जाग कर चाले गीरनारी. ॥ ने० ४ ॥ पिछेसे
 राजुल दे आई. हाथ जब पकड्यो हे माई कांहां
 जावत हे मेरी जाई थोर वर हेरुं मुक्ताई दो-
 मेरे तो वर एक हे होय गये नेमकूंमार विजो
 वर कबुं नही परणुं कोरुं करो विचार दिण्या

जब राजुल दे धारी. ॥ ने० ५ सहेल्यां सबही
 समजावे दाय राजुल के नही आवे जगत सब
 जुठो दरसावे मेरे मन नेमकूंवर जावेदो. कंकण
 चूरुला उतारके तोड्या नवसर हार काजल टी-
 कीपां न सोपारी छोड्या सब सिणगार सहेल्यां
 वीलष रही सारी ॥ ने० ६ ॥ तज्या हे सोलेही
 सीणगारा अभुक्षण रत्न जरुत सारा सर्व सुष
 लागा हे पारा ठांरु वन चाली नीरंधारा दो. मात
 पीता परीवारकुं तजतां न लागी चार वेगी दोड
 मीले पीवसुं जाय चढी गिरनार जुरंती मेली म-
 हतारो ॥ ने० ७ ॥ नेम राजुल देषो जगमांई
 दिष्या जब ऐसी बोधपांई दया दील पसु वन-
 की आई तीयाग जब कोनो छीन मांई दो. नेम
 राजुल गीरनार पे धरीयो निरमल ध्यान जीवण-
 रांम लावणी गांई उपनो केवलज्ञान मोक्षका
 हूवा ईधकारी ॥ ने० ८ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ५८ ॥ लावणी ॥

जीव राजतन करो जाई १ अष्टशिध नव-
 नीध मीले दया राषो दीलमाई. ॥ टेर ॥ अण
 छांपया पांणी भरलावे मनकी तंगई उरे अनाज
 चकी अणसोयो होसे दूषदाई ॥ जी० १ ॥ अण
 जोयो मतमुं कोइ धन चुलाकेमाई सतगुरुकी तुम
 सीप सांजलो समजो दीलमाई ॥ जी० २ ॥ करे
 बहु दीवान करे जेणा जले जीव आई पिठतावो
 कर सेवे प्रांणी परजव के माई ॥ जी० ३ जुंमाषी
 झलीकसारी आवे अनमाई वणि जोयां मत मुको
 चुले राषो चतुराई ॥ जी० ४ ॥ कपडा धोवे जीव
 जलावे सरवरपे जाई पनेज पिछता वो सहे बहु
 पिका दो जव दुषदाई ॥ जी० ५ ॥ अण छांपया
 जल पीवे मुर्ष मन कीधेटाई पडीयो पाटमे बहु-
 वीललावे भुगतेकमाई ॥ जी० ६ ॥ धान चुनरा
 करे बहु आरंज जतन न करे कांइ. तमके लावे

जीव उडावे दीसे कसाई ॥ जी० ७ ॥ मछ कछ
 हीरणादीक मारे जीन्यांकेताई कर्म बांधकर जावे
 नारंकी मारे जमराई ॥ जी० ८ ॥ छाछ आठ
 घृतादीक ऐंठो अथवा मीठाई उघाडाराषे आल-
 ससुं पडे जीव आई ॥ जी० ९ ॥ रांधण पीसण
 जीमण षांडण जलस्थान कउवांइ पांच जायगा
 राषो चंद्रवा जेणा वहू थाइ ॥ जी० १० ॥ कहे
 संतोके सुणो सजन तुंम ए अवसर पाड जगत
 जीवराज तन करो तुंम सीवपुर सिधाइ ॥ जी० ११ ॥
 गगराणासुं वीहार करी आया इंदावरमांइ जीव
 जेणा उपदेश लावणी मन रंगेराई ॥ जी० १२ ॥
 ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ५९ ॥ हां सगीजीने पेना भावे ए राग ॥

हां उमर अंजने ज्युं जावे नर जांणे दीन
 जाय दीन जांणे नर जावेरे टेर. पंच इंद्रिको

अंजन जारी दसुंधार गाडी छीव न्यारी पुन्य
 पाप गार्ड गाडीकुं देष चलावेरे ॥ उं० १ ॥ चले
 तार ज्यूं सासउसासा वीना तार चलणेमी नही
 आसा पवरदार जट होय मुसाफीरे गाडी आवेरे
 ॥ उं० २ ॥ दया धर्मका टीकट वणाया साच
 जुट दो वावु आया साचकु नही हें आंच जुंठ
 कुं परा फेंकावेरे ॥ उं० ३ ॥ मासदीर्नोकीवणीहे
 चोकी एक वर्ष इसठे सन देषी विते वर्ष जब
 केइक टेसन जंकसेन आवेरे ॥ उं० ४ ॥ जंकसेन्
 पर तुरतही रोके दया धर्मका टीकटज देषे माया
 कूटंव परीवार उठे कोइ अर्थ न आवेरे ॥ उं० ५ ॥
 अंजन और अवसर हे जारी साच जूटकी करे
 निरधारी देष धर्मका टीकट मोक्षमे तुर्त पांचावे
 रे ॥ उं० ६ ॥ जवसागरमे जुलो जटक्यो मोह
 कुटंवमे उन्नो अटक्यो जव रमल कहे देव जी-
 णंद गुण क्युं नई गावैरे ॥ उं० ७ ॥ संपुर्ण ॥

॥ नं० ६० ॥ राग पुर्वत ॥

हांके मत कर गर्व दीवांना सुंण सत गुरुकी
 सीप सयांना धर रहे धनमाल होय तन राप
 मसांणारे ॥ म० १ ॥ सनत कुंवरकी सुंदर काया
 अमररुप देषणने आया गर्ज कीया उसीव गत
 वीलाया पिकदांनीमे थुकत कीमा देष तर रांणां
 रे ॥ म० १ ॥ नगरी द्वारका देषण लायक ठपन-
 क्रोरु जादवनो नायक कृत्न माहावलके सुरथा
 पायक जस्म हूवा क्षणमाय देषत सब कम ठांणा
 रे ॥ म० २ ॥ सोवन लंका समुद्र सीषाई हरी-
 सुत कुंभकरणसा भाई तीन पंडमे आंण दुवाइ
 चदी करी जव रांवण लषमण हाथ मरांणारे ॥ म० ३ ॥
 विर वृांग्मणी कुषमे आया हरचंद राजा बहु
 दूषयाया मुंज जुपती मांगने पाया अचीमांनीसे
 जुंम चक्री जलमे डवकांणारे ॥ म० ४ ॥ कुरु
 कपट करके धन जोडे रात दीवस घरधंधे धोडे

मद ठकीयो त्रस्ना नही ठोडे मत कर समता
 आप मरीयां सब माल वीरांणारे ॥ म० ५ ॥ मातपीता
 त्रीया सुत ज्ञाती सब स्वार्थ के मीले संगती पर-
 भव जातां कोइ न साथी ताकरया सीर जीव
 चीडा परकाल सीचांणारे ॥ म० ६ ॥ इथर जगत
 जीम वादल छाया इंद्रजाल सुपनेकी माये सांज
 देष गर्जे मत जायां दानसील तप जावकुं लेलो
 साथप जांनारे ॥ म० ७ ॥ क्रोद्धमानमद बोध न
 रापे मर्म वचन किणकुं नही जापे प्रेम सहित
 अनुभव रस चापे धन्यनरांते कृस्नलालानीज
 तत्व पीछांनारे ॥ म० ८ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ६१ ॥ लावणी ॥

जलाइ करलेरे वंदा रइणमृत लोकरेमांय
 चतुर नर क्युं होरयो अंदा, टेर. यो जुगहे सुप-
 नेकी माया तमको होय जावे राजा रंक फकीर

पातस्या मारग षरु जावे ॥ ज० १ ॥ तुठ जीनज्ञांनी
 सुण अचीमांनी सतगुरुकी वांणी पांणी उपर
 हुवो वूदवूदो पांणीको पांणी ॥ ज० २ ॥ तन
 धनजोवन रंग पतंग यो देषतहीवीललावे जीम
 वामीमे फुल फुल्यो ढीनमे कुमलावे ॥ ज० ३ ॥
 मातपीता सुत कूठव कवीलो इणसुं मोहलावे
 काल आयने घांटी पकनी वेठो ढलजावे ॥ ज० ४ ॥
 तिर्थ करचक्रीवल देवा मंरुलीकराया वसुदेव
 अवतार अवलीया सर्वकालषाया ॥ ज० ५ ॥ रांवण
 तोनपंरुको भुक्ता रांस त्रीयालायो लीषमण हात
 मरांणां रीणमे कवीयण सुपगायो ॥ ज० ६ ॥
 राजाकर्ण हूवो दांनेसर अजुकीर्त गावे. दिन उ-
 गंता नामज लेवे सव केम न जावे ॥ ज० ७ ॥
 आठपोरकी साठघनीमे सुक्रत करलेरे दोयघडी
 प्रभुजीरानांमरी हीयामे धरलेरे ॥ भ० ८ ॥ उग-
 णीसे सोलाके वरसे जोधांणांमांइ कातीसुद सो-

जागपंचमी होमतरांम गाई ॥ ज० ए ॥ ईती
संपुर्णम् ॥

॥ नं० ६२ ॥ ख्यालकी राग ॥

माहावीर जीनेसर, आपवीराजो मुगती
मेलमे. ॥ टे० २ ॥ सीघारथ राजा के नंदन ती-
सलारांणी जाया क्वत्रीवंसमे उपनासरे कूंरुलपुर-
मे आयाहो. ॥ मा० १ ॥ सातहातरीकायाथांरी
कंचनवरणीसोहे सिंघजलंढणसोजतास कांइ सुर
नरनामनसोहेजी ॥ मा० २ ॥ वारे गुंणाकर सोज-
तासरे दोष अठारे रहेत चोष्ट इंद्र आवो नमेसरे
मिनषदेवतासेतहो ॥ मा० ३ ॥ चोतोसे अतीसे
सोजतास कांइ वांणी गुंणपेतीस एक सहेंश्र अष्ट
लक्षण धणीसरे जांणे रागनेरी सहो ॥ मा० ४ ॥
वांणी जोजन गांम नीसरे जांणुं मीठीघोर वेरक
देनइ उपजेसरे सिंघव करी एकतीरहो ॥ मा० ५ ॥

चवदे सहेश्र साडु हूवासरे आरज्यां ठतीसहजार
 लांषां श्रावग श्रावकासरे कर गया पेवो पारि हो
 ॥ मा० ६ ॥ संकट काठो वीगन निवारो राषो
 हमारी लाज प्रज्ञोसेवग वीनवे सरे पुरो हमारी
 आसहो ॥ मा० ७ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० ६३ ॥

विना जेद वारे मत जटको वारे जटक्यां
 हे कांइ अरुसठ तोरथ अठेवताडुं दर्शन करलो
 देहमांइ ॥ वि० १ ॥ उठ प्रजाते जोय पग तली
 रत्न पदारथ हे मांही पेट जठे पेपावतीनगरी जा-
 लम जाल रच्यो माही ॥ वि० २ ॥ जंग जठे
 जगदीश वीराजे सुंटी गणपत हे मांही छाती
 जठे श्रीरांम वीराजे उलष्पां वीनपावे नाही
 ॥ वि० ३ ॥ अठोतर नानी वहोतर कोठा चाल
 रया काया मांही पांचु आंगली पांचे पांडव राज

करे हथणापुरमांही ॥ वि० ५ ॥ कांन जठे कन-
 कावतीनगरी गाज आवाज पडे मांही साथो
 ज्यांही मथुरानगरी गीरीमेर घरपरवतवोही ॥
 ॥ वि० ६ ॥ नेत्रज कहीये चंद्रमा सुर्य जल
 करया काया माही नांक जठे नारायण बोले
 उंसों जप ले दोही ॥ व० ७ ॥ जोच्या कहीये
 जोती स्वरूपी राम २ रटले तुही कहेत कवीर
 सुणोचार्ई साथो साच बोना सुधरे नाही ॥ वि० ८ ॥
 ईती संपुर्ण ॥

— ० —

॥ नं० ६४ ॥

वडे घरताल लागीरे मांहे लारी भृमना
 चागीरे जीव डळारी जोत जागीरे प्रभुजीसुं प्रीत
 लागीरे ॥ टे० २ ॥ कांसी पीतलकोवीणजनमारे
 लोह लकरु सोजार सोनारुपा कोवीणजनमारे
 हीरांकोवोपार ॥ व० १ ॥ हालीं मोहाली सुनेहन

मारे नही हे प्रधानसुं प्रीत जाय मिलुं मारा
 सांमीसुं मारी चोगणी राषे लारीत ॥ व० २ ॥
 ढुलाढुली मारे दायन आवे मिलीयो असल जर-
 तार निजषां वंदने चोरुने कूण करे जारसुं प्यार
 ॥ व० ३ ॥ ठीलर पांणीसुंनेहन मारे नाडामे
 कुंण न्हाय गंगा जमनां सनमुष होय नं जाय
 मीलुं दरीयाव ॥ व० ४ ॥ श्री जीनकरजीने उल
 प्या मारे औरन आवे दाय ईमृत बुंटी ठोरुने
 मारे जेर जढी कुणषाय ॥ व० ५ ॥ वडां घरांरो
 आसरो मारो जनम मर्ण मीट जाय रुपचंद कहे
 नाथ नीरंजन शिव रमणी सुष थाय ॥ व० ६ ॥
 ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ६५ ॥ सीमंधर सांमीनो स्तवन ॥

श्रीभुवन साहीव अर्ज सुंणीजे दर्शन दीजे
 आज दर्शन दीजो मया करी जो अर्ज सुंणी जो

राज १ मारी वीनतडी अवधारो साहीव श्रीमं-
 धर जीनराज ॥ टे० २ ॥ आप वसो माहा विदेह
 क्षेत्रमे दुंडूण जर्तमजार एमे लोकिम होवे साहीव
 एहवो सवल वीचार ॥ मा० १ ॥ जर्त वीचाले
 परवत आमो नांमे ठे वेताड पंचवीस जोजन
 रोठे उंचो पचास जोजन वीस्तार ॥ मा० ३ ॥
 गंगा सिधु नंदीयां दोनुं आनी ठे कीरतार सहेंश्र
 अठाइ सदूजी नंदीया ऐवेळंनो परीवार ॥ मा० ४ ॥
 इण आगल वली पर्वत आमो चुल हें मइण नांम
 एक सहेंश्रने वावन जोजन वारे कला अभीरांम
 ॥ मा० ५ ॥ क्षेत्र हेम वय आमो छे प्रजु जुगल्यां
 केरो वास इकवीससेनें पांच जोजनको पांच क-
 लासु वीलास ॥ मा० ६ ॥ रोइतंसानेरोईसानांमे
 नंदीयां ठे असराल ठपन सहेंश्रवले नंदीयां
 आनी आठं केस किरतार ॥ मा० ७ ॥ माहा
 हेमवले पर्वत आडो मोटो अतीवीस्तार च्यार

सहेश्र दोयसे दसजोजन दसकला अधीकार
 ॥ मा० ७ ॥ आठ सहेश्र सप्त च्यारवली इकवीस
 जोजन तास एक कलावलेईण प्रमाणे षेत्र हे
 हरीवास ॥ मा० ८ ॥ हरीकंता हरीस लीला नामे
 नंदीयां ते परतक वीजी नंदीयां आडी छे प्रस
 सहेश्र वार एक लक्ष ॥ मा० १० ॥ पर्वतनी षट छे
 वली आनो जोजन बहु विस्तार सोले सहेश्र सप्त
 आठ वयालीस दोयकलाउरधार ॥ मा० ११ ॥ षेत्र
 छे वली जुगल्यां केरो देवकुरुईणनांम ते वीलवीस
 जोजन बहु विस्तारे पहुंलो ते सुंण सोम ॥ मा० १२ ॥
 सिता नामे नंदी वनेरी सव नंदीयांमे सीरदार
 पांचलाष वले विजी नंदीयां अने वतीसहजार ।
 ॥ मा० १३ ॥ कंचनगोरी वषारा परवत केम
 उलंग्या जाय चद्र साल पूरु वीचमे
 केम उपाय ॥ मा० १४ ॥
 पर्वत नामे सु

केस आतु किरतार ॥ मा० १५ ॥ वनगीरी पर्वत
 बहुला वीचमे नंदीयां उंघट घाट किस वीध
 आहु सुगणा साहव मार्ग वीपमी वाट ॥ मा० १६ ॥
 नीस दीन मारे हुं अलवेसर वसीयो हीरदेम
 जार जवदूष जंजन तुंही निरंजन करुणा रस
 भंडार ॥ मा० १७ ॥ क्यां मुज दक्षण जर्त कीयां
 वली पुषलावती जीनराज उंमे लोकीम होवे
 साहीव एत्ती सवल वीचार ॥ मा० १८ ॥ दूर
 थकी अवधारो साहीव आ मारी अरदास मन
 वंठीत सुष संपत दाता पुरो मनकी आस ॥
 ॥ मा० १९ ॥ परतर हर्ष गुरु सुपसाय सरूपचंद
 गुणगाय अगरचंद कहे सेवकने तारो गरवि नो-
 वाज ॥ मा० २० ॥ संवत अठारे वसई क्या स्पे
 पोस वद सुद मास वीज जई बूधवार अनोपम
 जीन पद वचन विस्वास ॥ मा० २१ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ६६ ॥ श्रावकना २१ गुणकी ढाल ॥

कईये मीलसेरे श्रावग ए हवा सुणसे आवी
 वपांणोजी धर्मगोष्ठ चरचा करसा अमे वितराग
 वचन प्रमांणोजी ॥ क० १ ॥ धूरथी सुधो सम-
 कीत जे धरे मांने नही मिथ्यातोजी साहमीसुं
 धरणे वेसे नही नही राग धेपनी वातोजी ॥
 ॥ क० २ ॥ वारे वृत रापे रुडी परे ज्यां जीवे त्यां
 सीमोजी सुधे मन कीरीयानीपप करे साचवे चव
 देनेमोजी ॥ क० ३ ॥ काल वेला पकी कमणो
 करे सुत्र अर्थ ने सुधोजी सुज तो आहार अने
 वांदे वली द्रव्ये रुधी समृद्धोजी ॥ क० ४ ॥ व्यव-
 हार सुद्ध घणुं पाले सदा^१ प्रथम वनो गुण ए
 होजो रोग रहीत^२ पंचेंद्रो^३ परगडा सोम प्रकृती^४
 सुसने होजो ॥ क० ५ ॥ लोक प्रीय उत्तम आ-
 चारणी^५ वचनां रहीत अंकुरोजी पाप करमथी^६
 रुरता जे रहे कपट थकी^७ रहे दूरोजो ॥ क० ६ ॥

तोटो आप षमीने पारको काम समारे^६ जे होजी
 चोरी परदारादिक पापथी^६ करतां लाजे ते होजी
 ॥ क० ७ ॥ जीव दया^{१०} पाले जतने करी रहे
 मध्यस्थ सुदहोजी^{११} सांम द्रष्टी^{१२} गुण रागी^{१३}
 सत थकी मातपोता सुत^{१४} पदहोजी ॥ क० ८ ॥
 दीरगद्रष्टी^{१५} जांण वीसेषता^{१६} उत्तम संगत^{१७}
 एकोजी विनय^{१८} करे उपगार कीयो^{१९} गोणे हीत
 वचन^{२०} सुवीवेकोजी ॥ क० ए ॥ लघुचलक्ष^{२१}
 अंगत आकारना जांण प्रवीण अपारोजी श्क-
 वीस गुण श्रावगना कह्या सूत्र सिद्ध तम जारो-
 जी ॥ क० १० ॥ निंदक निश्चे जावे नारकी लोक
 कहे चंमालोजी श्रावक न करे निंदा पारकी दीये
 नही कुमो आलोजी ॥ क० ११ ॥ सादू तणा ठल
 छेद्र जोवे नही चापे जगवंत आपोजी अमापी
 यासरीषा श्रावग कह्या ठांणा थंग सूत्रनी सापो-
 जी ॥ क० १२ ॥ विना वेरांया आप जीमे नही

दाषी जे दांन सुरोजो आहार पांणी वेरावे सांधा
 ने वस्त्र पात्र जरपुरोजी ॥ क० १३ ॥ एक टंक
 जीमे एकासणे सचीत तणो परीहारोजी चारीत्र
 लेवा उपर मन करे पालेशिल उदारोजी ॥ क० १४ ॥
 न्यायवीत थकी जे उपजे श्रावग दे आहारोजी
 तो अमने पीण सुध संजमपले आहार तीउड-
 कारोजी ॥ क० १५ ॥ उत्तम जाव गनी संगत थकी
 साधने पीण गुण थायोजी कुल अमुलीक संग
 थकी तेल सुगंध कहायोजी ॥ क० १६ ॥
 ए नही साध सीथल दीसे घणुं मुंरु मिळ्या पाषं-
 रोजी एहवी संका मन आंणे नही साध ठे वीजे
 षंरोजी ॥ क० १७ ॥ तरतम जोगे साध इहां
 अठे दुप सयजमि हंसोजीः माहावीरनो सासण
 वरतस्ये एहवी वात कहंतोजी ॥ क० १८ ॥ तुं-
 गीयानगरी श्रावग सारीषा आंणंदने कांम देवो-
 र्जी शंष शतक सुदर्श सारीषा करनी करे नित

मेवोजी ॥ क० १९ ॥ दूक्षम काले संजम दोहीलो
 दोहीलो श्रावग धर्मोजी गुंणलीजे अवगुंण ढांकी
 जे निज धर्मनो ए मर्मोजी ॥ क० २० ॥ तप जप
 कीरीया नीजे षप करे कुण श्रावकने साधोजी
 समय सुंदर कहे आराधीक तीके सफल जन्म
 तीण लाधोजी ॥ क० २१ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ मं० ६७ ॥

देव दांणव तिरथंकर गणधर हरोअर नर
 वल सवला कर्म वसे सहू सुष दूप पांम्या सवला
 थया माहा नीवलारे प्रांणी १ कर्म समो नही
 कोई कीधा कर्म वीन जोगव्यां तुटक वार न
 होशरे प्रांणी ॥ क० २ ॥ आ देशरजीने कर्म अ-
 णाथा वर्ष दीवस रहे भुषे वीतक वहू लावी
 रमे वीता उपना वृंमणीरीकुपेरे ॥ प्रा० क० ३ ॥
 साठ सहेश्र सुत मुवा एकण दीने जोध जुवांन

दाषी जे दांन सुरोजो आहार पांणी वेरावे सांधा
 ने वस्त्र पात्र नरपुरोजी ॥ क० १३ ॥ एक टंक
 जीमे एकासणे सचीत तणो परीहारोजी चारीत्र
 लेवा उपर मन करे पालेशिल उदारोजी ॥ क० १४ ॥
 न्यायवीत थकी जे उपजे श्रावग दे आहारोजी
 तो अमने पीण सुध संजमपले आहार तीउड-
 कारोजी ॥ क० १५ ॥ उत्तम जाव गनी संगत थकी
 साधने पीण गुण थायोजी कुल अमुलीक संग
 थकी तेल सुगंध कहायोजी ॥ क० १६ ॥
 ए नही साध सीथल दीसे घणुं मुंरु मित्या पाषं-
 रोजी एहवी संका मन आंणे नही साध ठे वीजे
 पंरुोजी ॥ क० १७ ॥ तरतम जोगे साध इहां
 अठे दुप सयजिमि हंसोजी: माहावीरनो सासण
 वरतस्ये एहवी वात कहंतोजी ॥ क० १८ ॥ तुं-
 गीयानगरी श्रावग सारीषा आंणंदने कांम देवो-
 र्जी शंष शतक सुदर्श सारीषा करनी करे नित

रे प्रां. क० ॥५॥ संभुत नांमे आठम, चक्री कर्म
 सायरमे नांष्यो पंच सहेश्र जक्ष उजे दीठो
 पीण मरतां कीण होन राष्यो रे प्रां. क० ॥६॥
 वृमदत्त नांमे वारमो चक्री कर्म कोधो आंधो
 ईम जांणीने प्रांणी वे कांमे कर्म कोई मत वांधो
 रे प्रां क० ॥७॥ लक्ष्मण रांम माहावलवंता वले
 शतवंती शिता वारे वरस वनमांहे भसीयां वित-
 क वहु लावी तारे प्रा. क० ॥ ८ ॥ लापीणो
 लंकानगर लुंटांणोः लक्ष्मण रांण मारयो एक
 लमे तीण सब जुद्ध जीतो कर्मा सुते पीण हा-
 रयो रे प्रां. क० ॥ ९ ॥ ठपनकोरु जादवारो सा-
 हीव फुल्ल माहावल जांणी अटवी मांहे मुवा
 एकलमा वीतरता नीज प्रांणीरे प्रां. क० ॥ १० ॥
 पंरुव पांचे माहा जुजारा हारी द्रोपदा नारी
 वारे वरस वनमे ररुवसीया जमीया जेम त्रि-
 ध्यारी रे प्रा. क० ॥ ११ ॥ सतीय सीरोमणी

नर जेसा सागरहुउं नज पुत्रांथी दुपीयो कर्म
 तणा फल एसारे ॥ प्रा० क० ४ ॥ वत्रीस सहेश्र
 देशंनो नायक चक्री शंत कुमारो सोले रोग सरी-
 रमे उपना कर्म कीयो षवारोरे ॥ प्रा० क० ५ ॥
 संभुत नामे आठम चक्री कर्म सायरमे नांष्यो
 पंच सहेश्र जक्ष उभे दीठो पीण मरतां कीण
 हीन राष्योरे ॥ प्रा० क० ६ ॥ इमदत नामे वार-
 मो चक्री कर्म कीधो आंधो ईम जांणी ने प्रांणी
 वे कामे कर्म कोई मत वांधोरे ॥ प्रा० क० ७ ॥
 लक्षमणरांम माहावलवंता वले शतवंती शिता
 वारे वर्स वनमांहे भमीयां वितक बहु लावी तारे
 ॥ प्रा० क० ८ ॥ लाषीणो लंकांनगर छुंटांणोः
 लक्षमण रांवण मारयो एक लके तीण सब जुद्ध
 जीतो कर्मा सुंते पीण हारयोरे ॥ प्रा० क० ९ ॥
 ठपन कोड जाद्वोरो साहीव कृस्त्र माहावल जांणी
 अटवी मांहे मुवा एकलका वीलता नीज पांणीरे

रे प्रां. क० ॥५॥ संभुत नांमे आठम चक्री कर्मे
 सायरमे. नांष्यो पंच सहेश्र जद्ग उच्चे दीठो
 पीण मरतां कीण हीन राष्यो रे प्रां. क० ॥६॥
 वृमदत्त नांमे वारमो चक्री कर्मे कोधो आंधो
 ईम जांणीने प्रांणो वे कांमे कर्म कोई मत वांधो
 रे प्रां क० ॥७॥ लक्ष्मण रांस माहावलवंता वले
 शतवंती शिता वारे वरस वनमांहे भमीयां वित-
 क वहू लावी तारे प्रा क० ॥ ८ ॥ लाषीणो
 लंकानगर लुंटांणोः लक्ष्मण रांवण मारयो एक
 लमे तीण सब जुद्ध जीतो कर्मा सुंते पीण हा-
 रयो रे प्रां. क० ॥ ९ ॥ वपनकोरु जादवांरो सा-
 हीव फूल माहावल जांणी अटवी मांहे मुवा
 एकलका वीलरता नीज प्रांणोरे प्रां. क० ॥ १० ॥
 पंरुव पांचे माहा जुजारा हारी द्रोपदा नारो
 वारे वरस वनमे ररुवकीया जमीया जेम. जि-
 ध्यारी रे प्रा. क० ॥ ११ ॥ सतीय सीरोमणी

द्रोपदा कहीये ते सम अवर न कोई पांच पुरष-
 नी नारी कहाणी कर्म करे तेम होइ रे प्रां. क०
 ॥ १२ ॥ कर्म हवाल कीया हरचंदने वेचीसु तारा
 रांणी वारे वर्ष लगे माथे आंण्यो निच तणे घर
 पांणी रे प्रा. क० ॥ १३ ॥ समगीत धारी राजा
 श्रेणक बेटे चांध्यो मसका धर्मि पुरस ने कर्म
 धकावे कर्मासुं जोर न कीसका रे प्रा. क० ॥ १४ ॥
 दधी वाहन राजारी बेटा चावी चंनणवाला चौ-
 पद जेम चोहटामे वेचांणी कर्म तणा ए चाला
 रे प्रा. क० ॥ १५ ॥ ईश्वर देव पार्वती रांणी
 कर्ता पुष कहाया अहो निश महेल मसांणमे
 केरा भिण्या भोजन पाया रे प्रा० क० ॥ १६ ॥
 सहेश्र कोरण सुर्ज प्रतापी दीन २ जावे घटतो
 सोले कलाश शियरचावो दीन २ जावे घटतो रे
 प्रां. क० ॥ १७ ॥ आठ कर्म अरीयण इध काई
 सांजल जो सहू जाईः कर्म सोरुने धर्म आदर-

जो ज्युं शिवपुर सुष थाइ रे प्राणीः क० ॥ १८ ॥
 ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ॥ ६८ ॥ ॥ दोहा ॥

गुण गांडं गोतम तणा लवद तणा चंर
 चक्रा शिद्ध जगवंतना ज्यांने जांणे जगत संसा-
 र ॥ १ ॥ प्रती बोध्या प्रभु कने गणधर गोतम
 सांम संजम पाळी सीध हूवा ज्यां राळी जे नीत
 प्रते नांम ॥ २ ॥ टाल. चर्म जीने सर वीनूवूं
 ए राग ॥ तिर्थनाथ त्रीभुवन धणी प्रभु सास-
 नका सीरदार जजन कीयां जगवंतको प्रभु मन
 वंठीत दातारजी सिमरथा पीण सुष श्रीकारजी
 सदा वर्ते जय २ कारजी तिर्थ थाप्या प्रभु च्यार-
 जी, च्याहं सिंध मांहे सीरदारजी गोतम नांमे
 गणधारजी ज्यांने होई जो मारो नमस्कारजी
 दिन्न २ प्रते सो सो वारजी ॥ १ ॥ श्री गोतम-

स्वामी मे गुण घणाः टेरः सोल मासोना सारषा-
 जी सुंदर रुप सरीर कंचन कसोटी चव्योजी
 सौ जगोतीमे चाष्यो माहावीरजी दिठां हरषे
 हीवको हीरजी वले षम सम दमने धीरजी सांमी
 सायर जेम गंभीरजी ज्यांरी वांणी मीठो षीरजी
 मीठो षीर समुद्रनो नीरजी षटकाय जीवांरा-
 पीरजी विर रे हूवा तन वजीरजी श्री० ॥ १ ॥
 गोराने घणा फूटराजी कंचन कोमल गात देही
 ज्यांरी दीप २ करे देवता पीण कीतरीक वातजी
 रोग रहींत काया सांत हाथजी घणा रह्या गुंरां
 रे साथजी सेवा कीधी दोन ने रातजी पुंठाकी-
 नी जोमी २ हातजी कही जावे कठा लग वात-
 जी ज्यांरे वीर माथे दीया हाथजी जव जीवांरा
 कूरणानाथजी श्री० ॥ ३ ॥ प्रथम संघेण संठांण
 ठे सांमी घोर गुंणे जरपूर घोर वृमचरमे जरथा
 वले तपसी घोर करुरजी कायर पूरष कंपनी जाय

दूरजी दीपता तपस्या कर्म चूरजी वीर रे हूंकमी
 हजुरजी ज्याने वंनणा उगंते सुरजी श्री० ॥ ४ ॥
 अवी ग्रीकीदा आकरोजी वीस्तार जगो तीमाय
 च्यार ग्यांन चवदे पूर्व वळे ते जुळे स्यांपीकरे
 मांयजी दपटराषी पीम्या मन लायजी दीयो
 ध्यांसुं चीत लगायजी उकडु वेटा सीस नमा-
 यजी वीर सु नेमा अलगा नही थायजी ज्यांरे
 करणी मे कूंमीयन कायजी श्री० ॥ ५ ॥ पूण्या
 ज्यां कीदी घणीजी आंणी मन आणंद सरदामें
 सांसो उपनोजी उपनो कीतोहल उठरंगजी वांध्या
 श्रीवीर जीणंदजी अनंत झांनी त्रीशला देरा-
 नंदजी पुठया देश प्रदेशां राषंधंजी मेल दीया
 सुत्र संघो संघजी ज्यांने सेवे सुरनर वृंदजी जी-
 म तारांमेचंदजी श्री० ॥ ६ ॥ सुत्र जगोतीमे
 पूछीयाजो प्रस्न अनेक प्रकार वलेई अंग उपंग-
 मेजी पूठा कीधी पेले पारजी तीर्थनाथ कामी

दीयो तारजी गोत्म लीयो हीरदे धारजी ज्यारी
 बुधीरो नही पारजी हेत जुगत अनेक प्रकारजी
 जव जीवांरा तारणहारजी घणां जीवांसुं कीयो
 उपगारजी ज्या पूरसांरी बलीहारजी श्री० ॥७॥
 ईंद्र भुती ईम चितवे मोनेकीयु नही उपनो ज्ञान-
 षेद पांभ्या प्रभु देपने बोलाव्या श्री वृद्धमानजी
 घणो देई आदर सनमानजी गोत्म उजा सन-
 मुष आंणजी चीत नीरमल ज्यांरो ध्यानजी मन
 वंछत देवे दांनजी गोत्म गुण रतनांरीपांनजी
 श्री० ॥ ८ ॥ थारे ने मारे गोयमा घणां जुना
 कालरी प्रीत आगेही आपे जेलारया रही लोर
 वकाइरी रीतजी मोह कर्मने लो तुंमे जीतजी
 केवल आडी आही जनी तजी थे शिष बडा
 सुव नीतजी रुडी छे थांरी रीतजी पुरी ज्यांरी
 परतीतजी श्री० ॥ ९ ॥ अब केशण जव अंतरे
 आपे दोनु बरावर होय विर वचन सुण्यां थकां

तव हर्ष तही वने होयजी गरु मोटा मीलीया
 मोयजी मारे कूमीयन राषी कोयजी रखा वीरि
 सनमुष जोयजी श्री० ॥ १० ॥ सनमुष वीर व-
 षांणीयांजी गोतमने तोणवार थांसरीषो वीजो
 कोय नही पाषंरुचां रोजी तणहारजी चर्चा वादी
 मे तुर्त तयारजी चवदे सहेश्र सादां मे सीरदार-
 जी वीजा साध सहू थांरेलारजी हूवाही वने हर्ष
 अपारजी श्री० ॥ ११ ॥ काती वद अमावस्यां-
 जी मुक्त गया वृधमांन इंद्र अतीने ऊपनो तव
 नीरमल केवल ज्ञानजी धर्म दीपायो नगरपुर
 गांमजी पढे सारीया आत्मकांमजी रुषरायचंद
 करे गुण ग्रामजी धनरश्री गोतम सांमजी श्री०
 ॥ १२ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ न० ॥ ६९ ॥ ॥ दोहा ॥

दया वरोवर धर्म नही पिम्यां सुंसुष अजंत

संतोष बराबर सुष नहो इम जाण्यो जगवंत ॥१॥
 निरफल होवे असत्री निरफल रुषज होय दया
 तणा फल जाणजो ए निरफल नही होय ॥२॥
 सरणे आयो पारेवको मेघ रथ दीयो आधार
 तिणरो फल कोम पांमसी ते सुणजो ईधकार
 ॥३॥ (ढाल) परव दिवस पोसा मधे राजा जपे
 नवकारोजी द्रढ धर्मि द्रढ आत्माः हीरदे दया
 अपारोजी ॥ १ ॥ थे सुणजोजी जवियण लोकः
 दया तणो विस्तारोजीः टेरः देवलोक पहिले तणे
 इंद्र अवधी वीचारथोजी मेघरथ राजा देषने
 हरण्या अतही अपारोजी थे० ॥ २ ॥ सकेंद्र गुण
 वर्णवे धनामे घरथ रायोजी जय पामंते जीवको
 नही मुके सरणे आयोजी थे० ॥३॥ वचन सुणी
 इंद्र तणा हर्षादेव अपारोजी दोय मीथपाती देव-
 ता माने नही लीगारोजी थे० ॥ ४ ॥ राजाने
 ठळवा जणी कीधो एक उपायोजी सोचाणो पा-

रेवको देवां रूप वणायोजी थे० ॥ ५ ॥ शरणे
 जणी पारे वको आयो राजाजीरे पासोजी सरणे
 रापो धर्मना धणी एम करे अरदासोजी ॥थे०६॥
 अती धुजे अती कंपतो राजा पोले लीधोजी भय
 मत कररे पारेवका राजा धीरप दीधोजी ॥थे०७॥
 पुठे लागो ओलंजीयो आयो सत्ता मजारोजी
 पाछो पंथी मागीयो आयो आहार हमारोजी ॥
 ॥ थे० ८ ॥ फिटरे ओलंजीया थूं बोल्यो वीना
 विचारोजी शरणे आयां काम आपसां मारो
 क्षत्रीकुल आचारोजी ॥ थे० ९ ॥ मांगो मेवा सुं-
 षडी दाडम दाप वीजोराजी मांगो आंवा आंव-
 ली पारकषांड वीजुरोजी ॥ थे० १० ॥ न लेवां
 मेवा ने सुंषमी दामम दाप वीजोराजी न लेवां
 आंवा आंवली पारकषांन वीजुरोजी ॥ थे० ११॥
 केले सुं पारेवको के तजसुं प्राण हमारोजीके तुमे
 काया पंडने आपो मांस तुंमारोजी ॥,थे० १२ ॥

वात सुणी मेघराजवी हरण्यो अंती अपारोजी
 जलेश ओलंजीया थे कीधो जलो वीचारोजी ॥
 थे० १३ ॥ इम राजाजी बोलायने शस्त्र ओर मं-
 गायजी तुरत तराजु मांडने पंडण लागो काया-
 जी ॥थे०१४ ॥ इम वात सुणी राजा तणी रावले
 गई पुकारोजी अंतेवर वीलषो थयो राय तणो
 परीवारोजी ॥ थे० १५ ॥ हाट वाट सुना थया
 सुना पनघट घाटोजी हाहाकार हूवो वणो रा-
 जाजी सुण वातोजी ॥ थे० १६ ॥ राय दीवाण
 मील करी आया राजा पासोजी राय रांणा पगे
 लागने एम करे अरदासोजी ॥ थे० १७ ॥ हात
 जोड वीनती करे मानो वचन हमारोजी पारेवो
 पाठो मुकदो मे वीनवां वारंवारोजी ॥ थे० १८ ॥
 वचन दीयो चुकूं नही थे चावेजव मत जाणोजी
 वरज्यो राय माने नही बोले इसमी वांणीजी ॥
 थे० १९ ॥ कदे कतो प्रश्नी चले चले सुर उगं-

तोजी सापुरस बोल्या नही फीरे इम बोले मेग-
 रत रायजी ॥ थे० २० ॥ तुरंत तराजु मांडने पंषी
 मेढ्यो लारोजी नमे न डांकी तोलतां तव मेढ्यो
 सकल सररिोजी ॥ थे० २१ ॥ एहवी रचना देषने
 देवां अंवघी वोचारयोजी सेघरथ राजा रायने
 देष्यो अन्नय अपारोजी ॥ थे० २२ ॥ देवरूप प्र-
 गट कीयो लागो राजा पायोजी धन्य२ मोटा रा-
 जवी थांरा शक्रेद्र गुण गायोजी ॥ थे० २३ ॥ ते
 गुण जोवा कारणे आया सत्ता सजारोजी सरगा-
 पुररा देवता षमो अपराद हमारोजी ॥ थे० २४ ॥
 शरणे जणी पारेवडो राजा हठ कर राष्योजी
 तिर्थकर गोत्र उर्षज्यो पोते अती गुण वांध्योजी
 ॥ थे० २५ ॥ पांचवर्ण फुलां तणा फुलफग रव-
 रासायाजी राजाका गुण वरणवी अपने ठांम सि-
 द्धायाजी ॥ थे० २६ ॥ पोते अती गुण वांधने
 अनुक्रमे किधो कालोजी स्वार्थसद्धिमे उपना पां-

म्या भोग रसालोजी ॥ थे० २७ ॥ स्वार्थसीद्ध-
 थी चव करी गजपुरी लीनो अवतारोजी तिर्य-
 कर चक्री राजा तणी पांम्या पदवी सारोजी ॥
 थे० २९ ॥ शंतनाथजी सोलमा जगमे मोटो
 नांमोजी जीनमार्ग प्रवृत्तायने पहोता अवीचल
 ठांमोजी ॥ थे० २९ ॥ सुष पांम्यो ते सासता केतां
 न आवे पारोजी भणे सेवग इण जगतमें संत सुषी
 अणगारोजी ॥ थे० ३० ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं. ९० ॥ चोपाईनी राग ॥

आदी जीनेसर पाय प्रणमेव सरसती सां-
 मनी मन धरेव जीवदया पांली नरनार जेहथी
 तीरो निश्चे संसार १ पांणी गलतां जेणां करो
 पारो मीठो जूदा धरो जेने मन दया प्रधान ते
 घर दीसे बहोत संतान २ मारे जुंने फोडे लींष
 नरनारीने एहीज सीष तेहने घरे नहीं संतान

दूष देषे ते मेरु समांन ॥ ३ ॥ पंषी उंदर मांण-
 सना बाल जे पापी मारे चीरकाल जेहने परजव
 एहीज दूषः बोरु तणो नही होवे सुष ॥ ४ ॥
 मांषण मध वली अथांण आदो सुरण वरजे जांण
 गाजर मुला रतालु जेह सुघ सहावग ते ठंमे एह
 ॥ ५ ॥ फोगट फुले माया करे कहो केम जवसा-
 गरथी तीरे जेहने देव गुरांसुं द्वेष सुष न पामे
 तेह लवलेस ॥ ६ ॥ वहू दीहानानो मेल करी
 मांपण तावे अगनी धरी जेह मरीने नकें जाय
 मांनव होवेतो दागज्वर थाय ॥ ७ ॥ दूध तणे
 वले लोभे जेह पाका भुषां मारे तेह फरता डोरमा
 जे जाय वली भुषे तरसे मरे टलवली ॥ ८ ॥
 आंष फूटी दीय जे गालः परजव आंधो थाय
 बालः मरो फीटो दीय जे गाल परजव सुष न
 मांने बाल ॥ ९ ॥ पाट पाटला ने वस्त्रदांन स-
 वीशे क्युं वली संध्यो घांन मुनीवरने दे मन उ-

लास तस घर लक्ष्मी रहे थरिवास ॥ १० ॥ देवे
 दांन वीमासण करे देई दांन मन चिंता धरे सुष
 संपत्त पांमे अचीरांम ठेहमे न होय वसवांने ठांम
 ॥ ११ ॥ धन थोमो ने देवे दांन महयिल तेहनी
 वाधे वांन रिषीने देई करे रंगरोल तस घर लक्ष-
 मी करे कीलोल ॥ १२ ॥ सुष संपती जो आवे
 मीली डोसानी देवा मती टली धन उपर जेरापे
 नेह परजव साप थाय जेह ॥ १३ ॥ अधीको
 उछो वांधे तोल देवाचा नही पाले बोल जेहनी
 लोकमां न होवे लाज परजव तेहनो न सारे काज
 ॥ १४ ॥ पोथी बाले बोले जेह परजव मुर्ष थाए
 तेह जणे गुणे दे पोती दांन परजव नर ते वीध्यां-
 वांन ॥ १५ ॥ न्हांना मोटांकुं वली हरी षांते
 छूटे लीला करी किधा कर्म नवी ठेलाय मरने
 नर ते कोडी थाय ॥ १६ ॥ पांष पंषीनी काढे
 जेह परजव टुंटी थाय तेह पग कापने करे गख-

गलो मरीने नर ते थाय पांगलो ॥ १७ ॥ पाडोसी
 सुं वधे दीनरात परजव ते न पांमे संघात मात
 पीता सुत वैर घणी परजव तेहने वाढी वढ घणी
 ॥ १८ ॥ अण दीठो अण सांजल्यो कहे जेह
 परजव वेरो थाए तह पारकी निद्या करे नरनार
 जस नवी पांमे तेह लीगार ॥ १९ ॥ परना अव-
 गुण ढांके जेह नरनारी जस पांमे तेह निद्या करे
 ने देवे गाल परजव नर ते पांमे आल ॥ २० ॥
 रात्री जोजन करे नरनार ते पांमे बुधढ अवतार
 राते पपी न षाय धांन मांणस हीये न दीसे झांन
 ॥ २१ ॥ सुर्य सरीषो आघमे देव मांनवने पावा-
 नी टेव धर्मी लोक होय जेह रात्री जोजन टाले
 तेह ॥ २२ ॥ गोत्म प्रठाने अनुसार एह सजाय
 करी श्रीकार पंडीत हर्षसागर शिक्षसार सविस्ता-
 गर कहे धर्म वीचारः ॥ २३ ॥ ईती संपुर्णः ॥

॥ नं. ॥ ७१ ॥

पीम्या धर्म पेला परो चापीयो ए जगदीसरे जो
 सुष चावो जीवनो तो मत कोई राषो रीसरे १
 पीम्या कीयां सुष उपजेः ॥ टे. १ ॥ कलह कदे
 आठो नही लडतां लक्ष्मी नासरे दूष दालीद्र घरमे
 धसे गुण कांश् न प्रकासरे ॥ पी० २ ॥ गाल्यां वंटी
 जे राडमे लाडु नही वंटीजेरेः वाल्हा पीण वेरी
 हूवे तो ईसाकां मन कीजेरे ॥ पी० ३ ॥ क्रोधी
 नरका लोहूवे कांम कोई न सुधारेरे आगो पाछो
 जोवे नही लापीणी प्रति वीगाडेरे ॥ पी० ४ ॥
 वीस, सुत्र दव देवणं ए करे वचन रावा धारे द-
 वरा दाधा पालवे न पालहे वेजी ज्ञां रादा धारः
 ॥ पी० ५ ॥ क्रोधे दाहे दाधा नही जिके सदा
 रहे रुहमाहोरे सदा पुसाली जेहने जीके पीम्या
 करे ज्वित लायोरे ॥ पी० ६ ॥ वाप वेटो सासु
 वहुं गुरु चेला गुरुचाईरे क्रोधे वलीया उठले न

रहे रह माहोरे सदापुसाली जेहनेः जीकेषीम्या
 करे चीतलायोरेः ॥ षी० ६ ॥ बाप वेटो सासु
 बहू गुरु चेला गुरुझार्शेरे क्रोधे बलीया उठले
 नगीणे नेमी सगार्शेरेः ॥ षी० ७ ॥ क्रोध रुका
 बेरावले घरजावेईण काजोरेः मतकरोपेदाईसका
 उठा जीतवआजोरेः ॥ षी० ८ ॥ क्रोधीमर कूत्ता
 हूवे वो सांमेधुम मचावेरे जे कोई देषे ओपरो
 तो तोरुःःने घावेरेः ॥ षी० ९ ॥ पिंस्त ते क्रोधे
 चढे तेतो बाल अज्ञानीरे निच चंमालरीओपमा
 दीधी केवल ज्ञानीरेः ॥ षी० १० ॥ घरमे एक
 क्रोधी हूवे सगलाने तलतलावेरेः जीणरे क्रोध
 हूवे घणो जीणरो जन्म सुपे कीम जावेरेः ॥ षी०
 ११ ॥ षीम्या अरीहत करे घणीः ज्यारे अंगरा
 लक्षण रुमाजीः धनरमाजायो मीकरोः अरीहंत
 षीम्या सुराजीः ॥ षी० १२ ॥ गजसु घमाल मुनी
 सरुः सोमलः सीसऊजाब्योजीः मनकर छेप न

आणीयोः आत्मकूल उजवालयोजीः ॥षी०१३॥
 वले पंथक षीम्या आदरीः षमावतां वोळ्यो नरु-
 कीरेः धन जिरवणा तेहनीः पाठो न वोळ्यो तरु-
 कीरेः ॥ षी० १४॥ कोई अणुतो आलदेः सुणतां
 लागे पारोरेः तो पण क्रोध आप्णे नही नरगां
 राडुपचीतारोरेः ॥ षी० १५ ॥ क्रोध करे गाळ्यां
 सुणीः होवे पीलो ने कालोरेः आपदेवे उंचोवकेः
 तो सीरषादोनुई वालोरेः ॥ षी० १६-॥ आपरो
 क्रोध देषे नहीः पर अवगुण काढेअपुठोजीःसिष
 देता सामा कहेः क्रोधव्यांसु ईन बुटोजीः॥षी०
 १७ ॥ ईती संपूर्णम्:

॥ न० ॥ ७२ ॥

॥ अथवाजिंद ॥

तातातुरीपिलाण चोवटे कूदणा टेकी प्रांग
 जुकायः वायाकुं निरषणाः रुपरंग अरुरागः पवन
 ज्युं वहे गयाः परीहांवाजीदः केतीकहूंवणायः

कवारा रहे गया. ॥ २ ॥ अजव ढाल हे एक
 रामका नांमकी, जो कोइ जाणे ढाव जासंका
 कांमकी: सिवसनकाटिकसे सलग्या रहे वोटरे;
 परीहांवाजीद: जमढालांदे जाई लगे नही वोटरे.
 ॥२॥ अटकनदी असराल: अजव आकरी: धुर
 कावलकीमोम धणीकी चाकरी, च्यारवहेचोधार
 जाव्यासुधका: परीहांवाजीद: जे नर उतरे
 वार होई हरीका थका. ॥३॥ जनमजातहेवाद:
 यादकर पीरकूं, मुसकलसुं आसा न होय
 जीवकूं; ज्यांकेही रदे रांम; रयणी दीन रहेत हे
 परीहांवाजिदके, नही मुक्तमे फेर, सत सव
 कहेत हे ॥ ४ ॥ जुंमीजलीका, न्यायके सांइ
 मांगसी पगमे रसमीमार, उर धमुष टांकसी:
 मुषमे देसी मार नेणजर बुणसुं, परीहांवाजीद,
 दीनाच्यारी मीजमांन विगामे कूणसुं. ॥ ५ ॥
 धन जोवनका गर्ज न कर्ण वीरे, ठायर बुग

मेह कहां गया नीरे; रोईकारा फुलके वनमे
 फुलीया, परीहांवार्जीदः जुठी माया लाग न्नज-
 नकूं चूलीया. ॥ ६ ॥ घनी वे घनीयाल पुकास्थां
 कहेत हे आवगई वीत अलपसी-रहेत हे. सोवे
 कहां अचेत जागजपीवरे; परीहांवार्जीद, चलणा
 आज के काल वटाउजीवरे. ॥७॥ न्नजले तोता
 रांसके वेगो ताकमे, दीन च्यारका रंग मिलेगा
 पापमे सांश्वे गीसमालीजमांसुरानी हे, परीहां-
 वार्जीदः जसके हाथ गीलोले पटकापानी हे.
 ॥ ८ ॥ पातसाहकी सेज पथरणा पाटका; हीरा
 जड्या जमावके पाया पाटका; हुरमांपनी हजुर
 करत हे वदगी; परीहांवार्जीदः वीना न्नज्यां
 न्नगवान पकेगा गंदगी. ॥९॥ २५

पनी रही मातरा, सुते
 ले चाले एकंत पात जं
 देखत हे

वार २ . ससजाई आग्यां नीचेतरे, कांकरु
 उन्नी फोज बूहारे पेतरे; बहेसी गोला नाल हं-
 वायां लुटसी, परहावांजींदः कंचनवर्णि कापों
 काच ज्यू फुटसी ॥ ११ ॥ दासी उन्नी चारके मोठी
 रावली, पहेखा दीपणी चीरकेफारे उतावली;
 गहीली कीयो गुमानके गंधी देहको, परिहा-
 वाजिंदः निरनिवांणा जायके पाणी मेहको. ॥
 ॥ १२ ॥ फरहरे ते निसांणा नगारा वाजतो,
 फिरे चिहूं बजार चले नर गाजतो; हाथांदीना
 दान कयामुपरांमरे; परीहांवाजीदः ए सुपनीज-
 रांदेष जजनका कांमरे. ॥ १३ ॥ मनकूंजर महे
 मंत मरीतो मारीये; कनककां मणी कलंक टले
 तो टालीये, साधांसेती प्रीत पलेतो पालीये;
 परीहांवाजींदः रामजनमे देह गलेसो गालीये.
 ॥ १४ ॥ सीर पचरगी पांग के जामा जरकसी
 करमे लालक वाणके कमरमे तरकसी; ज्यांघर

चंगी नारदी षावे आरसी; परीहांवाजीदः सो
 नर चादिया मसांण पढता पारसी. ॥ १५ ॥
 कारीकर कर्तारके हूंनर हदकिया, दसदरवाजा
 राधी सेर पेढा कीया; नषचष महेल वणायके
 दिपक जोईदीया; परीहांवाजीदः जितर जरी
 भिगारं उपर रंग दीया. ॥१७॥ साहीबके दरवार
 पुकारे बकरा, काजीलीयाजाय कांनकर पकरा;
 हेमाश लीया सीस उसीका लीजीये, परीहांवा-
 जीदः राव रंकका न्याय अदल कीजीये. ॥१७॥
 मुषसुं कयो नही राम दीयो नही हाथरे, अव
 घरमे नांही अनफीरे काहूं साथरे; माथे देकरी
 वोज डूरकूं तांणीयां, परीहांवाजीदः वीना जज्यां
 जगवानं यांही पीठाणीया. ॥ १८ ॥ उंचामंदीर
 मेल-निचा मालीया, वेठी राजकवारके परुदा
 ढालीया; गले सोनारा हार नाकमे वालीयां;
 परीहांवाजीदः करत पीयासुं वात देदे तालीयां.

॥ १९ ॥ पीव चांद्या परदेसके ताला दे गया,
 हिरदेवृज कीमारु के कूंची ले गया; उर घणा
 रंगराग वोहत करपेपणा. परीहांवाजींदः सांशसेती
 प्रीत और नही पेघणा. ॥ २० ॥ ईती संपुर्णम्: ॥

॥ नं० ॥ ७३ ॥

॥ अथपारसनाथजीरोसीलोकोलिख्यते: ॥

प्रणमु परमात्म अवीचल आवतारुः अरी-
 हंत सीधां रानाम उचारुः सीमरुं आचारज
 मोटा उपाध्याः साद्रु आतमना-कारज साध्या.
 ॥ १ ॥ नगरी अलंकापुर वणारसी सोहे, देण्यां
 घणारामनराजी मोहे; देसदेसांमे कासी खंरुवरु
 देसो, करदरु अकरारो नही लवलेसो. ॥ २ ॥
 राजे महाराजा अश्वसेन राजा, सदात्री वखतां
 वाजे नीत वाजा; केसु राजा रोकासुं परमाणो,
 देस सगलामे वरते ठे आणो. ॥३॥ मणी माणीक

मोती जरीया जंमारो, अष्टसीद्ध नवनिधरोपार
 नपारो; अती घणी सुदरी दीपे एक रांणी, साज
 वांमाढे माता पटरांणी. ॥ ४ ॥ जीणरी कूखे तो
 जगनाथ जायो, पार्श्व कुंवर जगनाथ कहायो;
 तीनजुवनरो नायक नाथो, सुगत रमणीने घाली
 ठे वाथो. ॥ ५ ॥ चोष्ट इद्रानो पुजनीक देवो,
 निसदीन तो आगलसारेजी सेवो; दसज्जवारो वेरी
 गेरीसवायो, कमठ सेन्यासी तापस आयो. ॥ ६ ॥
 चीढूंदीस अगनी धुकंती जाला, सीरपर तो सोहे
 सूर्य वराला; इसकीपंचा अगनी तपस्या तपंतो,
 मालारुद्राषरी जाप जपंतो. ॥ ७ ॥ गंगातट उपर
 आसन कीनो, जोगी जपतंपमे अति घणो ज्ञीनो;
 सीस जुटासु मुकटसु जुढ्यां, जांग धतुरा जपीया
 अती बुढ्यां. ॥ ८ ॥ आसण पदमासण पुरणठायो,
 लेपी जस्मी सुंधसम सकायो; पेरण पावनीयां
 आगल पनीयां, वृजृकठोटो कसीयो ठे कनीयां.

॥ ए ॥ चकूचोला ऊलकेजीमोला, सींगीसेलीने
 वज्रुतरा गोला; तीपो त्रीसुल एक अर्धीक वीराजे,
 जालचंनणरी पोलज ठाजे. ॥१०॥ सोहे वागंवर
 घापंवर सोहे, घणा अवधुतने देष्यां मन मोहे;
 अवधुत तो इसको कोइ न आयो, जसतपसीरो
 घणो सवायो. ॥ ११ ॥ दोन्ही दूनीयां सहू दर्सन
 जावे, जलज्युंतो जोगी ज्वालामें न्हावे, ईसमी
 वातां अब आई दरवारो, कहे वांमां सुण पार्श्व
 कुमारो. ॥ १२ ॥ जीहां जोगी सरजाप जपंतो,
 दर्सनरी मनमे घणी ठे पतो, चढीया वांमादे
 माता चकमोले, चाकर सहेढ्यां चामर ढोले. ॥
 ॥ १३ ॥ हूकम मातारे पास कुमारो, गयवर
 उपर हूवा असवारो; सरणे आयांरो साहीवसांमी
 जीवसांरारो अंतरजांमी. ॥१४॥ हस्ती हलकांरां
 गंगातट आया, कपटी कमठरी देषी सहूमाया,
 जीतरेतो जीनवर ज्ञानकर जोवे, अवतो ताप

सरोमांनज षोवे. ॥ १५ ॥ सुंण होतांपस एक
 मारी जवायो, इसमोतपत्तो मारी दायनआयो,
 ईणवीध पंचा अगनी मती तापो, जीवहिस्वारो
 हूवे संतापो. ॥ १६ ॥ ठोको मायामद दया चीत
 धारो, सिधा समरण सुंहोसी निस्तारो; इसमो
 श्रुंणीने कमठज बोले, आतुर उफणतो आंषज
 षोले. ॥ १७ ॥ गुसे नरीयोने धरुश धूज्यो, कीरुश
 दांतांने गीरु २ गुंज्यो, बोले वरु २ ने वके
 वदनुरो; कर २ तो आग दांत करुरो ॥ १८ ॥
 राजकूंवर तुं दीसे अवतारो, अवतो लेवेगा अत
 हमारो; कूरि करतेहो हमसे तुमसेपि, केसि तप-
 रयामे हीस्या तुम देषी. ॥१९॥ कूरुतोकूंवरकरा
 नही कीजे, जंगम जोग्यांरी आल न लीजे; वरजे

जीवज काया, प्रभु पार्श्व तीहां नाम सुणाया. ॥
 ॥ २१ ॥ तरुफरुता पनीया वाहीर फुर्णिदो, पाय
 अमरापद हूवा धरणेंदो; हमेक मठतो हुवो हेरानो
 पुरीपुर पदामे पनीयो कीसानो. ॥ २२ ॥ धूकंती
 धूणी वेढेरी वीपेरी, अवतो पव रहे पार्श्वतेरी;
 जलशतो वलशतो आफलतो उद्यो, रीस नरीने
 कूवरपर रुठयो. ॥ २३ ॥ हमचीतपस्यारो अपजस
 थायो, पार्श्वकूवरने होसुं दूषदायो; काया कष्टरो
 पाउंपरमाणो चूकूंतो नही कूवर सुगंणो. ॥ २४ ॥
 काले मासेकानो ठे कालो, उपज्यो कमठा-
 सुरमेघजमालो; एतो ठे जीनवर मोटा उपगारो,
 लेसी दीक्षा ने उतर सीपारो ॥ २५ ॥
 नांग नागणीनो कीनो निस्तारो, जस हूवो ठे
 सारे संसारो; लोक नगरीरां सारा सुपपाया,
 अवतो कूमरमेलांजी आया. ॥ २६ ॥ इम करता
 उतख्या वर्स उगणतीसो, आप आलोचे मनमे

सरोमानज षोवे. ॥ १५ ॥ सुण होतांपस एक
 मारी जवायो, इसमोतपत्तो मारी दायनआयो,
 ईणवीध पंचा अगनी मती तापो, जीवहिस्वारो
 हूवे संतापो. ॥ १६ ॥ ठोमो मायामद दया चीत
 धारो, सिधा समरण सुंहोसी निस्तारो; इसमो
 श्रुंणीने कमठज बोले, आतुर उफणतो-आंषज
 षोले. ॥ १७ ॥ गुसे जरीयोने धरुश धूज्यो, कीरुश
 दांतांने गीरु २ गुंज्यो, बोले वरु २ ने वके
 वदनुरो; कर २ तो आग दांत करुरो. ॥ १८ ॥
 राजकूंवर तु दीसे अवतारो, अवतो लेवेगा अत
 हमारो; कूरि करतेहो हमसे तुमसेपि, केसि-तप-
 स्यामे हीस्या तुम देषी. ॥ १९ ॥ कूरुतो कूरुकरा
 नही कीजे, जंगम जोग्यांरी आल न लीजे; वरजे
 वांमादे उजापरचावे, रपे तपसी कोइ हूनर
 चलावे. ॥ २० ॥ इतरे लकरांरा टुकराजी कीना,
 सुवता हूंतांसणना गजलीना; अंतरमुहर्तलग

जीवज काया, प्रभु पार्श्व तीहां नाम सुणाया. ॥
 ॥ २१ ॥ तरुफरुता पनीया वाहीर फुर्णिदो, पाया
 अमरापद हूवा धरणेंदो; हमेक मठतो हुवो हेरानो
 पुरीपुर पदामे पनीयो कीसानो. ॥ २२ ॥ धूकंती
 धूणी लेढेरी वीपेरी, अबतो पव रहे पार्श्वतेरी;
 जलशंतो बलशंतो आफलतो उव्यो, रीस नरीने
 कूवरपर रुठयो. ॥ २३ ॥ हमचीतपस्यारो अपजस
 थायो, पार्श्वकूवरने होसुं दूषदायो; काया कष्टरो
 पाउपरमाणो चूकूंतो नही कूवर सुवांणो. ॥ २४ ॥
 कालें मासेकानो ठे कालो; उपज्यो कमठा-
 सुरमेघजमालो; एतो ठे जीनेवर मोटा उपगारो,
 लेसी दीक्षा ने उतर सीपारो ॥ २५ ॥
 नाग नागणीनो कीनो निस्तारो, जस हूवो ठे
 सारे संसारो, लोक नगरीरा सारा सुषपाया,
 अबतो कूमरमेलांजी आया ॥ २६ ॥ इम करता
 उतस्या वस उगणतीसो, आप आलोचे मनसे

जगदीसो; पहीली तो वरसीदानज दीजे, पढेतो
 अवसर दीष्याजी लीजे. ॥ २७ ॥ सोले मासे एक
 कनक कहीजे, कनक सोलेरो सोनैयो लीजे;
 अटलप सोनैया एकज कोमो, नित प्रततो देवे
 ईतरानी जोमो. ॥ २८ ॥ ईसको संवत्सर दानज
 दीयो, जीनवर तेवीसमा संजम लीयो; त्रणसे
 मुनीवरतो हूवा तीणवारो, लारेतो जूरे घणो
 संसारो. ॥ २९ ॥ एक दीनतो प्रचुजी शिवद्रग
 वनमे, ध्यान धरीयो ठे अवीचल मनमे; अंवतो
 कमठासुरज्ञानकर जोयो, कठे हमारो दूस्मन
 होयो. ॥ ३० ॥ रुठोकमठासुरवाउ चलावे, अधर
 पामांरा सीषर उमावे; वादल जंकीया ने ठाया
 आकासो, जाणे जादरवो वरसेजी मासो. ॥ ३१ ॥
 वीजल वाउने अतीघणो गाजे, पाणी पहामांथी
 परुतोजी वाजे; पने पाणीरा पावस परुनाला,
 धसमसीया मुंगर धारांधक चाला. ॥ ३२ ॥ काले

अकाले मचीया वरसाल, नाला पालातो मचीया
 वंवाला; जीनवरतो जगमे नासालग कळीया,
 ध्यान अचलाचल नहीजी चलीया. ॥ ३३ ॥
 अवतो मनसांहे दीयो अवालो, ओतो ठे दूष्टीमे
 गजमालो; दशज्वरो वेरी कमठासुर दीसे, संजायो
 वजर आंणी अती रीसे. ॥ ३४ ॥ धुज्या कमठासुर
 मनमे पीठताया, मेतो जीनवरने घणा संताया;
 एतो प्रभुजी मुगतरा प्यारा, रागद्वेष सुंहोय
 गया न्यारा. ॥ ३५ ॥ ईसको जाणीने लागोठे
 पावो, प्रभु हमारा पाप घमावो; अवतो कमठा
 सुर इंदर देवो, सारे प्रभुजीनी घणीज सेवो. ॥
 ॥ ३६ ॥ आप आ परेथांनक पहोता तीणवारो,
 अवतो जीनवर कीनोठे विहारो; दीन त्यासी
 ठदमस्त रहीया, बावीस परीसाकरराजी सहीया.
 ॥ ३७ ॥ अष्टकर्मारो कीनो ठे नासो, पठे तो
 केवल हूवो परकासो; वाणी पेतीस ने अतीसय

चोतीसो, ईणवीध तो वीचरे जीनवर तेवीसो.
 ॥ ३८ ॥ ज्यां ज्यां जीनवरजी पगड्यां पधरावे,
 धरती आगासुं समी होय जावे; सोसो कोसां
 लगन पने दूकालो, मोटा रोगारो नहू वेचालो.
 ॥ ३९ ॥ कोई हलके श्रावगरे पारणा पावे, देवता
 सोनैया कोसां वरसावे; सुरपत नगवंतरी सारे
 नीत सेवो, लाज अणहूंतें सतलषडेवो ॥ ४० ॥
 देवदेवी मील दर्शन आवे रतन कंचनरो त्रीगर्भा
 रचावे; वांणीधुकारां उठे अतजारी, पुर्पटा वारेही
 समजे तीणवारी. ॥ ४१ ॥ गाम नगरांपुर सोहे,
 विचरंता जाग नवजीवां रासाले नगवंता; गुणरा
 आगर ने सागर गंजरीरो, लकीया कर्मा सुजारी
 रणधीरो. ॥ ४२ ॥ अनेक जीवांरा कारज साख्या,
 नवसागरसुं पार उताख्या; एकसोवर्सरी पाईठे उमर
 जाई तो चढीया सुमेरगीरी शीषर. ॥ ४३ ॥ तीथ
 अष्टमी श्रावन सुद मासो, प्रजुजी कीयो वे सि-

द्वांमे वासो; उणां सीधारो करसुं वषाणो, कांश्क
 सुतर मतपीण जाणो. ॥४४॥ सीध शीलारो
 इसको अनुमानो, उठे जगवंतरो अवीचल थानो
 लांवी पहोली लषपेतांलीस जोयण, कथीयो गुण-
 वंता इसकोजी मोयण ॥ ४५ ॥ विचमे तो जाकी
 घणीजी सगली, ठेके- मापीनी पांपसु पतली;
 सोहे अनंतीशिद्धारी श्रेणी, संध्या शिवपुररी नहीं
 आवे केणी. ॥४६॥ प्राणी पवनरो नहीं लवलेसो,
 नहीं अधारो नहीं रविरेसो, नहीं उनालो नहीं
 वरसालो, नहीं सीयालो नहीं ऋतुकालो. ॥४७॥
 कोई आवे नहीं कीणरे कोई जावे, षावा पी-
 वाना कीणने नहीं जावे; सुता वेठा नहीं उजाजी
 आका, जारो हलका नहीं पतलाजी जाका. ॥
 ॥ ४८ ॥ हासा पासातो नहीं उवासा, पटजी-
 वांरा जोवे तमासा; चाकर ठाकर तो नहीं उण
 ठोको, बुको वकेरो नहीं कोई लोको. ॥४९॥ वरते

चोतीसो, ईणवीध तो वीचरे जीनवर तेवीसो.
 ॥ ३८ ॥ ज्यां ज्यां जीनवरजी पगल्यां पधरावे,
 धरती आगासुं समी होय जावे; सोसो कोसां
 लगन पके डूकालो, मोटा रोगांरोनहू वेचालो.
 ॥ ३९ ॥ कोई हलके श्रावगरे पारणा पावे, देवता
 सोनैया कोमां वरसावे; सुरपत जगवंतरी सारे
 नीत सेवो, लाज आणहूंतें सतलपदेवो ॥ ४० ॥
 देवदेवी मील दर्शन आवे रतन कंचनरो त्रीगर्भो
 रचावे; वांणीधुकारां ऊठे अतज्ञारी, पुर्पदा वारेही
 समजे तीणवारी. ॥ ४१ ॥ गाम नगरांपुर सोहे,
 विचरंता ज्ञाग जवजीवां रामाले जगवंता; गुणरा
 आंगर ने सागर गंजरी, लकीया कर्मा सुजारी
 रणधीरो. ॥ ४२ ॥ अनेक जीवांरा कारज साख्या,
 जवसागरसुं पार उताख्या, एकसोवर्सरी पाईठेउमर
 जाई तो चढीया सुमेरगीरी शीषर ॥ ४३ ॥ तीथ
 अष्टमी श्रावन सुद मासो, प्रजुजी कीयो ठे सि-

सीलोको जलो, प्रणमे पंचोली जोरावर मलो.
 ॥ ५५ ॥ समत अंगारे वरस ईकावनो, पोह वद
 दसमीरो मोटो ठे दीनो; वाचे जणे ने सीपे
 सदाई, ज्यांरे उणार तनही रहे कांई. सुधसंपत
 दायक नायक सांमी, चवदे राजरो अंतरजामी.
 ॥५६॥ ईती पार्श्वनाथजीरो शिलोको संपुर्णम्: ॥



॥ नं० ॥ ७४ ॥

॥ अथ चंद्रा प्रजुनो सिलोको लीपंते ॥ दोहा ॥
 सरसत सांमण वीनवूँ, लागु सतगरु पाय;
 दद अक्षर दूरे करो, सीवरु शारदमांय. ॥ १ ॥
 इष्टदेव नीत सीमरीये, मनवंठीत दातार; अलीय
 वीघन दूरे हरो, सपती राषणसार ॥ २ ॥
 ॥ सिलोको ॥

सरस्वती माता सारदा राणी, समरु जीन-
 सासन वरदायक वाणी; माहासेन राजाघरे

सीद्धारो समचे समजावो; जीनवर मुंनीवररो
 नही कोई दावो; जठे तो प्रभु पार्श्व वीराजे,
 त्रीहूं लोकमे नामज ठाजे. ॥ ५० ॥ सीवपुर तो
 सेवा देवता सारे, योही पृथ्वी पर मानव अव-
 धीरे; देवल देहरा, पीर पधराया, प्रतमा थापीने
 मंदीर कराया. ॥ ५१ ॥ मोटा मुंनीवरतो जीनवर
 मतहाले, श्रावग कीतरा ईकतीमहीज चाले; केईक
 तो प्रतमा पुस्तकमे रापे, केईक जगवंतरा जावे
 गुण जापे. ॥ ५२ ॥ केईक तो देवल देहरां जावे,
 केईक अचलासण ध्यानै लीवलावे, पार्श्व प्रभुरी
 महीमा अणपारो. ईणमे तो आयो थोको वी-
 स्तारो. ॥ ५३ ॥ लागो वाला अती प्रभुजी प्यारा,
 ढीलसुं, कीजे नही घनी एक न्यारा; पलपलमी
 वंदणा-होय जो हमारी, -महेर राषीजोमां पर-
 थारी. ॥ ५४ ॥ पठे तो जगवंत हूवा वर्द्धमानो,
 इणवीध मुखाने उहीज ध्यांनो; जणीयो जगवंतनो

सीलोको जलो, प्रणमे पंचोली जोरावर मलो.
 ॥ ५५ ॥ समत अठारे वरस ईकावनो, पोह वद
 दसमीरो मोटो ठे दीनो; वाचे जणे ने सीषे
 सदाई, ज्यांरे उणार तनही रहे कांई. सुधसंपत
 दायक नायक सांमी, चवदे राजरो अंतरजामी.
 ॥५६॥ ईती पार्श्वनाथजीरो शिलोको सपूर्णम्: ॥



॥ नं० ॥ ७४ ॥

॥ अथ चंद्रा प्रचुनो सिलोको लीपंते ॥ दोहा ॥
 सरसत सांमण वीनवूँ, लागु सतगरु पाय;
 दद अक्षर दूरे करो, सीवरुं शारदमांय. ॥ १ ॥
 इष्टदेव नीत सीमरीये, मनवंठीत दातार; अलीय
 वीधन दूरे हरो, संपती राषणसार ॥ २ ॥

॥ सिलोको ॥

सरस्वती माता सारदा राणी, समरु जीन-
 सासन वरदायंक वाणी, माहासेन राजाघरे

लीषमादे राणी, कूपे उपना ठे अर्बधनाणी. ॥१॥
 चवदे सुपनामे रात वीहांणी, पेला सुपनामे
 गयवर मदनीको; जाणे दीसे ऐरापते सरीपो,
 पूजा सुपनामे वृषज्ञ गुजंतो. ॥ २ ॥ जाणे दीसे
 हो अमर धुजंतो, तीजा सुपनामे सिंह साडुलो;
 गुंजे प्रध्वीपर दीसे ए दूलो, चोथा सुपनामे
 लक्ष्मी देवंता. ॥३॥ सोले सीणगार दीसे दीपंता,
 पांचमे पुष्प फूलांरी माला; ठटे चंद्रमा दीसे
 उजीयाला, सातमे सुपनेका सवरापुतो. ॥ ४ ॥
 आठमे धजा दीसेले कंतो, नवमे तो कलस रत्नासु
 जरीयो, दसमे सरोवर पीरसुं नरीयो, पढम
 सरोवर इग्यारमे जाणुं. ॥५॥ देव वीभान चारमे
 वषाणुं, तेरमे सुपने रतनर जलकंता, चवदमे अ-
 गनी धुमनी कंता, चवदे सुपना रांणी लीषमादे
 पाया. ॥६॥ माहासेन राजाजी घर मोतिये वधाया,
 जनम्या परमेश्वर चंदा प्रभु सांभी; तीन चुवनरा

अंतरजांमी, चंदपुरीमे हूवो उठरगो. ॥ ७ ॥ इंद्र
 इंद्राणो उठव मनरंगो, ज्ञरजोवन मांहे संजम
 लीनो; उपदेस ज्ञवीक जीवांने दीनो, कर्मपपावी
 मुक्त सीधाया. ॥ ८ ॥ ज्यांरातो गुण सुरनर गाया,
 देशमुरधरमें चोराई जाणुं, सेरजांविरी घणो वषाणुं;
 पदम लंठन चंदाप्रजु देवो. ॥ ९ ॥ ज्यां रीतो
 कीजे नीतप्रते सेवो, ईण अबसर मुनीवर चोमासे
 आया; सुत्र सिद्धांत घणा सुंणयाया, पुज पुनम-
 चंदजीरा चेला दयालो ॥ १० ॥ मांटा मुनी
 पटजीवां प्रतीयालो, चेला हेमराजजी घणा सुप-
 कारी; दोनु संतारी सोजा अतज्ञारी, तपस्यामे
 वंकागुणरा ज्ञरारो. ॥ ११ ॥ देव उपदेस सुणे
 नरनारो, दयापो साने पस्कीकमणां ज्ञारी, कीनी
 पचरंगी नर ने नारी, श्रावण सीरदारो गुण नीत
 गावे. ॥ १२ ॥ वे कर जोस्तीने शीश नमावे,
 संमंत जगणीसे तेसटे वरसे, श्रावण सुद पुनम

गायो मनहरणे. ॥ १३ ॥ ईती संपुर्णम ॥



॥ नं० ॥

॥ अथ पुनमचंदजी महाराजको सीलोको ॥

सासन नायक वीरजीएंदो, कीरपा कर
 टालो नवफंदो; वे कर जोकीने शीश नमाउ, पुज
 आचारजज्यारा गुण नीत गाउं. ॥१॥ पुजपुनमरो
 केसुं सीलोको, चीत, दर्श सुणजो नवीयण लोको
 दीजो सुद अद्दरबुद्ध सवाई, जवरो आणंद
 मारा दीलमाई. ॥ २ ॥ मुरधर देशमे सेर ठे
 नारी, जवरो जालंधर सोहे हीतकारी; राय गांधी
 तो तिणमाहे रेता, चाले सुध मारग नीजकुल
 वेहता. ॥ ३ ॥ जीणकुलमांहे जन्मज लीनो,
 सुधवेदाने सुजमोर्त दीनो; उमजी घरमे फुलांटे
 नारी, ज्यांरी कूपमे लीनो अवंतागी. ॥४॥ संवत

अठारेवाणुवेमाया, जाणे साण्यात सुरगथीचव.
 आया; मीगसर सुदनवमी सनीसरवार, जनम
 ओठवकीनो अपार. ॥५॥ चंदकला जीम दीनर
 वादे, पुर्वला पुन तो कीदाठे जादे, वालवृमचारी
 प्रगटीया ठे पुरा, नाम पुनमचद पुन्य अकूरा. ॥६॥
 आंदू समुदाय अमर मोटी, परचो जमायो मुरधर
 नवकोटी, ज्यांसु लंगाये पचमे पाट, झानी पदा-
 रीया जालंधर थाट ॥७॥ श्रावक श्रावीका वंदन
 आया, हरक आणंद मनमांहे पाया; मुनवर केवे
 ससार काचो, चेतो ज्वी जीवां ईणमे मत राचो.
 ॥ ८ ॥ सुणीयो उपदेश उमजीरे पुत, संजमले-
 वणरो माड्यो ठे सुतो, मुनीवर जापेथाने सुप
 थावे, जीमकरो प्राणी अवसर नही आवे. ॥९॥
 मातपीता तो परज्व सीधाया, ठोटी उमरमे
 संजम चीतलाया; सजम तो गामज्व राणीलीनो;
 जगणीसे ठकोने मीगसररो महीनो. ॥१०॥ सुद

नवमीने शनिसर आयो, दिक्षारो मोठव जवरो
 मंरायो; वकी दीप्या तो वालारे माही, दीवीजव
 रांणी गामसुं आई. ॥ ११ ॥ माहावृत मोटा पाले
 ठे पांच, कीणसुं न रापे तांणाने पांच; पटकाय
 जीवांरा मुंनीसर पीर, ठोड्यो संसार वका सुर-
 वीर. ॥ १२ ॥ जणीया गुणीयाने पिकत ग्यांनी,
 गुरु जगवंतरी अग्या मनमानी; संवत उगणीसे
 ती सारी साल, ग्यांन मुनीसरकर गया काल. ॥
 ॥ १३ ॥ ज्यारे पाट वीराज्या मुनिद, दिनर दीपे
 तारामे चंद; वदीयो परीवार पुनम ज्ञारी, दर्श-
 नने आवे सारा नरनारी. गांम नगर मुंनी पदारे.
 थापे समकात मीथ्याती हारे. ॥ १४ ॥ ठत्तीपट
 दोष टाले मुंनीराज, तारण तीरण काष्टरी ज्याज;
 सुरत हद प्यारी मोवनगारी, बीजकला जीम
 चंदरी ज्ञारी ॥ १५ ॥ चत्रमासातो ठीयाली पट
 कीना, पाषकीयांने तो मारग लीना; संवत उग-

णीसे पचासामाई, मीगसरमे पदवी पुजरी पाई.
 ॥ १६ ॥ संगच्यारामे आनंद थायो, पदवीरो
 मोठव जवरो फेलायो; चेला तो ज्यारे पांच पर-
 वीण, दीनदीन दीपे कोई नही हीण. ॥ १७ ॥
 पुज पदारे जीणरसेर, ज्वीयण लोकारे उपर मेर;
 पुज अमरसुं वेठा घटपाट, पोता परु पोतारा
 वाट. ॥ १८ ॥ दीन दीन ज्यांरी पुन्याई लागे,
 जोगी मीश्याती दूरांसु जागे, कोई नही करता
 पुजसुं चरचा, जीनमत परमतमे जमाया परचा.
 ॥ १९ ॥ ठेळो चोमासो जालोरहरके, कीनो उग-
 णीसे वावन वर्षे, सुद पुनम ने आजघोपार,
 ज्ञाद्रवे पहोता सुर अवतार. ॥२०॥ जवरी वेकूटी
 मांहे वीराज्या, चवण मोठवमे वाजा अती वा-
 ज्या; चनण पीपलसुं दीरायोदागो; वेकुंटी उपर
 तुरो नही लागो. ॥ २१ ॥ इचर जपाया श्रावग
 सारा, तुरोले वणने धोरुया न्यारा; लागीवे कुटी

पचरंग वणायो, आठाबुचरो परचो वतायो. ॥
 ॥ २२ ॥ तुर्ततुरो ठीकाणे लागो, जाणे कीणटीस
 पहोतो ठे आगो; झणवीध परचो आरोगो माथे,
 देण्यो श्रावगईचरजपाते. ॥ २३ ॥ पुजपटारे देव
 अवतार, जीणमे मत जाणो संकालीगार; उत्तमपुर
 सांरा ज्ञारी गुण मोटा, गावे जीणरे घर नही आवे
 तोटा. ॥ २४ ॥ पुजप्रतापी गेश गुण दरीया,
 जेठी बुद्धमारी वरणन करीया; ऊगणीसे वासट
 गढसी वांणांमांझ, चवढंस ज्ञादरवे जोरु वणाई.
 ॥ २५ ॥ सरसती मातारी मुजपर मेर, कीदो
 शिलोको आई मन लेर; अंदारोपषने शनीसर
 वार, वे कर जोरुने केवे अणगार. ॥ २६ ॥

॥ ईती संपूर्णम ॥



॥ नं० ॥ ७६ ॥ थारो नेणारो पाणी लागणो
मारुजी. ए राग. ॥

॥ अथ पुजजी पुनमचंदजीरा गुण लिषते ॥

सुखो पुज्य मारी अरदास, हुकमी शिष-
राजरो; गुराजी. मे दर्सन दीठो नथण, जलोदीन
आजरो गुराजी ॥१॥ थे घणा साद सादवीयांरां
वृंद, के घणांने वारीयाः गु० देसंजमरो साज, घणांने
तारीया. ॥ गु० २ ॥ जीन मारगरा थंन, सोजा
सिधवृदमेः गु० सितलथारो सजाव, सदाही आ-
णंदमे. ॥ गु० ३ ॥ प्रणमे थारा पाय, देवी ने
देवताः गु० च्यारुई सीघ नितमेव, चरण थारा
सेवता. ॥ गु० ४ ॥ थे सुत्र अर्थरा जाण, जण्याथे
जुगतराः थारी कीरीयामे कूमीयन काय, कामी
एक मुगतरा. ॥गु० ५॥ कंठ थारा अदञ्जुत, कला
जाणो कोरणीः गु० ढाल सवैया सिलोक, मीठी
थारी बोलणी. ॥ गु०६ ॥ थारो लागे वलज व्या-

ख्यान, सरस स्वादमेः गु० सुंणतां लागे ज्वजीव,
 न पमे परमादमेः ॥ गु० ७ ॥ आप पंकीत महा
 परवीण, गीतारत.गणपतीःगु० सारण वारण कीध;
 सांधारां ठत्रपत्री. ॥ गु० ८ ॥ थे चरचा करणने
 त्यार, वठां जांणे वारणेः गु० कोई जीत न सके
 आय, वारी जाउं वारणे. ॥गु० ए॥ आप सिंघा-
 सणरयाफाब, पुरुषदारा थाटमेः गु० थे संच्या
 पूर्व पुन्य, सदाघे घाटमे. ॥गु०१०॥ थे तप जपमे
 सावधान, मगन थे ज्ञानमेः गु० थे धर्मवतायो
 सुध, दयाने दांनमे. ॥ गु० ११ ॥ कीयो जीनमा-
 र्गनो उद्योत, नगरपुर गाममेः गु० थारी कीरती
 देसविदेस, व्यांपी ठामठाममे. ॥ गु०१२ ॥ चतु-
 राईने चूप, घणी थारा हाथमेः गु० थारे मुके
 घणो मीश्यात, रुको रस वातमे. ॥ गु० १३ ॥
 थे देवो घणांने साज, धर्मबुधी आंणनेः गु० देवो
 वस्तर पातर जाच, अनजद आंणने. ॥ गु० १४ ॥

थे षम समदमने धीर, जीताथे कांसमेः गु० पठारु
 कीयोपे माल, लोन्न गुलामने. ॥ गु० १५ ॥ पदवी
 आर्चायपाय, गुण ठत्रीसमेः गु० थारे सगलांसुं
 समज्ञाव, नही राग रीसमे. ॥ डु० १६ ॥ जंबुदी-
 परा न्तर्तके, मरुधर देसमेः गु० जालोरसहेर
 सुवास, दीसे गेघाटमे. ॥ गु० १७ ॥ राय गांधीतीण
 मांय, वसे धनरा धणीः गु० उमजी पीतारो नाम,
 कूष फुलांदे तणी. ॥ गु० १८ ॥ थारा मोटा ज्ञाग
 ग्यांनगरु ज्ञेटीयाः गु० मारी पावन हुई देह, जव
 रडुपमेटीया. ॥ गु० १९ ॥ मोटा न लोपे कार,
 मरजादा पाटरीः गु० प्रह उठी प्रज्ञात, मालाथारा
 जापरी. ॥ गु० २० ॥ पुगा आणंदपुर, मनवंठीत
 मीलीः गु० कीवी गुरांरी अस्तुत, डुपडुरे टली.
 ॥ गु० २१ ॥ मांसुं मोटो कीयो उपगार, अंतर नेण
 श्रेदीयाः गु० मारा जवजवना डुप ज्ञांज, मुगत
 गांमी कीयो. ॥ गु० २२ ॥ थे मोटा मीलीया आप,

पुन्याईं पुर्व तणी, गु० थे दीयां मारे माथे हाथ;
 पुन्याईं मारी घणी. ॥ गु० २३ ॥ वीनतरी ईण ज्ञांत,
 करीमांन मोरुने: गु० वीनवे शिषरालचंद, वेकर
 जोरुने. ॥ गु० २४ ॥ गांस कोटरीमे जोरु, कीधी
 चोमासमे: गु० संवत उगणीसे वावन हुवो मन
 हुलासमे. ॥ गु० २५ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ७७ ॥

॥ मोटी जगमे मोहणी ॥ ए राग ठे. ॥

दयालचंदजी मुनी दीपता, कांई दीठां हो
 मन आणद थाय; सुष संपत लीला लहे, कांई
 ज्ञवश्ना हो पातीक जाय. ॥ १ ॥ सेरमजल अती
 सोजता, कांई मुताहो बालचंदजी आप; ज्यारे
 सुपलीनी ज्ञारज्या, कीसनादे होवे दीलरास्याप.
 ॥ द० २ ॥ ज्यारे घरकवरजी

हरष्यो हो सारो परीवार; कुटंव सहु जेलो हुवो,
 नाम थाप्यो हो रघूनाथ कूमार. ॥ द० ३ ॥ वीज-
 चंद जीम दीनश् वधे, कांई दीसे हो जाणे देवकु-
 वार;वर्स सातमेजद हुवा,सुन्न लषण हो चोपा श्री-
 कार. ॥ द० ४ ॥ पूजजी माहाराज पदारीया, कांई
 नामे हो पुनमराचंद, पंचमाहावृत पालता, सांमी
 काटे हो कर्मारा फंद, ॥ द० ५ ॥ दयालचंदजी
 सजम लीयो, कांई पाले हो पंचमाहावृतसार; वा-
 वीस परीसाजीतने, मुनी लेवे हो निरदोक्षण
 आहार. ॥ द ६ ॥ आर ज्यांजीपदारीया, कांईरी
 धुजीहो नामे महाराज; कीसनांजी सजम लीयो,
 शती पाले हो धर्मरी ज्याज. ॥द०७॥ सुपे समाधे
 वीचरे, कांई चेलाहो हेमराजजी साथ; देवे रुमी
 देसना, मुनी ज्ञापे हो सुत्रारी वात. ॥ द० ८ ॥
 ज्ञान गुणे कर दीपता, कांई निर्मल हो गगारो
 नीर; दर्सन दीठां डुप टले, मे दीठाहो ठकायना

पीरा॥द०ण॥ सीरदारमल गुण गावीया,कांईसेर हो
 ज्ञावरी मजार;सगला साडुजीने वंधणा, मे नमण
 करसुं हो सो सो वार. ॥ द० १० ॥ उगणीसे साल
 चोसटे, कांई मासजहो ज्ञाड्रवो जाण; सुदपप
 दीनसी तीजरो, गुण गायाहो मन हुसज आण. ॥
 ॥ द० ११ ॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ नं० ७८ ॥

श्री पार्श्वनाथ महाराज राजपे मणीधर ठत्र
 चांवर ढोले, सुरनर सारा कीरे सेवना; अंगपर
 तुज केसर घोले. :टेश०:वणारसी नगरी धर्मपुरीहे,
 अश्वसेन राजद ज्ञारी; सोज्ञा कर रया सारा
 देशमे, वामांदे जीज्यांरे नारी. देवलोकसुं देवता
 चवकर, रांणीरे कुषे अवतारी; पोस मास
 वदपष दसमने, जनम लीयोहे सुषकारी. ॥डु०॥

उठव करवा कारणे, आया इंद्र महाराज, सुरनर
 सहू उठव करे, सारे मनोरथ काज; सारे मनोरत
 काज, एरापत इणपरही बोले ॥श्री०१॥ कुंवर
 वरुाहे सोजामानमे, सवके मन हूसज आवे;
 नगारांरी ठोर पने हे, घरघरमे मंगल गावे.
 कवर जयाहे वरस तीसमे, प्रजावतीने परणावे;
 मोज करे मेलके मांही, दान पुन्य नित दीव-
 रावे. ॥ दु० ॥ एकदीन कोतक देषीयो, वस्ती
 सारी मांय; कमठ जोगीने पूजवा, लोक साराइ
 जाय, कवरजी ईणपरही बोले. ॥श्री० २॥ कव-
 रजी कोतक देषणा सारु, कमठ जोगीपे आया;
 ग्यांनवीचारी देषे कवरजी: नागनागणी जले
 काया. एसे देषके बोले कवरजी कमठ जोगीने
 वतलाया, एसे तपस्या करोवे जोगी, हिंस्या
 धर्म कुण वतलाया. ॥ दु० ॥ पाती तरत बुला-
 यके, काष्ट दीयो चीराय; नागनागणी दो जणा

ज्या जलवलती काय, पंचपद कांनपे बोले ॥ श्री० ३ ॥
 मंत्रनोकार सुणीयो कानपे, धरणीधर हुआ
 राजा; अपकीरततो हुई कमठकी, जीततणा वाज्या
 वाजा; पारस कवर वेराग आणके, ठोरु दीया
 घरका काजा; ऋवी जीवांने देवे देसना, तीर्थ-
 कर हुवा माहाराज. ॥ दू० ॥ कमठमरी हुवो
 देवता, मेघमाली तिहां नाम; वेरची तायों पा-
 ठलो; आयो वन उध्यांन, जोर अवआपरोतोले.
 ॥ श्री० ४ ॥ मुसलधार वर्स रयो पांणी, गाज
 बीजरा धूंकांरा; नाक चरोवर आयो पाणी,
 नाथनीरंजन धीरपना; ज्ञान देकर बोले इंद्र,
 धावोनी धरणेंद्र प्यारा. सहेंश्र फणाको ठत्र
 करेने, सीटादीवीजलकी धारा ॥ दू० ॥ श्रावन सुद
 पांचम दीने; प्रभु पहुंता नीरवाण, सो वरसनो
 आजपो; निलोवर्ण वपांण, नमण कर सीरदारो
 बोले. ॥ श्री० ५ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ॥ ७९ ॥ ॥ हिंमानी राग ॥

सगत करल्लेरे: साडूकी समगत सुद्धी आवेरे:
 सं: टेरे: ठाणायंगसूत्रमे देपो, च्यार तीरथ कया
 जीनवररे; पांचमो तीरत नही कह्यो, क्युं मिथ्या
 ज्ञाषोरे. ॥ सं० १ ॥ तिहो तरवोलरो फलकयो,
 श्रीजत्राध्येनजीमे देपोरे; पुजाफल श्रीवीरजिने-
 सर, क्युं नही ज्ञाष्योरे. ॥ सं० २ ॥ तिर्थंकर
 प्रतीमाने पुजी, कुंण मोक्ष गया वतलावोरे;
 सजमपाली सीध हूवा, ज्यांरा शास्त्र सापीरे.
 ॥ सं० ३ ॥ गुरु हमारा रत्नरीषजी, दया धर्म
 दील राच्योरे; मंदसोरमे कीयो चोमासो, साल
 गुण साठेरे. ॥ सं० ४ ॥ ईती संपुर्णम्: ॥



॥ नं० ॥ ८० ॥

गजसुषमाल देवकीनंदन: कृस्न तणा ज्ञाई;
 लारुकोरुकरने हूलराई, आसा पुरे माई. ॥१॥

करेजा कूमी नही काई, त्याग दीयो संसार
 समंदर उदे जली आईः ॥टेरः॥ नेमतणो आ-
 गम सांजलने, वंदन चढ्यो जाईः; सोमासुंदर
 रूप अनोपम, देपी दील आई. ॥ क०२ ॥ करी
 सगाईं मेल अंते वर, जीनवंदन जाईः; वाणी
 सुणने ज्ञीज गया तव, चारीत्र चीतलाई. ॥
 ॥ क० ३ ॥ तात मात बंधवने पुठी, समकीतसे
 ठाईः; जरजोवनमे सोजा सुंदर, ठीनमे ठीट-
 काई ॥ क० ४ ॥ जादव कृस्न गोदले वेठा,
 सुणो बलज जाईः; तीन पंरुरो राज जोगवो;
 आस पूरो माई. ॥ क० ५ ॥ कयो मान सिंघा-
 सण वेठा, कहे कृस्न जाईः; चाय हूवे जो कीणी
 वातरी, मुजदो फुरमाई. ॥ क० ६ ॥ तीन लाष
 सोनैया लावो, श्री जंकारमांही, दोय लापना
 जंगा पातरा, एक लाष नाई. ॥ क०७ ॥ मोठव
 कीनो कृस्न नरेसर, साथे थई माई; जायसुं

पीया नेमजीणंदने, धनर मात्राई. ॥ क० ८ ॥
 कहे देवकी सुणरे जाया, जल नेणो वरसाई;
 मने ठोरुने ओरमावनी, मत कीजे ज्ञाई. ॥
 ॥ क० ९ ॥ ईसी सीषामण देई देवकी, फीर
 पाठी आई; सजम लेईने कहे मुंनीवर, गुरुवंदे
 पाई. ॥ क० १० ॥ उपरवाकारी सेरी मुजने, दीजे
 फुरमाई; कर्म तोरुने जाउं मोक्षमे, जे जनही
 काई ॥ क० ११ ॥ त्रिदु पुरुमा कहे मुनीसर,
 तपते लोठाई; लेई अग्या कावसग कीनो, मसां-
 णजो मजाई. ॥ क० १२ ॥ ज्ञान् घोरेपर चढ्या
 रूपेसर, तनमन हूलसाई, कर केसरीया उर
 दीया मुनी, कर्मकटक माई ॥ क० १३ ॥ एक
 पूदगल उपर नीजर रावने, धीरज मन लाई;
 चीत न जाणदे ओर ठीकाणे, ध्यानसु कल
 ध्याई ॥ क० १४ ॥ सोमल सुसरो देष कोप्यो,
 नीली माटी लाई; पाल बांधने पीरा धरीयां,

दया दील नाई. ॥ क० १५ ॥ पीचमी नीपरेष
 दधदश, सरीर वेदम थाई; नाके सल नही घाट्यो
 मुनीवर, परम रस पाई. ॥ क० १६ ॥ केवल
 लेई मुक्त वीराज्या, घर ज्ञातो पाई; रीष चो-
 तमल कहे मुनीवरने, नित सिवरो ज्ञाई. ॥
 ॥ क० १७ ॥ तरुके उठ श्रीनेमजीणंदने, चाट्यो
 कृस्त ज्ञाई; वीचमे जाता टेष मोकरो, दया
 दील आई. ॥ क० १८ ॥ इंटरास एकदले जासी,
 जरा जीरण थाई; गज वेठांले इंट एकीकी, मेली
 घरमाई. ॥ क० १९ ॥ जाय वंदे श्रीनेमजीणंदने,
 न देण्या नीज ज्ञाई; किहों मुज बंधव कहे नेमी-
 सर, मुक्तगढ माई. ॥ क० २० ॥ कालशमे कारज
 सीध, कीम कीधो मुज ज्ञाई; जीम मोकरने
 साज दीधो, तीमही तुंम ज्ञाई. ॥ क० २१ ॥
 समत अठारे वर्स अठावने, श्रावण मास ज्ञाई:
 वद सातम दीन नगरजोधाणे: जोरु जुगत

गाईः ॥ क० २२ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ॥ ८१ ॥

॥ दोहा ॥

दसदांन ए चालीयाः सुत्रगाणायंगमायः
 सावधानं थई सांजलोः सहू कोई चीत लगाय.
 ॥ १ ॥ देवणरो नामदांन हेः जुटी मत करा
 तांणः ओलषो सुध जावसुं जीनवर वचन ग्र-
 मांणः ॥२॥ धर्मदांन प्रसससीः अधर्म देणो
 निषेदः आठमे मुनज जे करेः ज्यारे लागे मुगत
 जमेद. ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥जीवन मोराहो नाथ वीहूणी सु करु ए राग ठे॥
 अणुकंपा दान जाणीये, झूपीया देषे वहू
 जीवः जवक जीनहो; वेढनी कर्मना पीकीया,
 करता देषेरी वहो. ॥ ज० १ ॥ दशदान जीन-
 वर कया. ॥टेर०॥ जुपत्रपानो पीकीयो,

काया जावे ज्ञाग. ॥ ज्ञ० ॥ हीण दीन ज्ञापे
 घणो, कहो कोई पुनवंतजी वहो. ॥ ज्ञ० द० २॥
 दूषीया जीवने देपने, अणुकंपा मन लाय. ज्ञ०
 जीवाजीव जांणे आपसारपा, अणुकंपा आण
 ठोकाय. ॥ ज्ञ० द० ३ ॥ धन तणी मुरठा घटी,
 जददे रीजे दान. ज्ञ० जीव दया मन उपजे,
 जदष रचे धनधान. ॥ ज्ञ० द० ४ ॥ मोह अनु-
 कंपारो नाम लेई, दया देवे उथाप. ज्ञ० सुत्रमे
 नाम चाल्यो नही, बोले उघासो पाप. ॥ ज्ञ०
 द० ५ ॥ संग्रह दान दूजो कयो, जीव करे
 ज्ञायने तोवा. ज्ञ० वंदीवान ठोकायदे, परता
 देपेरावा. ॥ ज्ञ० द० ६ ॥ सीःतावकेने वेसाणने,
 देवे घणेरी मार. ज्ञ० पंचमीलाय ठोकायदे,
 करले जणांरी सार. ॥ ज्ञ० द० ७ ॥ मोह घटी
 ममता मीटायने, देवे जीव ठोकाय. ज्ञ० धनने
 ईश्वर जाणने; परचे ने देवे चीतलाय. ॥ ज्ञ० द० ८ ॥

ज्ञयदांन तीजो कयो, आपग्र गोचर देवेवताय.
 ज० दांन देवे तीणने वीहतो, जाणे मारी कष्ट
 पीमा टलजाय. ॥ ज० द० ए॥ कालमीती दांन
 चोतो कयो, लोकांरी राषे कांण. ज० ड्रवष
 रचेद्वारे घणो, मां सररो करे मरुण. ॥ ज०
 द० १०॥ तीयो वारीयो करे, सराध करीने जीमाय.
 ज० वरसी ठमासी करतां थकां, ड्रवष रचतां
 दीन जाय ॥ ज० द० ११॥ लज्यादांनज पांचमो;
 वेठो लोकां मांय. ज० दान देवे ठे लाजतो,
 कोई सांगे ज्ञीप्यारी आय. ॥ ज० द० १२ ॥
 परणी जे ज्ञांणेजे ने ज्ञांणेजी, तीणरो मुसालो
 करावे ज० पर्ईसा परचे लाजतो, वाजंत्रे वीरो
 वधावे ॥ ज० द० १३ ॥ गर्जदान ठठो कयो,
 मनमे राषे अज्ञीमान. ज० चारण ज्ञाट ज्ञोजग
 वली, गर्व करी देवे दान. ॥ ज० द० १४॥ अधर्म
 दान ठे सातमो. वेस्यादीकनो जाण ज० कोड

देवे धर्म जाणने, हूवे समकीतनी हाण. ॥ ज्ञ०
 द० १५ ॥ स्वांन मंजारी वाजरी, ज्नील थोरीरी
 जात. ज्ञ० जांणे मारे काम आवसी, योकरसी
 जीवांरी घात. ॥ ज्ञ० द० १६ ॥ हिसक जीवांने
 पोपतां, अतीचार वले लागे. ज्ञ० धर्मजाण नही
 पोपणा, जीणरा करुवा फल लागे. ॥ ज्ञ० द०
 १७ ॥ पढमा धारी श्रावग ज्ञणी, अधर्मरीपांतमे
 घाले. ज्ञ० ज्ञगवंत च्यार तीर्थ कया, मुर्ष पोटी
 श्रद्धामाहे राषे. ॥ ज्ञ० द० १८ ॥ धर्मदांन ठे
 आंठमे, देवे सुपातर जाण. ज्ञ० आठ कर्मने
 पय करी, जाय पोचे नीरवाण. ॥ ज्ञ० द० १९ ॥
 पंचमाहावृत पालता, मोटा गुणांरी पांन. ज्ञ०
 सुमत गुपत ज्ञणी, पाले पांच आचार. ॥ ज्ञ०
 द० २० ॥ चावीस परीसा जीपता, मोटा गुणांरी
 पांन. ज्ञ० निरलोत्ती नीरलालची, ज्यांने अट-
 लक दांन. ॥ ज्ञ० द० २१ ॥ असांणपांण षादमने

सादमे; च्यार आहारनी जात. ज्ञ० वल्लपात्र
 कंवलपाय पुठणो, ज्यांने उलट दान दीजे जर
 घाथो. ॥ ज्ञ०दा०२२ ॥ आणंदसरी पाउत्मकया,
 जीनमारगरा जाण. ज्ञ० ज्यांने दीयां पाप कहे,
 कूमी करे पांचांताण ॥ज्ञ०द०२३॥ करती दान
 नवमो कयो, जसमे मारे कांम. ज्ञ० मुकलावोने
 पेरावणी, ईम परचे संसारमे दांम. ॥ज्ञ०द०२४॥
 कथंती दान दसमो कयो, उजमणो करावे;
 हांती आंमी सांमी देवे, वातां घणी वणावे.
 ॥ ज्ञ० द० २५ ॥ ईसका ज्ञाव जीनवर कया,
 पूनवतरे आवेदाय. ज्ञ० श्रावग गुंमानचद ईम
 कहे, सुणने पोटी श्रद्धमोसराय. ॥ज्ञ०द. २६॥
 संवत अठारे चीहूंतरे: सेरपीपाक मजार: ज्ञः
 देवगरु प्रसादथी: पांमी समकीतसार. ॥ ज्ञ०
 द० २७ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं. ॥ ८२ ॥

॥ पुजजी पधारो हो नगरी हमतणी ए राग. ॥

श्रीजीनवाणी होई मृतसारसीः मीठी साकर
 दापहोः चतुरनरः सुणने सरध्यां हो पातीक
 परहरे; हूवे शिवपुररी अजीलाप हो. ॥च०१॥
 गरव न कीजेहो कीणही वातरो, गर्जकीया
 गुण जायहोः च० झांनी ज्ञाप्याहो आठ प्रका-
 रना; ठाणायंगरे मायहो. ॥ च० ग० १ ॥ पले
 वोले हो मद करे जातनो, तेतो माता जाण
 हो. च० सरने उपजे हो ज्ञीष्टारी पांनमे, चूर-
 ण्यां लटारी पांन हो. ॥ च०ग०३ ॥ इंझीहीणी
 हो हूवे जीवरे, पांच इंझी देषाय हो. च० जव
 शमांहे हो जटके दुष लहेः सुष नही पामे कोय
 हो. ॥च०ग० ४ ॥ कूलमे वाप तणो कोई मद
 करेः तो तीणमे उपजे हेलहो. च० बुकस हूवे
 हो मुरप जीवका, तीणरा मायवापमे जेल हो.

॥ च० ग० ५ ॥ बलरो मद कीयां निरमल होवेः
 तीको तृणो न सके तोरुहोः च० माषी माठरने
 पतंगीयाः फीरतो फीरे गोरश हो. ॥ च० ग० ६ ॥
 रुपतणो कोई गर्वज क्रीयां थकां, मरउटगदारी
 जात होः च० चुंचुं करतो गलीयांमे फीरेः ठेमे
 तो वावे लातहो ॥ च० ग० ७ ॥ तप जपरो
 कोई मुर्ष मद करेः मांसरीपो नही कोय होः
 च० वोकरो हूवेहो वोवो कर रयो मनपजनम
 देषोयहो. ॥ च० ग० ८ ॥ लाज कमावण लावण
 मद करेः मारे तुटी अंतराय हो. च० तेतो मरने
 हूवे कूतरोः घरश फीरतो टुकका पाय हो. ॥
 ॥ च० ग० ९ ॥ ज्ञान ज्ञण्यारो मनसुं मद करेः
 वचन सुधुजावे होटहोः च० तोपसु मुष त्रीजंच
 सारपो, रहे जनम लगे ठोट हो ॥ च० ग० १० ॥
 परीवार ठकूराईनो मद आचरेः कहे मारा मोटा
 जाग हो च० आवे जावेमाने वांदे घणा, तो

मर हूवे सर्पने काग हो. ॥ च० ग० ११ ॥ ईम
जांणीने होमदमत आढरो, जो चावो कूसलने
पेमहो: च० रावण पदमोतर जीम दूपल हे:
परनारीनो वली एमहो: ॥ च० ग० १२ ॥ समत
अठारे हो वर्स व्होतरे; ज्ञाद्रवो ज्ञरमास हो:
च० सुत्र देपीने हो चोतमलजी कहे, पाळीपीठ
चोमास हो: ॥ च० ग० १३ ॥ ईती संपूर्णम्: ॥

॥ न० ॥ ८३ ॥

॥ कोयलपर्वत धुधलोरे लाल ॥ ए राग ॥

सुत्रज्ञ गोतीसत कपेलमेरे लाल, चाळ्या
चवदे वोळहो: ज्ञवकजीन: वीरजीणंद वतावी-
यारे लाल, सुण गांठहीयारी पोळहो. ॥ ज्ञ० १ ॥
कर्णीसारु सुप पांमीये लाल, कयो पोते जीने-
सररायहो. ज्ञ० तहत करीने सरदजोरे लाल,
संकारापो मतीकायहो. ॥ ज्ञ० क० २ ॥ ज्ञव्य

द्रव्य देव असंयतीरे लाल, करे कष्टनी तेगहो;
 जगतनो ज्वनपती हुवेरे लाल, उत्कष्टो नवग्री
 वेगहो. ॥ भ० क० ३ ॥ आराधक साधने साद-
 वीरे लाल, ज्यांरी ज्ञानी वताई वीधहो: भ०
 जगनतो देवलोकपे लगेरे लाल; उत्कष्टो स्वार्थ-
 सीद्ध हो. ॥ भ० क० ४ ॥ वृधिके साधने सादवीरे
 लाल, लगावे संजममे दोषहो: भ० जगतनो
 ज्वनपती हुवेरे लाल, उत्कष्टो पेलो देवलोक
 हो. ॥ भ० क० ५ ॥ पारसनाथजीरी साधवीरे
 लाल, ते कीम गई ईसाणहो: भ० उतरब्राधक
 ते थईरे लाल, मुलन घाली हांणहो. ॥ भ० क० ६ ॥
 ब्राधक श्रावण श्रावगारे लाल, लोपे प्रजुजरी
 आंणहो: भ० जगनतो ज्वनपती हुवेरे लाल;
 उत्कष्टो जोतपी वीमांणहो. ॥ भ० क० ७ ॥
 श्रावग नेवले श्रावगारे लाल, ते आराधक होय
 हो: भ० जगनतो देव लोकपे लगेरे लाल;

उत्कष्टो वारमे जायहो. ॥ भ०, क० ८ ॥ असं
 जती तिर्यंचकाल करीरे लाल; जगनऋवनपती
 अवदात हो: भ० उत्कष्टो वितर हुवेरे लाल
 ज्यांरी सोले जातहो. ॥भ०क०९॥ वाल तपर्स
 कालकरीरे लाल, जगन ऋवनपती जांण हो
 भ० उत्कष्टो हुवे जोतसीरे लाल, एकवचन ने
 वीजो ठांम हो. ॥ भ० क० १० ॥ कीतोलीया
 साधने साधवीरे लाल, ज्यांरो सुणजो मर्म हो:
 जगनतो ऋवनपती हुवेरे लाल, उत्कष्टो सो धर्म
 हो. ॥ भ० क० ११ ॥ शेन्यासी जात अंचर
 तणीरे लाल; जगन ऋवनपती जांणहो: भ०
 उत्कष्टो जावे पांचमेरे लाल; श्रीजीनवचन
 प्रमाणहो. ॥भ०क०१२॥ निंनवजमाली जेहवारे
 लाल; दे जीनजीरा वचनने फेठहो. भ० जगनतो
 ऋवनपती हुवेरे लाल, उत्कष्टो लंतक हेठहो.
 ॥ भ०क०१३ ॥ सनी तिर्यंचकाल करीरे लाल;

जावे ज्वनपती मजारहो. भ० उत्कण्ठो जावे
 एतलोरे लाल, जीणरो नाम संसार हो. ॥ भ०
 क० १४ ॥ गोसालामती अजोगीयारे लाल;
 क्रीया करीने राषे आस हो. भ० जगनतो ज्व-
 नपती हूवेरे लाल, उत्कण्ठो वारमे वासहो. ॥
 ज० क० १५ ॥ सयलींगी व्रामण समकतीरे
 लाल; जगन ज्वनपती जाणहो. ज० उत्कण्ठो
 नवग्री तणोरे लाल, उपरले व्रीगने वीमाणहो:
 ॥ ज० क० १६ ॥ चवदेवोळारी गीणती करीरे
 लाल, वृद्धमान जीणचंदहो. ज० सुत्रजगोतीमे
 चालीयारे लाल, ईम जापेरी पीरायचंदहो ॥
 ज० क० १७ ॥ ईती संपुर्णम्: ॥

॥ नं० ८४ ॥ ॥ हिमांती राग ॥

ओ जीव काल अनादी रुलीयो, नरज्वनीठ
 जपायोरे; मान मठरकी मोह मायामे, मुर्ष

अहीले जन्म गमायोरे: १ काया काचीरे: का०
 नवजीवां सुणजो, नगवंत न्नापी साचीरे.
 ॥का: टेरा॥ नमतश् लष चोरासीमे, दूष भुगत्या
 अती न्नारीरे; अव चेते नही मनमे मुर्ष, थासी
 स्युंगती थारीरे. ॥ का० १ ॥ ठमन मगन जोए
 सेती, सतसगत नही सुजीरे; पायो नरनव
 रतन चींतामण, सोहार गमायो मुंजीरे. ॥
 ॥ का० ३ ॥ अयुं अथीर ओसजलविंदू, जीम
 अंजलीनो पाणीरे, सुष संपती रजनीको सुपनो,
 जीम धन ईथर पीढाणीरे. ॥का०४॥ योसंसार
 असार कारमो, मतीथीर चाकर मानोरे; अरी-
 हंत न्नाप्यो अथीरज एसो, जेसो पाको पीपल
 पानोरे. ॥का० ५॥ समत अठारे वर्स ठीयंतरे,
 सुकल पपवे सापीरे; अज मेरमे जोमी जुग-
 तसुं, लालचंद ईम न्नापीरे. ॥ का० ६ ॥

॥ ईती संपुर्णम्: ॥

, ॥ नं० ८५ ॥

श्री नवकार मंत्रनो ध्यान धरो, ए राग. ॥

सतगरु उपदेस घणोही देवे, पीण जलट
धुंधुंदो लेवे; ज्ञारी कर्मो कदे नही ज्ञीजे. १

जहो तीणने सीषामण कीम दीजे: ॥टेर०॥ जीण

तीवरी ज्ञवथी तनही पाकी, तीणरे ससार घणो

वाकी, कोरु मांठ कदी नही सीजे ॥का०२॥

नेडक निंदया मांहे जन्म पोवे, वले पारका

छेद्र ठाना जोवे, उंतो ममतारे फंद पनीयो

जे. ॥ क० ३ ॥ आद अनादरा गोता पावे,

णधेठा धर्म नही पावे; सुत्रपांने नही पतीजे.

क० ४ ॥ पाप कर्मरी तही सका, तीके दया

गर्गसुं वरते वका, आरुवरमे पांच्या लीजे.

क० ५ अरुवो टेषने हीरण रुरे, वावरमांके

ठे वाव परे; ए द्रष्टंते पूजे अंग जोईजे ॥

क० ६ ॥ ज्ञारी कर्म केई नरनारी. ज्यांने

पापरी वात लागे प्यारी; धर्मरी वातसुं नही
 धीजे. ॥ क० ७ ॥ कू गुरुकू देवारो रसीयो, पांपीपुर
 मीध्यात मांहे फसीयो; रीमजीम ढेघीने रिजे.
 ॥ क० ८ ॥ लमाई वाँल करवाने ल्यारी, परनी
 चावंत लागे प्यारी; तेषरी वात कयांसुं रिजे.
 ॥ क० ९ ॥ जो नीज आंतमारो सुप चावो,
 तो नरन्नवरों लीजे लावो; ठीनश्मे आउषोढीजे.
 ॥ क० १० ॥ विरत समायक पालीजी, अनाचार
 अतीचार सहू टालीजे; कर्मकवण सहू गालीजे.
 ॥ क० ११ ॥ सावज वचन नही भाषीजे, सम-
 कीतने सेंठो राषीजे; हातपगं पुंजीने मुकीजे
 ॥ क० १२ ॥ सांज सवार पत्नीकमणो कीजे,
 हिरंदा मांहे अरीहंता नाम लीजे; पचषाण
 करी पाप धोईजे. ॥ क० १३ ॥ सांधारी सेवा
 कीजे, वळे जन्म तणो लाहो लीजे; ज्ञव समु-
 र्द्धी उधरीजे ॥ क० १४ ॥ ईती संपुर्णम्: ॥

॥ नं० ८६ ॥

कीणसुई वादवीवाद न कीजे, वली वीस
 जीणांसु वीसेषजी; नांम कहूं ज्यांरा न्यारारे
 ते सुणंजो धरं विवेकजी. ॥ १ ॥ वीस जीणांसु
 वादन कीजे, ए सतगरुनी सीपजी; चतुर हूवे
 तीके चीतमे धरजो; ठांवी करवले ठीकजी. ॥
 ॥ वी० २ ॥ पहले बोले धनवंत सेती, वाद न
 कीजे कोयजी; दीधारी तो चढेज देवल, निर-
 धन दुगरर रहे जोयजी ॥ वी० ३ ॥ वीजे बोले
 बलवंत सेती, नही वरावरीनो कांमजी, लंका-
 गढ लुटने लीधो, देषोली ठमणने रांमजी. ॥
 ॥ वी० ४ ॥ तीजे बोले बहु परिवारे, तुरत लगावे
 लंकजी; ज्यांसु जोर कीया नही जीपे, ते रावने
 करदे रंकजी. ॥ वी० ५ ॥ चौथे बोले तपसी
 सादूजी, जंगड्यां बधे जंजालजी, कोपे चढ्यो
 काढे तेजुलेस्यां, देवेकोनांमीन पनेवालजी. ॥

॥ वी० ६ ॥ पांचमे बोले गुरांसेती वाढकरे अब
नीतजी; जमालीने लीजो जोई, ए रुमी कदे
नही रीतजी. ॥ वी० ७ ॥ ठटे बोले राजासेती,
नहू तजे अलुधजी; पलक माहे करदेवे परवस,
पावे नवी मायनो दूधजी. ॥ वी० ८ ॥ सातमे
बोले नीच मुर्षसुं, वाढ कीयां पके षाधजी;
आठमे बोले क्रोधीसुं कीयां, उपजे दूष अस-
माधजी. ॥ वी० ९ ॥ नवमे बोले जुवारीसुं,
वरज्यो वाद वीशेषजी; पांचे पंक्व द्रोपदा हारी
बले नलराजा लेवो देषजी. ॥ वी० १० ॥ दसमे
बोले चोर चूगलसु, वाद कीयां पके हांणजी;
इग्यारमे बोले रोगीसेती, मत करो षांचा-
तांणजी. ॥ वी० ११ ॥ बारमे बोले अती अहंकारी,
सुं मत करो षांचसु जांणजी; तेरमे बोले जूटा
बोलो, जूटी बोले वांणजी. ॥ वी० १२ ॥ वकरां
सुं वाद न कीजे, ए थया चवदे बोलजी;

पंरमे हिंस्या धर्मिसेती, वाद कीयां घटे तोलजी.
 ॥ वी० १३ ॥ सोलमे बोले शिलवंतसुं, सतरमे
 नानो वालजी; अटारमे बोले अतबुढाथी, वाद
 कीयां बोले गालजी. ॥ वी० १४ ॥ उगणीसमे
 बोले दाने सरसुं, हीरु कदे नही होयजी; कीर-
 पण पण ज्याने कीणवीध जीते, हीये वीमासीने
 जोयजी ॥ वी० १५ ॥ वीसमे बोले झांनी सेती,
 झांनी गुण गंजीरजी; इंद्रजुंती अहंकारे चाळ्यो
 मंदगाल दीयो माहावीरजी. ॥ वी० १६ ॥ वाद
 कीयां कोई जलो न केसी, जोवोहीये वीमा-
 सजी; रूपीरायचंदजी जोरुी जुंगतसुं, मेरुते
 नगर चोमासजी. ॥ वी० १८ ॥ ईती संपुर्णम् ॥



॥ नं० ८७ ॥

मोह मीथ्यातकी निदमे जीवा, सुतोरे काल
 अनंत; जवश्मांहे जटकीयो जीवा, ते सांजल

वीरतंत. १ जीवा तुंतो ज़ोलोरे प्राणी, इमरु
 लीयो संसारः टेशः अनंतजीन हुवा केवली जीवा,
 उत्कष्टो ज्ञान अगाध; ईण जवसुं लेषो लीयो
 जीवा, तोही न कही थारी आदः ॥ जी० २ ॥
 प्रथ्वी पाणी अगनमे जीवा, चोथी वाजकाय;
 एकीकी तो कायमे जीवा, काल असंख्यातो
 जाय. ॥ जी० ३ ॥ पांचमी काय वनस्पती जीवा,
 साधारण प्रतेक; साधारणमे तुं वस्यो जीवा,
 ते वीवरो तुं देष. ॥ जी० ४ ॥ सुई अग्रनी
 गोदमे जीवा, श्रेण असंख्याती जाण; असंख्याता
 परदर कह्या जीवा, गोला असंख्य प्रमाण. ॥
 जी० ५ ॥ एकेका गोला मध्ये जीवा, असं-
 ख्याता सरीर; एक सरीरमे जीवरा जीवा,
 अनंत वताया चीर. ॥ जी० ६ ॥ ते माहथी
 जीवरा जीवा, मोक्ष जावे दग चाल, पीण
 एक सरीर षाली नहीं हुवे जीवा, नहीं हुवे

अनंते काल. ॥जी०७॥ एकश्चञ्चवे संगे जीवा,
 ञ्चव अनंता होय; वले वीसेपे तेहनाजी, जनम
 मरण तुं जोय. ॥ जी० ८ ॥ मोटा पाप करी
 तीहां जीवा, उपनो नरक मजार; ठेदन जेदन
 वेदना जीवा, ते सही नीरधार ॥ जी० ९ ॥
 जुष त्रषा सीत तापनी जीवा, रोग सोग ञ्चय
 जांण; दूष जोगवे जे नारकी जीवा, कर्म तणे
 अहीनांण. ॥ जी० १० ॥ नरग थकीनी गोठमे
 जीवा, अनत गुणो वीस्तार; अनेक पुदगल
 पुरीया जीवा, ईम ञ्चमीयो संसार. ॥जी०११॥
 पेट हजार ने पांचत्ते जीवा, ठतीस उपर धार;
 जन्म मर्ण एक महूर्तमे जीवा, करआया वहू-
 वार. ॥ जी० १२ ॥ एकड्रीसु नीकळ्यो जीवा,
 इड्रीपाई ज्ञोय, पुन्याई अनंती वधी जीवा, वाल-
 शिद्धा करे जोय. ॥जी०१३॥ ईम तेइड्री चोईड्री
 जीवा, दोयरलापजजात, दूष दीठा ससारमे

जीवा, सुणतां इचरज वात. ॥ जी० १४ ॥ जीर्ण
 वेइंझीने वधी जीवा, नाक तेइंझी जाण; आंष
 चोइंझीने वधी जीवा, कांन पचेंझी प्रमाण. ॥
 जी० १५ ॥ जलचर थलचरणे चरुजीवा, उरपर
 जुजपर लेष; सबलोनी बलाने ञषे जीवा, वेर
 मांहोमाहे देष. ॥ जी० १६ ॥ ञव ञटकंतां
 नीठसे जीवा, पाई नरनी देह; गर्जावासे दूष
 सद्याजी, कही सुणावुं तेह. ॥ जी० १७ ॥ माता
 रुधीर वीर्य पीता जीवा, प्रथम लीनो आहार;
 कूल थांणी पाणी थकी जीवा, दीनश् वलीयो
 तीवार. ॥ जी० १८ ॥ अऊठ कोरु आंवली
 जीवा, अगन वरणकर लाल; तिणसुं हीहिवे
 अठगुणी जीवा, गर्जमे वेदना ञाल. ॥ जी०
 १९ ॥ जनमतां कोरुगुणी जीवा, मरतां कोरु-
 कोरु; जनम मरणनी जगतमे जीवा, जांणो
 मोटी घोरु. ॥ जी० २० ॥ पग उंचा माथो तले

जीवा, आंषां उपर हाथ; जाल जंजाल विष्टा
 मधे जीवा, वसीयो कयो जगनाथ. ॥ जी०
 २१ ॥ ए गर्जे दुष ते सह्याजी, ठोरु रयो वरस
 वार; जीण थानक मर उपनो जीवा, वारे वरस
 वलीधार. ॥ जी० २२ ॥ देस अनार्यमे उपनो
 जीवा, इद्री हीणी थाय, आउपो उठो थयो
 जीवा, धर्म कीयो किस जाय. ॥ जी० २३ ॥
 कदा सनरज्जव पामीयो जीवा, उत्मकूल अव-
 तार; देही नीरोगीषां मने जीवा, जायज मारो
 हार. ॥ जी० २४ ॥ टग पासीगर चोरटा जीवा,
 जीवर कसाई न्यात; न उपनोने न मुवो जीवा,
 ईसी नहीं कांई बात. ॥ जी. २५ ॥ चवदेही
 राजलोकमे जीवा, जन्म मर्णरा जोरु; वालाग्र
 मात्र कठे जीवा, पाली न राषी कठे ठोरु. ॥
 जी. २६ ॥ एहीज जीव राजा हुवो जीवा, एहीज
 हुवो फकीर; एहीज जीव हाथी चढ्यो जीवा,

मस्तक आण्यां नीर. ॥ जी. २७ ॥ ईम संसार
 जमतां थका जीवा, पांमी सामग्री सार; आद-
 रने ठीटकायदे जीवा, जायज मारो हारजी.
 ॥ जी. २८ ॥ षोटा देवजसरधीया जीवा, लागो
 कुगऊने केरु; षोटो धर्मज आदरी जीवा, चीहुं-
 गती कीधा फेर. ॥ जी. २९ ॥ कूगऊ जरोसे
 जीवा, युं ररुवमीयो मुढ; जुलने जां करतो जुलरी
 रुढ, जीवहणे धर्म जांणीयो. ॥ जी. ३० ॥ कोला
 पाक रेवती कीयो जीवा, जेढ्यो जगवंत जाव;
 सीहे अणगार न वेरीयो जीवा, देशो सूत्रन्याव;
 ॥ जो. ३१ ॥ प्रथ्वी पांणी अगन वायरो जीवा,
 बीनासपतीत्रस काय; कांम धर्म हेते हणे जीवा,
 ते अवतरीया माय. ॥ जी. ३२ ॥ उंगोने वळे
 मुषपती जीवा, मेरु जीतरा लीध; क्रीया कर-
 तुत वाहरो जीवा, ऐको काज न सीद्ध. ॥
 जी. ३३ ॥ च्यार ग्यांन गमायने जीवा, नर्ग
 सातमी जाय; चवदे पुर्व जणी करी जीवा,

मीया नर्गरे माय. ॥ जी. ३४ ॥ भगवंत धर्म
 ायां पढे, जुंही न जावे फोक; कदाचीत उत्कष्टो
 श्ले जीवा, तोही अर्ध पुदगलमे मोक्ष. ॥ जी.
 ३५ ॥ सुद्धमने वाढरपणे जीवा, मीले वार्गणा
 सात, एक पुदगल परावर्तनी जीवा, जीणी
 घणी ठे वात. ॥ जी. ३६ ॥ अनंता मुगते गया
 जीवा, टाली आत्मदोष, न गया न जावसी
 जीवा, एक मुलारा जीव मोष. ॥ जी. ३७ ॥
 एहवा जाव सुणी करी जीवा, श्रद्धा आई
 नांह; जुंही आयो जुंही गयो जीवा, लप
 चोरासी माह. ॥ जी. ३८ ॥ तप जप, संजम्
 पालने जीवा, टाली आत्म दोष; जाय अर्ध
 पुदगल मधे जीवा, अनंत चोईसी मोष. ॥ जी.
 ॥ ३९ ॥ कवहीकतो नरके गयाजी, कवही कहु
 वो देव; पाप पुन्य फल जोगवी जीवा, न मीटी
 मीध्यातनी टेष. ॥ जी. ४० ॥ केई उत्तम नर

चेतीया जीवा, जांण्यो ईथर संसार; सांचो
 मारग पालने जीवा, पहूंतता मोक्ष मजार. ॥
 ॥जी. ४१॥ दांनशिल तप जावना जीवा, एहथी
 राषो प्रेम; कोरु कढ्यांण ठे तेहने जीवा, रुष
 जेमलजी कहे एम. ॥ जी. ४२ ॥ ईती संपुर्णमः ॥



॥ नं० ॥ ८८ ॥

॥ आठे लाल ए राग. ॥

विचरंता गामोगाम नेमजीनेसर सांम; आठे
 लाल, नगरी हो द्वारामती आवीयाए. ॥ १ ॥
 कृस्नादीक नरनार, सहु मीली परपदा वार;
 आः नेम वंदणने आवीयाए. ॥२॥ देवे देशना
 जीनराय, आवे सहुने दाय; आः रुषमणी पुठे
 नेमने ए. ॥ ३ ॥ पुत्रने मारे वीजोग, हुवो हुसे
 कर्मनो जोग; आः जगवंतजी मुज उपदीसोए.
 ॥ ४ ॥ पुर्व जव विरतंत, तव जापे जगवंत. आः

कीधा कर्मने बुटीयोए. ॥ ५ ॥ हुंती तुं वीप्रनी
 नार, पुर्वज्जव कोईवार; आः उपवन रमवा
 संचर्याए. ॥ ६ ॥ जोता वनह मजार, दीठो
 एक सहकार; आः मोरमी वीहांणी तीण हेठले
 ए. ॥ ७ ॥ साथे तुमारो नाथ, इंका जाड्या
 हात; आः कूकूवरणा ते थयाए. ॥ ८ ॥ नवी
 उलपे ते मोर, करवा लागी सोर; आः सो लेगमी
 नवी सेवीयाए. ॥ ९ ॥ उंको गाजे जोर, मधूरा
 बोले मोर; आः चीहुंदीस चमके दांमनीए. ॥ १० ॥
 पठे बुठो मेह, धुवणा इंका तेह, आः मोरंमी
 इंका सेवीयाए. ॥ ११ ॥ वाध्यो तीहां अंतरांय,
 ईम बोल्या जीनराय; आः सोले वर्स वीरहो
 पड्योए. ॥ १२ ॥ हस्तां वांधे कर्म, नवी ओलपे
 जीनधर्म; आः रोयां नवी बुटे प्राणीयाए. ॥ १३ ॥
 देसना सुण अजीराम, रूपमणी रांणी तांम,
 आः सुधो सजम आदर्योए. ॥ १४ ॥ थीर राषी

मनवंच कार्य, मुक्तपुरीमें जायें. आं: राजवी जे
रंगे जणैए. ॥ १५ ॥ ईती संपुर्णम् ॥



॥ नै० ॥ ॥ हिमानी ए राग. ॥

लष चोरासी मांहे जमंता, काल अनंत
गमायोरे: कोईक पुन संजोग कंगीने, दुर्लज
नरजव पायोरे. ॥ १ ॥ चेतन चेतो रे, २ ओकाल
जयंकर ऊटके लेसीरे: चे० टेर: आं रजक्षेत्र
उत्मकूल मीलीयो, देह नीरोगी पाईरे: सुध
आचारी सतगरु मीलीया, पुनमे कसर न काईरे.
॥ चे० २ ॥ नरजव रतन चिंतामण सरीपो, जो
हुवे सो कीजेरे: मुर्ष वीपीया रसके माहीने,
एलजनम मत षोवेरे. ॥ चे० ३ ॥ बालपणे लरु-
कांरे साथे, वीरथा पेल गमायोरे: तर जोवनमे
आंधो हुय गयो, त्रीया संग लपटायोरे. ॥ चे०
४ ॥ जोवन मटके कुंले गर्वमे, मनमे वीत

मगरूरी रे: देह तणे तो पेह न लागे, राषे फीटक
 सींघुरी रे. ॥ चे० ५ ॥ जोवन वीत जराऊर
 लागी, सीरपर धवला आयो रे: नेण तो दोनु
 ऊरवां लागीं, कंपण लागी कांयारे. ॥ चे० ६ ॥
 वासुदेव बलज्जेंद्र मुरारी, चक्रवती जे सुरारे:
 इंद्र नरेंद्र धरेंद्र केवावे, काल करगया सव
 पुरारे. ॥ चे० ७ ॥ काल वली केहने नही ठोमे,
 क्या राजा क्या राणारे: ठीन मांहे जीव घांटी
 पकमे, चिमी जीम सिंचाणारे. ॥ चे० ८ ॥ न्याती
 गोती सार न बुजे, सव मुत्तलवके गरजी रे:
 कोंकरीयो अवे मरवो वंठे, केरे रामसुं अरजी रे:
 ॥ चे० ९ ॥ एवी जांणीने जव प्रांणी, धर्म
 ध्यानथे कीजारे: परंजव मेथे सुप पावोला सीव
 रमणीने वरसो रे. ॥ चे० १० ॥

॥ इती संपूर्णम् ॥

॥ नं०८९ ॥

॥ राग ॥ फागणरी ए ॥

जतनांसुं तो जीतनो कोई, काम करे सोई
 सागेरे; तीन वातांमे दोस संता चोके लागेरे.
 ॥ १ ॥ सगला सुण लीजो, निरपद्धी पथ मारे
 दाय आवेरे; रीसांमत बलजो. देश: पातरांने
 पाणी जागा, नीजरो द्वेष लोनीरे; सुणजो संतां
 मनसुं, चोरी ठानी कोईनीरे. ॥ सं० २ ॥ जती
 संवेगी साडु प्राये, पातरामे पावोरे; घरवासीरे
 बोलो कांई, काम आवेरे. ॥ सं० ३ ॥ आदा
 कर्मि दोस संतां, चोके हेला पाकेरे; माललीयो
 रुचोके आंपां, लेवां पंचम आरेरे. ॥ सं० ४ ॥
 कोई ग्राममे जावे सादू, वास२मे नोलेरे; पाली
 आवे पांणी केरी, रुच रुच वोलेरे. ॥ सं० ५ ॥
 श्रावगजीने केवे नाई, धोवण ओठो आयोरे;
 गाम सारा मांहे कुंभी पीटे, नोलो नायोरे;

धोवण करदीनो, वावा पाणी धरदीजो. ॥ ६ ॥
 दूजे दीनतो ऊटके आपां, पातरा न्तर लावोरे;
 नाहक आपे जताष्यातरी, षोरु षुकावोरे, दोषण
 लागेला. ॥ नि० ७ ॥ साडुजीरी जाची पुजी,
 साडू जगा सोवरे; ज्ञानानी तो च्यार चीजां,
 सादू न लेवरे; असलीजेनका. ॥ नि०८ ॥ थान-
 कमे तो दोष सादू, परदेसी फुरमावरे; हवेलीमे
 दोशवेतो क्यु नही गावरे. वाने पुठोनी ॥ नि०
 ९ ॥ आपमे जो रेलो आवे, दीज्यो आगे ठेलीरे;
 हवेलीमे दोश लागे; सगलां पेलीरे ॥ स० १० ॥
 परना अवगुण काढो सर्ता, अपना अवगुण
 ढांकोरे, साची वातां जोगारनको, मारग वांकोरे.
 ॥ स० ११ ॥ थानक वाला बोले प्यारे, थानक
 हे नीरदोसीरे; जानन वाले सवही जाणे, आ-
 कद होसीरे. ॥ स० १२ ॥ असल फकीरी पेंचो
 न्यारो, जानन वालो जाणेरे; असल फकीरी

जदमे जांणुं, निंध्यां न आंणेरे. ॥ स० १३ ॥
 नथमलजी साहाराज सांसी, निरपही गुण
 धारीरे: चोतमल कहे ए सीमे पीण, मनमे
 धारीरे. ॥ स० १४ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ए० ॥

॥ दोहा ॥

अहो एक कलीयुग वीपे, केई तज्या सकल
 वोपार: मेहलीला मअरु फाटको, ईनहीको अधी-
 कार. ॥ १ ॥ सधन अकी नीरधन हुवे, स्वस
 पर आधीन: सनीपाल क स दसा, जये डीन
 परवीन. ॥ २ ॥

॥ सुंणीयोरे बाबु ए राग ॥

सुंणीयो नर सेणा, मतीय करोरे तुमे फाटका.
 सु: धरका रहो न घाटका. सु: देते हे सतगरु
 चाटका. सु: मत पीवो जेर जर वाटका. ॥ सु: ख्याल
 वण्याहे जाटका टेर: ॥ आरत ध्यांनरहे नीत मनमे,

धर्मध्यांन नही सुजे जो कोई मीले अलीयां गली-
 यांमे, प्रथम जावकूं बुजेरे. ॥ सु० १ ॥ अक्के
 जईया तेजी ज्ञारी, सुण जीव होय गयो राजी;
 घरमे आय कहे सुण प्यारी, करो रसोई
 ताजीरे. ॥ सु० २ ॥ कंचन माहे करायदूं वाजुं,
 करदूं पीलीज रद; खुसण सर्व ज्ञांतका ज्ञारी,
 तो जांणीजो मरदरे. ॥ सु० ३ ॥ ज्ञांगांधोटे
 तार जमावे, वजांरा विच जावे; ईतराहीमे
 मदी हाली, ठाने खुसक्यां पावेरे. ॥ सु० ४ ॥
 देष कांसनी बोले कंता, दीसो वद्वन उदामी;
 बोल्यो सटक पोलदेगेणो, नद्रीनो शत्रुं कांमी।
 ॥ सु० ५ ॥ बोली त्रीयामे पड्डेला वरग्या, चंगो
 नही ए चालो; गेणो सवना सुग काको, ईणकी
 वाटम न्हालोरे. ॥ सु० ६ ॥ नेण लाब
 बोल्यो त्रटकी, पोले ठे के नाही; च
 नही ठे गहणो, तुंकतासुं लाई.

जो मुजसे तुं करे जिंदगी, तो कूवे परुवां जाउं;
 हात जोरु बोल्यो सुण प्यारी, वेगो एह दुका-
 उंरे. ॥ सु०८ ॥ ज्युं ल्युं चली चालीयो ठाने, अब
 वोरापे आवे; डुणो ड्रव्य व्याज अरुडुणो, कांटो-
 लार लगावेरे. ॥ सु० ९ ॥ ईतने सुणी वन आयो
 अबधु, नेन पलक नही पोले; फरक आंप उनसे
 नही, चांना जो कुठ वननज पोलेरे. सु० १० ॥ लटका
 करर करे रुंकोतां, जो कूठ वात वतावे, जावे
 बजारपे ठाले आवे, गांजा चरुस पीलावेरे. ॥
 ॥ सु० ११ ॥ पलक पोल कहें सुणरे वचा, माई
 सक्ती डुकम सुनाया: ईतना फरक धरकधर मत
 रपे, फीरतो अलष जगायारे. ॥ सुं १२ ॥ जाजा
 कही शिष जवदीनी, कीनकुं नही सुणावो:
 आय सदनधन सबचूंचायो, वावो करगयो हावो
 रे. ॥ सु० १३ ॥ मुलां फकीर जोतपी जिदा, जाव
 जेरुका गावे: अकल वध सबकूंहि धोके, फीर

दालीज्र जोग नहीं जावेरे. ॥ सुं० १४ ॥ ईण
 जव एह फजीती होवे, परजवमे झूष पावे;
 तो पीण जोले नर नहीं समजे, अदर ज्ञान
 न आवेरे. ॥ सुं० १५ ॥ बयालीस जगणीसे काती,
 चवदश चोमासी वारु, नवेनगर हलुकर्मि हितकूं
 वदी ढालए वारुरे. ॥ सुं० १६ ॥ रेपराजजी कहे
 सुष चावो, तो ठीनमे इनने ठीटकावो; लाज
 हाण करमां अनुसारे, धर्मध्यांन लीवलावोरे.
 ॥ सुं० १७ ॥ ईती संपुर्णम्. ॥

॥ नं० ॥ ए१ ॥ ॥ विणजारानो ॥

विणजारारे: देपी पोला च्यार: लप चौरासी
 चोवटा: ॥ वी० १ ॥ वा: थारे वालद लपकोरु,
 कर्म क्रीयाणोथे जस्यो ॥ वी० २ वी ॥ थारे ठे
 दोय नार, एक गोरी डुजी सांवली. ॥ वी० ३
 वी० ॥ सांवलीसु वहू हेत, ईणरो जरमायो तुं

ज्ञम्यो. ॥ वी० ४ वी० ॥ गोरी ठे गुणवंत, झणरी
 सीषे चालजो. ॥ वी० ५ वी० ॥ वार२ घर छूर,
 सीरंपर बोज लीयो घणो. ॥ वी० ६ वी० ॥ सवळो
 लीजोरे सात, आगे नही हंट वाणीयो. ॥ वी०
 ७ वी० ॥ आगे ठे थारो सेठ उठे लेषो मांगसी.
 ॥ वी० ८ वी० ॥ वीणज्या वीणज अनेक, शिव-
 पुर पाटण वीण जीनही. ॥ वी० ९ वी० ॥ षासी
 सगलोई साथ, लाज टोटारो तुं धणी. ॥ वी०
 १० वी० ॥ तुं काई सुतो नचिंत, परबाल्यो तारो
 उगीयो. ॥ वी० ११ वी० ॥ आयो मुठी ज्ञीच,
 हात पसारिने जावसी. ॥ वी० १२ वी० ॥ पांकी
 हांकी देलार, गामो ज्ञरीया लाकरा. ॥ वी० १३
 वी० ॥ हांकी रहीरे मसांण, चालीने पाठा
 वल्या. ॥ वी० १४ वी० ॥ ज्ञाई वंडवरी जोरु, चाल
 ज्ञीया वील२ करे. ॥ वी० १५ वी० ॥ उज्जा मेल्या
 रेमेल, मातपीता कुरे घणा. ॥ वी० १६ वी० ॥

मोह मीध्यातनी निंद, जीवरो जाय परवस
 पड्यो. ॥ वी० १७ वी० ॥ सतगरु चोकीदार,
 हेलो देदे जगावीयो. ॥ वी० १८ वी० ॥ समय
 सुंदर कहे करजोरु, ममता मोह करोमती.
 ॥ वी० १९ वी० ॥ करजो कबु करतुत, सीवर
 मणी वेगीवरो. ॥ वी० २० वी० ॥

॥ ईती सपूर्णम् ॥



॥ नं० ॥ एश ॥

चेतन तु ध्यान आरत कीम ध्यावे, हारे
 नाहक कर्म संचावे. ॥ चे० टेरः ॥ जोजो जग-
 वंत जाव देषीया, सो सोह, इरतावे; घटे वधे
 नही रंच हूतामे, काहेकू मनरु लावे. ॥ चे० २॥
 जालत काल जो चिता अगनी, उपजत सोउ
 वीणसावे; सोकातुर वीते दीनरेणीको, धर्मध्यांन
 घट जावे. ॥ चे० ३॥ सुपसुं निंदन आतन रातन

अनजदक नही जावे; पहरेण उढण चीत
 न चाले तो, राग नरग सुहावे. ॥ चे० ४ ॥
 भुगत्यां वीन तुटे नही कवही, असुज्ज उढे
 नही आवे; सादु कार सीरोमणी सोहीसो,
 हर्षसुं कर्म चूकावे. ॥ चे० ५ ॥ सुप न र्योतो
 दुष कीम रहेसी, एजी सात गुजरावे; कर्मबंध
 जुगतणही परुसीतो आ तमने रुंकावे. ॥ चे०
 ६ ॥ प्रजु समरण अरु तपस्या करंतां, दुरुत
 रज ऊटकावे; जेष्ट कहे समतां रस पीतांतो,
 तुरतही आणंद पावे. ॥ चे० ७ ॥

॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० ॥ ८३ ॥ ॥ लावणीए ॥

ले मानव अवतार मती कर निद्वयांश
 रतन चिंतामण सार सांजल तुं वंदा, च्चारुं
 गतके वीचसे क्यो तुधांणीर पचे कूटंबके वीच

वलद ज्युं घांणी, जरा लगी तुजदार करे पिरु-
 हांणीर. आयो आ रजवेत्र उत्मकूल प्रांणी, देपी
 धन परीवार गर्जमे गंदाश. ॥ ले० १ ॥ काज
 अणी जल आयु जाय नीत वीतोश, सीरपर
 घूमे कालमुठ रयो न चितो; दीयो न सुकत
 लार जाय तु रीतोश काची देहीकाज गर्ज करे
 ईतो, नही जगमे थीर वास सुणो मती मंदाश
 ॥ ले० २ ॥ जमका लसकर पुर लग्या तुज केमे,
 श मुरप संचे पाप आप जमतेमे, मातपीता
 परीवार नही कोई नेमेर पके गुजरकी मार धार
 धम वेमे; पटक पठामे पाव आव आव जंदा २
 ॥ ले० ३ ॥ सुपना ज्युं संसार ईथर जग वासीश
 करर पोटा कांमरुले चोरासी; सुतो तुं कीण
 निंद विंद दूष पासीर मेलो मीलीयो आय
 वीपरयो जासी, तजो पराई कथ जजो जीन-
 चदाश ॥ ले० ४ ॥ करर निद्या कूरु जनम ते

षोयो२ चलता हातीदार स्वांन ज्युं रोयो; ठोरु
 गुणैको म्हेल लाजअरु जोयो२ तज मेवा पकवांन
 काग मुष षोयो; वहे सटाही षाल नीच मुष
 गिंदाश ॥ ले० ५ ॥ तजो पराई वात माताका
 जायाश कठु न लागे हात दहेपर काया; निस-
 दीन ज्ञज जीनराज हीर गुण गायाश हीये
 गुणांरी माल पेरे ज्ञाया; मानव ज्ञवको लाज
 तजो सव धंदा. ॥ ले० ६ ॥ ईती संपूर्णम्: ॥

॥ नं० ॥ ए३ ॥

॥ लावणी ॥

देषी संपत पुतं गज्ज मत कररेश सुपनासो
 संसार वार नही थीररे; बोले उंचां बोल तोल
 नही तील जररे२ चार द्विसकाक बल अर्बल तुं
 कररे, सीरपर सांधे फाल कालसु कररे: नही
 थीर वासो कोय जोय तुं सररे. ॥ दे०१ ॥ धन
 जोवन वली रुप गर्ज कीम कोजे,२ थीर नही

जगमेआत हातसुं दीजे, जोवन नंदीको नीर वहेत
 उंठीजे २ वीजलको प्रतीविंव रुप क्युं रीजे;
 वमा २ माहाराय गया सहू मररे. २॥ दे० २॥ ठपन
 क्रोरु जदू वंस हुवा एक सारी २ सोवन गढ
 सीणगार द्वार कृस्न मुरारी; कीयो कंस विधं
 सजरासिंध मारी २ नाथ्यो कालीनाग जुजावल
 ज्ञारी, उग्रसेन फंदकाट राजपद धररे २ ॥ दे० ३॥
 सोल सहेंश्र राजान सेव करजोमी २ जादव सी-
 रसी जोरु जगतमे थोमी; अज्ञीमानी माहाराय
 दीया मदमोमी २ जादव वदीया जोर वहोतर
 कोमी; सोल वर्सरा राज वेठा श्रीहररे. २॥ दे० ४॥
 कंस न दीसे कोर्य कर्ण अज्ञीमांनी २ केरव
 कुल सीणगार दुर्योधन मांनी, थीर नहीयोमां-
 नसुंनोहीये आंनी; २ हरचढ सीरपाराज नीच
 घर पांनी; पांरुव गलीयां मांन जान सहू फीररे. २
 ॥ दे० ५॥ जादव सीरपा मांन रया नही कोई, २

कंचन लंकाद्वार ठार थल होईः अरट तणी
 धरुमाल जगतमे जोईः२ तीनु वेरतुं देप गगन
 पंथ सोई, हीराचंद तज मांन मुगतपद वररे२
 ॥ दे० ६ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ए४ ॥

॥ लावणी ए ॥

सीरपर आया केस धोला अवलजरे२ थेदीयो
 जमारो पोय प्रभु तुं नजरेः लप चोरांसी मांय
 सवे फ्रीर आयो,२ रतन चिंतामण सार नीठते
 पायोःधोवैरे मुढगीवार परष वीन पायो,२ पीठेही
 पीठताय शंकजी मरायोः सुपना ज्युं संसार
 पाप तुं तजरे.२॥ सी० १ ॥ ठीन२ वीतो जाय
 षवर न कांई२ गीरनंदीनो नीर जोवन ज्युं जाई;
 अलप दीनांको सुषरूपकी जाई; २ स्वारथीयो
 संसार मारतुं षाई, जरा मंजारी लार लगी तन
 तुजरे.२॥ सी० २ ॥ कोरव पंरुव जोर कर्णसा

ज्ञाई, २ मारथीया माहाराज धरा घूजाई: कंसन
 दीसे कोय, जरा सिंदुराई: २ वनेर माहाराज
 हूवा जगमाई, च्यार दीनां कीवेर गया सहू
 तजरे. २॥ सी० ३ ॥ जरा पहोती आय नर्गनी
 साई, २ काया माया देष वादलकी ठाई: लीयो
 न सुकृतलार उत्तम कूल आई, २ सुणे न देवे
 कोय लोन्न घटलाई: उं जुग चलीयो जाय देष
 तुं अजरे. २॥ सी० ४ ॥ करे पराई कथ वेठके
 दुनी, २ नही लागे कबु हात ज्ञाथ जरे सुनी:
 देवे कलोल गाय वात कर जुंनी, २ नांम जपो
 जीनराज होय कर मुनी: हिराचंदसु पांरी
 पांन मुक्तीपद जजरे. २॥ सी० ५॥ इती सपुरणा

॥ नं० ए५ ॥

॥ लावणी ॥

तजो पराई कथ हात नही आवे २ वाजरही
 घनीयाल आउपो जावे, आवे सुणवा काज
 वात केइ ठेके २ राजा नारके पांन कथाउ ठेके;

वेठे सारां वीच नीचके नेकेर नही धर्मरी
 तातपर ठेके, सुण्ण फुटा कांन धर्म नही
 ॥ त० १ ॥ समायक संजाल लाज घणो मो
 हात जपे जपमाल नांमको ओठो, जे कोई
 सीष धेपकर जावेर. ॥ त० २ ॥ बग जीम
 ध्यानं ज्ञानं नही चित्तमेर करे कसाई-
 लंठी जगथी तमेः अँका घनी उकाय-लोज
 हीतमेर जुटा काढे सुं सधर्मका नीतमेः श्रा
 नांम राय सुक वले पावेर ॥ त० ३ ॥ कू
 कवीला काज संचे तुं जोरीर दया नही ठ
 मांय धर्मका धोरीः चूगली मोसा मर्म
 नही ठोरीर पाय अ ी को माल-सुवी
 तोरीः आया धोल जे

काग मुष घोवेः लगे मर्मकी आन प्रांन वरतावेर
 ॥ त० ५ ॥ पोते अवगुण लाष ज्ञाप तु ढीजेर
 जे गुण देष माय तास तुं कीजेः पाई मीनषा
 देह जगत जस लीजेर हीर कहे जग बीच
 मुनसु रहीजेःपीणे पके जगमाय आपके ज्ञावे.२
 ॥ त० ६ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ न० ८२ ॥ ॥ राग धमाल ठे ॥

लाषांने फोजांमे शीपज्ञ एकदारे लाल, आई
 हूळकररी फोजां. माहाराज. ॥ ला० १ ॥ ज्ञाउ
 हूळकर तोतीयोरे लाल, आगल मुगल पठांण
 माहाराज. ॥ ला० २ ॥ नगर धुलेवो आंण घेरी-
 योरे लाल, पोह उगते सुर. मा० ॥ ला० ३ ॥
 माल षजाना बुटीयारे लाल, पमाने लीना
 पकरायो मा० ॥ ला० ४ ॥ चढीया जेरु जीवंक-
 कारे लाल, धोकीया तो समदां जाय. मा० ॥

वेठे सारां वीच नीचके नेकेर नही धर्मरी वात
 तातपर ठेके, सुणेर फुटा कांन धर्म नही पावेर
 ॥ त० १ ॥ समायक संजाल लाज घणो मोटोर
 हात जपे जपमाल नांमको ओठो, जे कोई देवे
 सीष धेपकर जावेर. ॥ त० २ ॥ वग जीम राषे
 ध्यांन ज्ञांन नही चित्तमेर करे कसाई- काम
 जेठी जगथी तमे: अंका घमी उकाय लोनाका
 हीतमेर जुटा काढे सुं सधर्मका नीतमे: श्रावग
 नांम राय सुक वले पावेर. ॥ त० ३ ॥ कूटं व
 कवीला काज संचे तुं ज़ोरीर दया नही दील-
 मांय धर्मका धोरी: चूगली मोसा मर्म अजे
 नही ठोरीर पाय अनीतको माल- रुवी सहू
 तोरी: आया धोला केस अजे नही धावेर. ॥
 ॥ त० ४ ॥ परकी निद्या ठोरु मेल क्युं धोवेर
 नीजतन लागे पारउ निरमल होवे: धुल ज़री
 नीज सुंरु आप सीर ढोवेर तज मेवा पकवान

मा० ॥ ला० १५ ॥ राव सदासीव आवीयौरे
 लाल, थे हमके मोहन उगारो. मा० ॥ ला० १६ ॥
 उतर चक्रावू सोना तणोरे लाल, कढे न आउं
 दरवारो. मा० ॥ ला० १७ ॥ श्रावग धनो करे
 वीनतीरे लाल, मारी आवागमण नीवारो. मा०
 ॥ ला० १८ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

❀❀ ॥: नं० १७ ॥: ❀❀

॥ अथ चोवीसीरो अष्टक लिषते ॥

श्री आदीरीपन्न जुनाजीके सुत, मात देवी
 मुरारही: अवतार धार वनीता नगरी: जुगल्ल्या
 धर्म नीवारही: धर ध्यांन ध्यांनी: ज्ञान धारण
 धर्म राहसु धारीतं श्री श्रीजीनेश्वरं रत्न चो-
 वीसी: जेट जेवीजं जगवंतं. ॥ १ ॥ दुजा अजीत
 जीनकर्म करे, पहूंता मुक्ती प्रमाणीयं; तीजारु
 संजव तरण तारण, वेण सुज नीरवाणीयं. नीत

॥ ला० ५ ॥ आपतारो जाजां सेठां तण्णरे लाल,
 लारे ज्जेलीयो धुलेवारो धन. मा० ॥ ला० ६ ॥
 धवलतोतो घोमो हंसलोरे लाल, मोत्यां जक्रीहे
 लगामो. मा० ॥ ला० ७ ॥ कक्रीये कटारो सोवे
 वंकमोरे लाल, कनक सोवनी ढाल माहारांज.
 ॥ ला० ८ ॥ लाल गुलाल अंगीयां सोज्जतीरे
 लाल, के सरमे गरकावो. मा० ॥ ला० ९ ॥ ऊरु-
 कारां कीदा ज्जिल्लारे लाल, तुटी तीरनकी
 मारो मा० ॥ ला० १० ॥ रीषवदेव ज्जेरु आवी-
 यारे लाल, ज्जागी असुरांकी फोजों. मा० ॥ ला०
 ११ ॥ फोज पजांन लुंटीयारे लाल, पंराने टीना
 ठोरुय. मा० ॥ ला० १२ ॥ रुपीयेर धोरुलोरे
 लाल, पईसे वगतर टोपो. मा० ॥ ला० १३ ॥
 गलीयेश तुरकणीरे लाल, पईसे जीणल गांमो.
 मा० ॥ ला० १४ ॥ जीत्या धूलेवारा धणी केस-
 र्यारे लाल, जीणां प्रध्वीमे कीनो अमर नांम.

नाथ वीचारही, गुण नेमनाथज मोक्षज्ञांनी;
 गीर चढ्या गीरनारही: पार्श्वनाथ तेवीसमा प्रभु,
 वीर चोवीसमात्रीतं. ॥ श्री० ७ ॥ चोवीस ष्ट
 जीनचरण सेवो, सफल काम सुधारीय; नीत
 प्रते द्रढ चीतरपोनेचे, वंदे वारंवारयं: करजोरु
 चीमन वीनती करे, हरो कर्मदे फलहतं. ॥ श्री० ८ ॥

॥ ईती संपूर्णम् ॥

◊◊: ॥ नं० ९८ ॥ ख्यालकी ए राग ॥: ◊◊

घरुा एकसो आठ सेलनी, रसजरीया ठे
 नीका; जलटजाव श्रीअंसवेरायो, मांरुलीया
 प्रभुबुकाहे. ॥ १ ॥ मारी रस सहेलनी, आज
 आदेसर कीनो पारणो: टेर: देव दूंधवी वाज
 रहीने, सोनैयांरी वीरषा; वारे माससु कीयो
 पारणो, गई जुषनेत्रीषाए. ॥ मा० १ ॥ रुद्रवृद्ध
 ने मनोकांमना, घर२ मंगला चार; घर३ रग

प्रतीवन्दन अग्नीन्दन, वासुपुज्य वीराजीतं ॥
 ॥ श्री० २ ॥ पंचमा सुमतीनाथ प्रणमुं, हीये
 हर्ष हूलासही; पुरजोर षटमा पदम प्रचुजी,
 सप्तमासु पासही. अष्टमा चंदा प्रचु ओलष,
 सेहरचंद्रा परसतं. ॥ श्री० ३ ॥ सुवद्ध जिने-
 सर नेक नवमा, उतन केई कंदाके थई; दशमा
 ज्युं शितलनाथ दीपत; सेहर सुन्नद्रापुरसहा;
 सेवोसे हंस मुनींद साहेव, प्रचु मोक्षजुं प्रापतं.
 ॥ श्री० ४ ॥ द्वादसमा चंपावती दध; वासुपूज्य,
 वंषाणीयं; षट सप्तकमल पूरावासी. प्रचु वीमल
 प्रमाणीयं, सप्तहूणमा जीन सहरजवज्या, अनंत
 नाथज गुणअंत. ॥ श्री० ५ ॥ जीन श्रीजीनेश्वर
 पनरमा जीन, धर्मनाथसु ध्यांनही; सोलमा श्री
 शंत जीनेश्वर, निर्जे केवलज्ञानही: गज नेरपुरी
 यण कुंथुज्ञानी, ए अरे नाथ गुणअंत. ॥ श्री० ६ ॥
 मलीनाथ उगणीस, वीस मुनीसु व्रत; नमी-

नाथ वीचारही, गुण नेमनाथज मोक्षज्ञानी;
 गीर चढ्या गीरनारही; पार्श्वनाथ तेवीसमा प्रभु,
 वीर चोवीसमात्रीत. ॥ श्री० ७ ॥ चोवीस ए
 जीनचरण सेवो, सफल काम सुधारीयं, नीत
 प्रते द्रढ चीतरषोनेचे, वंदे वारंवारयं: करजोरु
 चीमन वीनती करे, हरो कर्मदे फलहत ॥श्री०८॥

॥ ईती संपूर्णम् ॥

◊◊: ॥ नं० ९८ ॥ ख्यालकी ए राग ॥ ◊◊

घना एकसो आठ सेलमी, रसजरीया ठे
 नीका; उलटजाव श्रीअंसवेरायो, मांरुलीया
 प्रभुबुकाहे. ॥ १ ॥ मारी रस सहेलमी, आज
 आदेसर कीनो पारणो: टेर: देव दूधवी वाज
 रहीने, सोनैयांरी वीरषा, वारे माससुं कीयो
 पारणो, गर्ई जुषनेत्रीषाए. ॥ मा० १ ॥ ऋद्रवृद्र
 ने मनोकांमना, घर२ मंगला चार; घर१ रग

बंधावणासरे, आपातीज ते वारण. ॥ मा० ३ ॥
 चिंताचूरो वीगन निवारो, राषो हमारी लाज;
 सेवगके सारी अर्ज सुणीजे, रीषवदेव माहा-
 राज हे. ॥ मा० ४ ॥ ईती संपुर्णम् ॥



॥ नं० एण ॥

॥ शंकर वसरे केलासमेः ॥ ए राग. ॥

तप वसरे संसारमे, जीव उजळ थावेरे;
 कर्मरुई इंधन जले, सीवनगरीमे सीधावेरे. ॥
 ॥ त० १ ॥ तपसे तीरुप-पामे घणो, होवे सुर
 अवतारीरे; रुधवृध सुष संपदा, पावे लवदज
 ज्ञारीरे. ॥ त० २ ॥ राय आदर देवे घणो, चावे
 श्रीरने नीरोरे; लोक ज्ञाषा ईणपर कहे, ईणरी
 तपस्यांमे सीरोरे. ॥ त० ३ ॥ तपस्यांसुं रोग
 झूरे टले, वीघन सहुही जावेरे; तपसुं देव रक्षा
 करे, घरे लक्ष्मी आवेरे. ॥ त० ४ ॥ करतां तो

एक नवकारसी, सो वर्स नकारा टुटेरे; दश
 पचषाण नफो दसगुणो, आवागमणसुं बुटेरे.
 ॥ त० ५ ॥ अज्ञानपणे तपस्या करे, तोही नीर-
 फल न आवेरे; ज्ञान सहीत तपस्या करे, गर्जा-
 वास न आवेरे. ॥ त० ६ ॥ परो पज्ञानो तप
 मालरो, कोई पुनवंत घालेरे, चाट्या, जांवे
 मोक्षमे, ज्यांने कोय न पालेरे. ॥ त० ७ ॥ पोत्ते
 तो तप सच्यो हुवे, तेज पेके नही मंदोरे; सेवगू-
 आण माने घणी, सदा वर्ते आणंदोरे. ॥ त० ८ ॥
 तपस्यातो कीदी साहावीरजी कर्म कठण
 जागारे, धनो मुंनीसर तप तपे, स्वार्थसीध जाय
 लागारे. ॥ त० ९ ॥ वेलेतो वेलेकीयो पारणो,
 गणधर गोतम सांमीरे; मंत्रपंडकजीतपत्तपी,
 हूवा मुगतश गांमीरे. ॥ त० १० ॥ उरजनमाली
 उधर्यो, मुंनीवर मेघ कुवारोरे; राय प्रदेसी तप
 तपी, जासी मुगत मजारोरे ॥ त० ११ ॥ आउ

बंधावणासरे, आपातीज ते वारण. ॥ भा० ३ ॥
 चिताचूरो वीगन निवारो, राषो हमारी लाज;
 सेवगके सारी अर्ज सुणीजे, रीषवदेव माहा-
 राज हे. ॥ मा० ४ ॥ ईती संपुर्णम् ॥



॥ नं० एण ॥

॥ शंकर वसेरे केलासमे: ॥ ए राग. ॥

तप वसेरे संसारमे, जीव उजल थावेरे;
 कर्मरुई इंधन जले, सीवनगरीमे सीधावेरे. ॥
 ॥ त० १ ॥ तपसे तीरुप पामे घणो, होवे सुर
 अवतारीरे; रुधवृध सुष संपदा, पावे लवदज
 ज्ञारीरे. ॥ त० २ ॥ राय आदर देवे घणो, चावे
 पीरने नीरोरे; लोक ज्ञापा ईणपर कहे, ईणरी
 तपस्यांमे सीरोरे. ॥ त० ३ ॥ तपस्यांसुं रीग
 डूरे टले, वीघन सहुही जावेरे; तपसुं देव रक्षा
 करे, घरे लक्ष्मी आवेरे. ॥ त० ४ ॥ करतां तो

एक नवकारसी, सो वर्स नकारा टुटेरे; दश
 पचषाण नफो दसगुणो, आवागमणसुं टुटेरे.
 ॥ त० ५ ॥ अज्ञानपणे तपस्या करे, तोही नीर-
 फल न आवेरे; ज्ञान सहीत तपस्या करे, गर्जा-
 वास न आवेरे. ॥ त० ६ ॥ परो. पजांनो तप
 मालरो, कोई पुनवत घालेरे, चाढ्या, जांवे
 मोक्षमे, ज्यांने कोय न पालेरे. ॥ त० ७ ॥ पोते
 तो तप सच्यो हुवे, तेज पफे नही मंदोरे; सेवगु-
 आण माने घणी, सदा वर्ते आणंदोरे. ॥ त० ८ ॥
 तपस्यातो कीदी माहावीरजी. कर्म कठण
 जागारे; धनो मुंनीसर तप तपे, स्वार्थसीध जाय
 लागारे. ॥ त० ९ ॥ वेलेतो वेलेकीयो पारणो,
 गणधर गोतम सांमीरे; मंत्रपंडकजीतपतपी,
 हूवा मुगतरा गांमीरे. ॥ त० १० ॥ उरजन्ममाली-
 उधर्यो, मुंनीवर मेघ कुवारोरे; राय-
 तपी, जासी मुगत मजारोरे ॥ त० ११ ॥ अ०

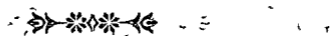
रांणी श्रीकृस्नरी, ब्रांमी सुंदर वालारे; तेवीस
 श्रेणकरी सुंदरी, तोड्या कर्मरा जाळारे. ॥ त०
 १२ ॥ इत्यादीक वहू तप तप्या, केहुं केतायक
 नांमोरे; कर्म कठण दल जीपने, लहीसे अवी-
 चल ठांमोरे. ॥ त० १३ ॥ सगत साकू तपस्या
 करो, निश्चे थे सुष पासोरे; रूप आसकर्णजी
 इम जणे, जोधाणे सेर चोमासोरे ॥ त० १४ ॥
 पुज रायचंदजी, ज्यांरी पहांच अती ज्ञारीरे;
 ज्वारे प्रसादे जोमी लेपने, आसोज मास मजा-
 रीरे. ॥ त० १५ ॥ ईती संपुर्णम्: ॥

॥ नं० १०० ॥ ॥ वारे वृतनी सजाय ॥

पेलेतो गोत्म जे, वांणी
 हीवने धरीजे: १ एफ त कीजे,

ठतां अठता आल न दीजे. ॥ ए० ३ ॥ तीजेत
 अदत्तादान न लीजे, जमी वस्तु धणी जाणीने
 आपीजे. ॥ ए० ४ ॥ चोते ते नीर्मल शील पालीजे,
 पालीने मुगताफल लीजे. ॥ ए० ५ ॥ पांचमे ते
 परीग्रामानुंमानं करीजे, पांच इंद्री पोता वस
 कीजे. ॥ ए० ६ ॥ ठटे ते दीसनो मान करीजे,
 दीन दीन पचषांण हीयमे धरीजे. ॥ ए० ७ ॥
 सातमे सचीतनो त्याग करीजे, सचीत मीस-
 रनो आहार न लीजे. ॥ ए० ८ ॥ आठमे अन-
 रथ रुंरुन सेवीजे, हिंस्या तणो उपदेस न
 दीजे. ॥ ए० ९ ॥ नवमे तो निरमल समाई
 करीजे, अवरतीने अवकार न दीजे. ॥ ए० १० ॥
 दशमे दसावीगासी वृत करीजे, पचषांण करीयां
 उपर पाव न दीजे ॥ ए० ११ ॥ इग्यारमे पोपद
 व्रत करीजे, एक आसन वेसी ध्यान धरीजे ॥
 ॥ ए० १२ ॥ वारमे अतीथ दांन सज्जलीजे,

साद सादवीयांने सुज तो दीजे. ॥ ए० १३ ॥
 तेरंमे सलेहणानो पाठ ज्ञणीजे, अवसर आया
 संथारो करीजे. ॥ ए० १४ ॥ दस श्रावग संथारो
 कीनो, जनम् जीतवनो लाहो लीजे. ॥ ए० १५ ॥
 पेले देवलोके मेरा पण दीधा, पालीने मुगतना
 फल लीधा. ॥ ए० १६ ॥ ईती संपुर्णम्: ॥



॥ नं० १०१ ॥ ॥ आरतीनी सजाय ॥

॥ सायंकाल आरतीनी ए राग. ॥

पेलीरे आरती अरीहंत देवा, चोष्ट इंद्र करे
 नीत सेवा; चौत्रीस अंतीसय पेंत्रीस वांणी,
 अनंत दर्शन प्रभु अनंत नांणी. १ अेसी अेसी
 आरती करुं मन मेरा, जनमं मर्ण तणा मीट
 जावे फेरा: टेर: वीजी आरती सीध नीरंजण;
 जवदुष जंजन कर्म नीकंदण, क्रोरु रवि करे
 कदे अजुवाला, एहथी प्रभुजीतणु रुप रसावा.

॥ अ० १ ॥ त्रीजी आरती श्री आचारज, सेवे
जेने सरे साहुकार; गुण ठत्रीसे तेहमां सोजे,
निरषीने ज्वीजन मोहे. ॥ अ० ३ ॥ चोथी
आरती उपाध्या मुनीवर, चवदे पूर्व पाठकगुण
गणधर; ईग्यारे अंग जणने जणावे. दूर्गती दुर
करी सुरगती अपावे. ॥ अ० ४ ॥ पांचमी आ-
रती साडुजी नीजावे, साडु केश श्रावग गुण
गावे; गुण सतावीसथी सोजे सांमी, एकज
शिवरमणी तणा कांमी. ॥ अ० ५ ॥ पांच ड्डीना
दीवट वनावो, देहाअगनीथी कर्मतेल जलावो;
झांन दीपक प्रगटे अजुवालो, जेथी जरे प्रजु
दीन दयालो. ॥ अ० ६ ॥ जीयां सुधी मोह
ममता न बुटे, त्यांसुधी कूमतीनी जालर कूटे;
करधर शिल संतोपनी घंटा, जनम मर्ण तणी
तजवा चिता. ॥ अ० ७ ॥ मनवंठीत सुष तेज
न पावे, किंचीत कष्ट वली नवी आवे, रीषजी

कहे आ आरती गावे, ते जन अजर अमर
सुष पावे. ॥ ओ० ८ ॥ ईती संपूर्णम् ॥



॥ नं० १०२ ॥ ॥ पंचग्यांनरी आरती ॥

॥ ॐ हरहर माहादेव ॥

जय पार्श्व देवाः जय पार्श्व देवाः सुरनर करे
तोरी सेवा. ॥ ज० १ ॥ पहेलुंरे मतीज्ञान, अठ-
वीस जेदेः अष्टकर्मने ठेदेः पापना दल जेदे.
॥ ज० २ ॥ वीजुरे सुरत ज्ञानः चौदावीश जुजाः
चोदा पुर्वधर सुधाः ज्ञागे जवषुदा. ॥ ज० ३ ॥
तीनीरी आरती अवदीज्ञान केरीः मीटामे ज-
वनी फेरीः सेवा करु तोरी. ॥ ज० ४ ॥ चोतीरे
आरतीः मनपर जव जाणोः दोय जेदनो राणो.
मुगतीस कशाणो. ॥ ज० ५ ॥ पंचमीरे आरती
केवल एक ज्ञाप्योः अवंरु सुष तेणे चाष्योः
अजरामर राष्यो. ॥ ज० ६ ॥ आरतीरे पंच

प्यांनः जे कोई गासेः समकीत सुद अन्यासेः
सोनाग्य गुण गावे. ॥ ज० ७ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० १०३ ॥

॥ ईणकोरु पूर्वलगपांमीसाताए देसी ॥

ईम स्वार्थसीधरे चंदरवे, कांई मोतो कुंवक
सोहेजी; वीचला मोतीसुं आफलता, सुरनरना
मन मोहेजी. ॥ ई० १ ॥ तसपास कुचकरो
वीचलो मोती, चोष्ट मणरो जांणोजी; मोती
च्यारवलेत सुपाषती वतीस मणरो वषांणोजी.
॥ ई० २ ॥ तेहने पाषती अतही नीर्मला, सोले
मणरा आठ मोतीजी, सुंदरता ते निश्चे कहीये,
देपत हर्षे जोतीजी. ॥ ई० ३ ॥ आठमण केरा
मुक्ताफल सोहे, तेहने पासे कहीयाजी, ईणपरे
सुरनाद उपजे, देपत हर्षे हीयाजी. ॥ ई० ४ ॥
च्यार मणरा तस पाषती, वतीस मोती दीपेजी;

जेजोवंता सुरनर केरी, जुप तृपा सहू जीपेजी.
 ॥ ई० ५ ॥ दोयमण केरा तस पापती, एकसो
 अठावीसोजी; जाकजमाल करे ते तेजे, देवे
 सुधर्म इसोजी. ॥ ई० ७ ॥ दोयसे ने तेपन मोती,
 सर्व मीलीने लहीयाजी; त्रीसला नंदन वीर
 जीनेश्वर, केवलझांनी कहीयाजी. ॥ ई० ८ ॥
 तस जुंवकमे नाद सुणंतां, सुरने पांच जगी-
 सोजी; ते रहे तीण उपरं लीला, सुरसागर
 तेतीसोजी. ॥ ई० ९ ॥ मुगताफलना नाद सु-
 णंतां, आफलता वाजजोगोजी; ईणपरं नाद
 सुंदर सुणीजे, सुरने आवे जोगोजी. ॥ ई० १० ॥
 दोय घमी काचीमे उपजे, वतीस वरसरी का-
 याजी; पून्यनीर जरा करणी करने, ईसमी
 जगा आयाजी. ॥ ई० ११ ॥ तेतीस हजार वर्स
 नीकल्यां, जुषनी इठथा थावेजी, सास उसासने
 नीचो मेले, पय तेतीसे जावेजी. ॥ ई० १२ ॥

वतीस वीधरा नाटक नीकले, ठ रागसुं मोहेजी;
ठतीस रागणी मायती नीकले, सुर नाहीया
मोहेजी. ॥ ई० १३ ॥ सादपणो सुद चोपो पाले,
ईसका मेलजे पावेजी; ठजं रीतना सुष जोगवे,
चवने मुक्ती सीधावेजी. ॥ ई० १४ ॥ स्वार्थसीद्ध
ना सुष जे ईसका, पुन जोग पावे प्रांणीजी;
ज्ञान धन श्रीवीर जीनेश्वर, वोले ईमृत वांणीजी;
॥ ई० १५ ॥ ग्यान जीणारो ईसो नीरमलो,
नर्ग सातमी सुजेजी; संका पनीयां तीर्थकरने,
उठेहीज वेठा बुजेजी. ॥ ई० १६ ॥ ईती सपूर्णम् ॥

॥ नं० १०४ ॥ - - - ॥ दोहा ॥

श्रीजीन चर्णकमल नमुं, गणधर लागु पाय;
कलजुगनी रचना कहूं, धर्मकथाके मांय ॥१॥
दूषमी आरौ पांचमो, कयो श्रीजीनराय;
संषेपे करी वर्णवूं, ते सुणजो चीतलाय. ॥२॥

॥ नं० १०५ ॥

॥ ढाल ठे ॥

श्री जंतुसांमी पूठा करे, करजोमी सीस
 नमायहोः सांमीजीः दुषमी आरो होसी पांच-
 मोः जीणरी कीणवीध रचना थाय होःसांमीजीः
 ॥ १ ॥ मांसुक होजीर सांमीजीथां सुं वीनवूंः
 टेः अहो शिषजी वध सुषवंठसी अतघणो,
 दूप होसी मरसी कुरहोः सांः पूरा पून पासी
 जीवना, सुष घटसी होसीदुप पुरहो. ॥सां०२॥
 एहवो दूषमीरआरो होसी पांचमोः टेः प्ले
 वोले नगर होसी गांमसां, दूजे गांम होसी
 ज्युं मसांणहोः सां० तीजे कूटंव होसी दास
 सारषा, राजा सरीषा जांणहोः ॥ सां०ए० ३ ॥
 पांचमे परधान होसी सुंकड्या, बटे निच निर-
 लज सुष पायहोः सां०
 वेटीयां, ज्यरि शिलदसा

ए० ४ ॥ आठमे पुत्र पोताके ठांवे चालसी,
 गुररे शिष होसी प्रतनी कहोः सां० दसमे सजन
 झूषी दूर्जन सुषी झग्यारमे वैरी हुंसी देतां
 सीषहो. ॥ सां० ए० ५ ॥ वारमे दूष होसी पर-
 चक्रनो, होसी प्रथ्वी वीपस उजारुहो. सां०
 तेरमे व्रामण गर्थना लोज्जीया, करसी कूलधरमीसुं
 रारु हो. ॥ सां० ए० ६ ॥ सोलमे दयाधर्म थोमो
 हूसी, देसी हिस्याधर्म डढायहो सां० सत-
 रमे मनुद्द मीध्याती घणा होसी, अठारमे
 समद्रष्टी थोमा थाय हो. ॥ सां० ए० ७ ॥ उग-
 णीसमे देवदर्शन थोमो हूसी, वीसमे विद्यामत्र
 जासी वीठेठहो. सां० ईकीसमे गोरसमे चीक-
 णाई थोमी हूंसी, बलधन आजषो थोमो बहु
 पेद हो. ॥ सां० ए० ८ ॥ तेईसमे थानक सादां
 ने थोमां हुंसी, चोइसमे गुरु शिष न पाढसी
 लीगारहो. सां० बोल पचीसमे पमीमा वीठे-

दसी, सीष्य होसी गुरां नेकलेकारहो. ॥ सां० ए०ए॥ सताईसमे सरल थोकाहोसी, अठाईसमे जठ अनेकहो. सां० गुणतीसमे आपणे ठांदे चालसी, तीसमे हिडू थोका मलेठ वीशेषहो. ॥ सां० ए० १० ॥ एह तीस वोल पांचमा आरा तणा, ओर दस वोल जासी विठेदहो. सां० द्वेष जरीयां चरचा करसी बुरी, रागद्वेष करीपा सीपेदहो. ॥ सां० ए० ११ ॥ लवदी दोय श्रेणी दोयजो, मन पयवपर्म अवध हो. सां० जीनकटपी चारीत्र तीनते, केवलज्ञान दर्शन जासी विठेदहो. ॥ सां० ए० १२ ॥ दाता निरधन कृपण धन धणी, पापी बहु जीव साधर्मि अल्पहो. सां० कुलहीण राज कुलवंत दासज्युं, प्रभु तजे प्रजनाको करसी जापहो. ॥ सां० ए० १३ ॥ ओर दूष घणाइपणे जाणजो, मांसु पूरा कया नही जायहो. सां० रूप लाल-

चंदजी - कहे, रतलाममे, धर्म कथाको बोल
सुणायहो. ॥ सां० ए० १४ ॥ ईती समाप्तम् ॥

॥ नं० १०६ ॥

॥ नणदलनी राग. ॥

तीजा अंगने ठाणे तीसरे, अर्थमे इतरा
बोलः मुंः वले वहतकल्पमे वरजीया, अरीहंत
आष्यां दीनी पोल. ॥ मुं० १ ॥ दीष्या मत दीजो
अजोगने, ठावी करलो ठीक. मु० पीठेही पीठ-
तावसो, तीणथी एहठे शिष. ॥ मु० दी० २ ॥
अतही वृद्ध वीध्यानही, वले निर्वल नांनो
वाल. मु० नपुसगने रोगीयो, चोरने वले चंमाल.
॥ मुं० दी० ३ ॥ कोइ राजानो अपराधी हूवे,
गेरी जेरी गुलाम. मु० आंधोने वले उंदमती,
कूष्टी दूष्ट परणांम. ॥ मुं० दी० ४ ॥ मोललीयो
देवालीयो, हीण हूवे कूलजात. मुं० सुगांणो

सुद्ध वाहरो, करपे दीनने रात. ॥ मु० दी० ५ ॥
 चूप वीना हसवो करे, गर्जवती वले नार. मु०
 कीणरे चूगे ठोकरो, स्तीणने तज नीकले निर-
 धार. ॥ मु० दी० ६ ॥ कांन नाक होट बुटा
 हूवे, चक्रहीण मुष मुंग. मु० दोष घणो ने
 मोह घणो, नांमहीण वांगोजुंग. ॥ मु० दी० ७ ॥
 वलछूधी हीणो हूवो, अपठंदो अवनित. मु०
 कपटी लंपटी कदाग्रही, कीणरी पुरो नही पर-
 तीत. ॥ मु० दी० ८ ॥ क्रोधी वले कलेसीयो,
 लोल पीरसनें काज. मु० चपल वोलो वाकी
 वाहरो, नही नयणांमे लाज. ॥ मु० दी० ९ ॥
 सजममे समजे नही, नही सुमंत गुपतनी ठीक.
 मु० सुन्य चीत समजे नही, दीनांन लागे सीप.
 ॥ मु० दी० १० ॥ पहीलथे करजो, पारपा,
 जीनसने लीजो जोय. मु० अधीराने उतावला,
 कदेम दयजो कोय. ॥ मु० दी० ११ ॥ मुष ने

मुंरु जो मती, जढमुड जरुंग. मु० सुलटी कया
 उलटो पने, वले नागो जुगो जरुंग. ॥ मु० १२ ॥
 रयो घोमो न दूवो, जो करे लाष प्रकरा. मु०
 रासजसुं हाले नही, हाथी हंदो जार. ॥ मु०
 दी० १३ ॥ काली उनकू मांणसां, चढे न पूजो
 रंग. मु० काग न होवे उजलो, जो नावतही
 गंग. ॥ मु० दी० १४ ॥ लोग सहू कूपात्र कहे,
 वले वजे वाला सेण. मु० लेवीने वली ठोरतां,
 दोनुंही वातां देण. ॥ मु० दी० १५ ॥ ठोड्यां
 पठेही ठीड्रतके, राप्यां नही रहे रीत. मु०
 तीणसु पहीला कीजो पारपा, शिद्धकी जोसु
 वनीत. ॥ मु० दी० १६ ॥ वीकलाने जेला कीया,
 पठे लजावे जेष. मु० उपजे अवगुण अती
 धणो, तीणसु रापजो विवेक. ॥ मु० दी० १७ ॥
 कोई जेष सेन्यासी जोगी जती, वले कोइ जेष
 धार. मु० तीणने तुरतु मती मुंरुजो, परपजो

महीना दोय च्यार. ॥ मु० दी० १८ ॥ जे कोई
 असंदो आवीयो, तिणरी ठीक नहि काय. मु०
 जिणरो ज़रोसो मत राषजो, ज्युं जतन पुस्त-
 कना थाय. ॥ मु० दी १९ ॥ जीसा तीसाने
 मुंरुने, पुरे चेलारी चाय. मु० गलीहार गधे
 सारसो अवगुंण काढे जाय. ॥ मु० दी० २० ॥
 गुरवादीक वरजे वली, तिणमें नहि ज़लीहार.
 मु० इण वातरा अटकल लिजीये, चतुर लीजे
 चित्त विचार. ॥ मु० दी० २१ ॥ जीन महिमा
 हूवे जिनधर्मनी, हुवे सगली जायगासो ज़ाग.
 मु० दिल चेन पावे चित्त आपरो, लोगारे वधे
 वेराग. ॥ मु० दी० २२ ॥ दीष्या पचीसी पर-
 षवा, रिप रायचंदजी कहे विमांस. मु० संवत
 अठारे ठतीसमे, नागोर सेर चोमास. ॥ मु०
 दी० २३ ॥ पहीली तो शिष पोते ज़णी, वले
 वंधे पेलारी पाल. मु० पुज जेमलजीरा परसा-

दसुं, जुक्तसुं जोमी ढाल. ॥ मु० दी० १४ ॥
॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ नं० १०७ ॥

राजतणा अति लोप्तीया, जर्त वाहुवल
जुजेरे; मुठ उपानी सारवा, वाहुवल प्रती
बुजेरे. ॥ १ ॥ वीरा सोरा गजथकी उतरो,
गज चढ्यां केवल न होसीरे: ॥ वी० टेरः ॥
लोच करी संजम लीयो, आण्यो मन अन्नी-
मांनोरे लघू वंदव वंदू नही, काजसग रयो
सुन्न ध्यांनोरे. ॥ वी० २ ॥ वर्स दीवस काज-
सग रयो, वेदनीयां वीटाणोरे; पंपी माला
घालीया, सीत ताप सुकाणोरे. ॥ वी० ३ ॥
वधव गजथकी उतरो, व्रामी सुंदरी इम जासेरे;
रीपन्न जिनेसर मोकली, वाहुवल तुम पासेरे.
॥ वी० ४ ॥ सादवी वचन सुणीइसो, चमक्यो

चित मजारो रे; हय गयरथ पायक तज्या, पीण
 मूक्यो नही अहंकारो रे. ॥ वी० ५ ॥ वेरागे
 मन वालीयो, मूक्यो-मन अन्नीमांनो रे; पाय
 उपानी वंदवा, उपनो केवल ज्ञानो रे. ॥ वी० ६ ॥
 पहुंचता केवली पुरपदा, बाहूवल रीपरायो रे;
 अजर अमर पदवी लही, समय सुंदर वंदे
 पायो रे. ॥ वी० ७ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ॥ १०८ ॥

॥ नगरी पुववणी ठे रागः ॥

जठ सवारे धंधे लागी, अण बुहारी घरढी;
 ले पुंणीने चर्षे वेटी, धर्म कर्णनेमाठी. १ कांश्तुं
 गर्व रहीबेहे, आ घर माहरो ने हुं घरकी. टेर.
 केइक वायां पीणघट चाली, मलकर पग देवे;
 पाठी आयने करे रसोइ, प्रचु नांम नही लेवे.
 ॥ कां० २ ॥ धर्म तणो अद्धर नही जाणे, परी

जीजरे गटके; संतां केरो संग न राषे, परी
 कूसंगे जटके. ॥ कां० ३ ॥ केशक वायां चषे
 वेठी, महीर तांनज सांधे; कजीयो करे वातरे
 साटे, घणा कर्मने वांधे. ॥ कां० ४ ॥ अणुं कया
 नही कीणी वातरी, धोवे हांमा मोइ; एक चीत
 करे पापरो कामो, जली तुं घरमे मोई. ॥ कां०
 ५ ॥ घरकी मंरुन होयने वेठी, पाप करणने
 हांजी; जरा जोजरी हो गइ देही, तो पीण
 समजे नांजी. ॥ कां० ६ ॥ केशक वायां उदम
 करने, धर्म ठीकाणे आवे; समायक लेइने वेठी,
 तो पीण रग नही जावे. ॥ कां० ७ ॥ धर्मतणो
 अहार नही जाणे, पनी जीजरे लटके, कजीयो
 करे वातरे साटे, घणो कालजे पटके. ॥ कां० ८ ॥
 दोय च्यार मील वात वणावे, घणां घरांने
 जंमे; एक वपाण रीषीसर मने, दूजो वायां
 मने. ॥ कां० ९ ॥ युं नही जाणे जीनवर वानी,

सुण्यां चीकणा टुटे; हेत तणी सीषामण देतां,
 तरुक ज़रुकने उठे. ॥ कां० १० ॥ कूवद दंगो
 केववती ज़ोली, अहीलज मारो जासी; सत-
 गरुकी तो सीष न मानी; पठे घणी पीठतासी.
 ॥ कां० ११ ॥ एरगेर कोइ वचन मत काढो,
 ओठोले मतीजंगो; रीषजसरुपजी कहे जीनवर
 वांणी, बालकनी परे चूंगो. ॥ कां० १२ ॥

॥ इती संपुर्णम् ॥

॥ नं० १०ए ॥

॥ सादुजीने वंदना नितर कीजे ए ॥

अपुर्व जीव जीनधर्म, पामीयो, जीणरे
 कूमीयन रेवे कायरे प्रांणी; कल्पवृक्ष जीमघरे
 आंगण उगो, मनवठीत फल पायरे प्रांणी. १
 चितसमाध हूवे दस बोले, टेरः दुजे बोले जांती
 समरण, पामे पुन प्रमाणरे प्रां० पुर्वलो जवदेषे

ज्ञलीपर, केइ समजे चतुर सुजाणरे प्रांणी०
 ॥ ची० २ ॥ जतकष्टा न वसे ज्ञव लगता, परे
 सनी पचेंद्रीनी ठीकरे प्रां० आउषो जांणे आ-
 पणो परायो, इसो मतज्ञान मंगलीकरे प्रां०
 ॥ ची० ३ ॥ मृगापुत्र मेलमे पामे, मुनीवर
 मेघकवाररे प्रां० मलीनाथजीना षट मित्री,
 दृढ समगत पांमी साररे प्रां० ॥ ची० ४ ॥
 षत्री नामे राय रिषेसर, वले सुदर्शन शेठरे प्रां०
 नमीराय संजम आदर्यो, तीनुं पहुंता ठीकाणे
 ठेठरे प्रां० ॥ ची० ५ ॥ जगु ब्रामणना वेवेटा,
 वले तेतली नाम प्रधानरे प्रां० जातीस्मरणथी
 सुष पांम्यो, कोइ कहेतां न आवे ज्ञानरे प्रां०
 ॥ ची० ६ ॥ तीजी वळे जथातथ सुपनो, जीव
 राजी हूय जावे देपरे प्रां० रुद्धवृद्ध पामे पर-
 ज्ञाते, इणरा अर्थ अनेकरे प्रां० ॥ ची० ७ ॥
 उणहीज ज्ञवकेइ मुक्त सीधावे, एहवा स्वपना

श्रीकाररे प्रा० अरीहंतजीरीमा आदी देषे, जहा
 जगोती विस्ताररे प्रा० ॥ ची० ८ ॥ चोते वोले
 देवनो दर्शन, दिठां ठरे दोय नेणरे प्रा० जीग
 मीग जोत उद्योत करंतो, वालो सम्यगद्रष्टी
 सेणरे प्रा० ॥ ची० ९ ॥ सोमल व्रामणने सम-
 जायो, देवसम द्रष्टी, आयरे प्रा० समकृतमे
 पाठो करदीयो सेंठो, ज्ञाष्यो नीरावलका मांयरे
 प्रा० ॥ ची० १० ॥ पांचमे वोले अवधज झांनी,
 सुत्र नंदीमे वीस्ताररे प्रा० आणंदश्रावग जीम
 साता पामी, श्रमन केसी कवाररे प्रा० ॥ ची०
 ११ ॥ स्वार्थसीद्धना देवता देषे, वेठा थका
 नोकनालरे प्रा० अरीहंतदेवने प्रह्ल पुठे, उत्तर
 दे दीनदयालरे प्रा० ॥ ची० १२ ॥ अवध लीया
 अरीहंतज आवे, मत्ताना गर्ज मांयरे प्रा०
 पेटमे पोढ्यां दुनीयांने देषे, पुरा पुन्य संच्या
 जीनरायरे प्रा० ॥ ची० १३ ॥ ठटे,

धज दर्शन; ते-देषे सर्व संसाररे प्रा० सातमो
 वोले थे सुणो सुगाएनी, मन पर्यवनो इधकाररे
 प्रा० ॥ ची० १४ ॥ दोय समुद्रने दीप अठाई,
 ज्यां मेसनी पंचेंद्री होयरे प्रा० ज्यां जीवारे
 मन रीवांतां, ठांती नरेवेकोयरे प्रा० ॥ १५ ॥
 मन पर्यव मुंनीवरने होवे, वलेल वदवंत अण-
 गाररे प्रा० सतपुर सांज्यां सुत्र में गुध्यां, चउ-
 नांणी अणगाररे प्रा० ॥ ची० १६ ॥ आठमे
 वोले केवल ज्ञांती, नवमें केवल दर्शन नांणरे
 प्रा० चवदेही राजने देषी रह्या, सर्व वातना
 जांणरे प्रा० ॥ ची० १७ ॥ लोकमांहे उद्योतना
 कर्ता; केवली हुवा चोवीसरे प्रा० तिर्थ थापीने
 कर्मने कापी, जग तारण जगदीशरे प्रा० ॥
 ॥ ची० १८ ॥ जगत तीर्थंकर वीश वीराजे,
 उतकष्टा एकसोनें सांठरे प्रा० गणधरसाद नमुं
 सीरनांमी, केवली पाटोपाटरे प्रा० ॥ ची० १९ ॥

दसमे बोले केवलमर्ण बोल्या, ते पहुठे नीर-
वाणरे प्रां० बोल दसुंही थया संपूर्ण, वीरवचन
प्रमाणरे प्रां० ॥ ची० २० ॥ नेउ जीणारानांमज
चाल्या, कियो अंतगढ मांहे जंतरें प्रां० केवली
मणें मुक्ती पहोता, सहू साद थया जगवंतरे
प्रां० ॥ ची० २१ ॥ दसासुतकंद सुत्रमे चाल्यो,
वलेसम वायंगनी साषरे प्रां० समदृष्टीप चीसी-
साताकारी, रीष रायचंडजी इम ज्ञाषरे प्रां०
॥ ची० २२ ॥ प्रसादपुजजे मलजीकेरे, कीधो
ज्ञान अभ्यासरे प्रां० संवत अठारे वरस तेतीसे,
मेरुते नगर चोमासरे प्रां० ॥ ची० २३ ॥ ईती
संपूर्णम् ॥

॥ नं० ११० ॥ ॥ हिंदुानी राग ॥

दर्शन दिठाजी२ मुंनीराज तुंम तोला गोमी-
ठाजी. ढ० टेर० गांम नगरपुर आप वीचरता,

जवजीवांने तारयाजी, आज हमारा ज्ञाग जोरसे,
 आप पदारयाजी ॥ द० १ ॥ दर्शन दीठां लागे
 मीठा, पुन उदय सेपायाजी, एसे मुनीना द-
 र्शन करतां, पाप पुलायाजी ॥ द० २ ॥ पंच
 माहावृत पार्लेपुरा, दोष वयांलीस टालोजी,
 जनीनर मुनी उपदेश सुणावो, पाषंरु मतने
 गालोजी ॥ द० ३ ॥ सुर्त थारी लागे प्यारी,
 दिठा मोहनगारीजी, बालवृमचारी नही वंठे-
 नारी, वदणा हमारीजी ॥ द० ४ ॥ दयाल मुं-
 नीओ रहेम मुंनीसर, अेमदावादमे आयाजी,
 धर्म ध्यांनका ठाठ लगाया, रंग वरसायाजी
 ॥ द० ५ ॥ जगणीसेने साल श्कास्ये, कार्तिक
 मांसके मांडजी, हेम राज कीयाही वीनती,
 सुणजो ज्ञाश्री ॥ द० ६ ॥

॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० १११ ॥

प्रहजठी गोत्म प्रणमीजे, मनवंठीतनो दातार,
 लवदी निधानं सकल गुणसागर, श्रीवृधमानं
 प्रथम गणधार ॥ प्र० १ ॥ गोत्म गोत्र च वदे
 विधानीधी, प्रथवी मातपीता वसुभुती, जीन-
 वर वांणी सुणी मन हृष्योः बोलायो नामे इंद्र
 जुती ॥ प्र० २ ॥ पंच महावृत ले प्रजु पासे,
 दे जीनवर त्रीपदी मनरंग, श्रीगोत्म गणधर
 तीहां गुंध्यां, पुर्वच वदे डुवादस अंग ॥ प्र० ३ ॥
 अदजुत एह सुगुरुनो अतीशय, जसु दीसेत
 सु केवल ज्ञान, जाव जीव ठटर तपपारणो,
 आपणपे गोचरीरेम ध्यान ॥ प्र० ४ ॥ कामधेनु
 सुरतरु चितांमण, नांम मांहे जसु करे निवास,
 सेसत गरुनो नांम जपंता, लाजे लीष मीलील
 वीलास ॥ प्र० ५ ॥ लाज्ज घणो वीणजवो पारे,
 आवे प्रवण कूसले पेस, ते सतगुरुनो ध्यान

धरंता, पामे पुत्र कलत्र बहू प्रेम. ॥ प्र० ६ ॥
 गोत्मस्वामी तणा गुण गातां, अष्टमाहासिद्धी
 नवरे निधान; समय सुंदर कहे सुगुरुने प्रसादे,
 पुन उदय प्रगट्यो प्रधान. ॥ प्र० ७ ॥

॥ ईती संपूर्णम्. ॥

॥ न० ११२ ॥

चोवीसे जीनवर करुज जाप, नाम ठाम
 लंठन माय वाप; प्रथम शिष सीषणी दातार,
 वनसत ठाणे तवन विचार. ॥१॥ रुषन्न लंठन
 नाज्जीराय, वनीता नेम रुढेव्या माय; उसन्न-
 सेन व्रामी सुषकार, श्रीयस दाता प्रथम उदार.
 ॥ २ ॥ अजीत अजोध्या विजीया माय, गज
 लंठन जीय शत्रुराय; सिंहसेन गणधर फगु-
 सती, वृमदत्त नामे दातावृति. ॥ ३ ॥ सन्नव
 साव जीतारथ तात, अश्व लंठन श्री सेनामात;

च्यार मुनिवर सोमा साहूणी, सुरदत्तनी महिमा
 घणी. ॥ ४ ॥ अग्निनंदन वनीता पल्यव धजा,
 विहर मुंनी अती रांणी अजा; संवर राजा सिंह-
 दता माय, इंद्रदत्त नामे दाता थाय. ॥ ५ ॥
 सुमती क्रोचलंठन कोसल्या, मेघरथ नृप मात
 मंगल्या; चमर मुनीवरका सवी जांण, धरमसी
 दायक प्रथम वर्षाण. ॥ ६ ॥ पदम प्रजु कोसंवी
 धरराय, कमल लंठनने सुसमा थाय; सुव्रत
 गणधर ने अजारती, पहीलो दाता कहीये सु-
 मति. ॥ ७ ॥ सुपास वणारसी सथीचिन्न, प्रथीष्ट
 राजा पृथ्वी तन्न; सोमाअजावी ड्रवगण धार,
 धरमीत दाता कयो विचार. ॥ ८ ॥ चंद्र प्रन्न
 चंद्रपुरी अवतार, माहासेन नृप तालीषमा नार;
 दिन गणी समणा संजती, पुफदाता लंठन
 धीजपती. ॥ ९ ॥ सुवद काकंकी सुग्रीव नरिंद्र,
 मकरध्वज वली रामानंद, वाराह मुनी वारुणी

आणंद; पुनर्वसु दाता कहीये नरेंद्र. ॥ १० ॥
 सितल नदल पुरवर वसे, द्रढरथ माता नदा-
 रसे; आणंद सुलसा समणी एह; नंद दाताश्री
 वठधरेह. ॥ ११ ॥ श्रीअंससिंह पुरविस्तु चूप,
 विस्तुता रुप अनुप; गोथुन धारणी दाता सुनंद,
 षरुग लंठन धर्यो अणंद. ॥ १२ ॥ वासुपुज
 चंपावती सुवास, वासुपुज जननी जया जास;
 सोहमी मुंनी धरणी सुसास, महीष लंठन जय
 दाता तास. ॥ १३ ॥ विमल किपलपुर वाराह
 चीन, कृत वृमराजा सोमधन; मदिर मुंनिवर
 धरणी धरा, विजेदातानी किरत वरा. ॥ १४ ॥
 अनत अजोज्या नृपसीहसेन, सुजसा जणणी
 लंठन सेण; जस गणहरने पोमावकी, पदम-
 दातानी सफली घकी. ॥ १५ ॥ धर्म वज्रलठन
 रतन पुरे, जानुराय सुव्रता घरे, सिवा साधवी
 अरिष्ट गणधार, सोमदत्त नामे पहीलो दातार.

च्यार मुनिवर सोमा साहूणी, सुरदत्तनी महिमा
 घणी. ॥ ४ ॥ अग्निनंदन वनीता पत्यव धजां,
 विहर मुंती अती रांणी अजा; संवर राजा सिंह-
 दता माय, इंद्रदत्त नामे दाता थाय. ॥ ५ ॥
 सुमती क्रोचलंठन कोसल्या, मेघरथ नृप मात
 मंगल्या; चमर मुनीवरका सवी जांण, धरमसी
 दायक प्रथम वर्षाण. ॥ ६ ॥ पदम प्रभु कोसंवी
 धरराय, कमल लंठनने सुसमा थाय; सुव्रत
 गणधर ने अजारती, पहीलो दाता कहीये सु-
 मति. ॥ ७ ॥ सुपास वणारसी सथीचिन्न, प्रथीष्ट
 राजा पृथ्वी तन्न; सोमाअजावी ड्रवगण धार,
 धरमीत दाता कयो विचार. ॥ ८ ॥ त्रंज प्रन्न
 चंद्रपुरी अवतार, माहासेन नृप तालीषमानार;
 दिन गणी समणा संजती, पुफदाता लंठन
 धीजपती. ॥ ९ ॥ सुवद काकंकी सुग्रीव नरिंद्र,
 मकरध्वज बली रामानंद, वाराह मुनी वारुणी

दवी जेसे वाढेवीइला; अजा जषणा वरद तरीष,
 वरदत दाता लंठन संप. ॥ १३ ॥ पारसनाथ
 वणारसी हुलास, अश्वसेन ज्ञांमा राणी जास;
 दीन गणी पुफ चूला सोय, धनदाता सर्पलंठन
 होय. ॥ १४ ॥ कूंरण पुरवर विर जिणंद, पीता
 सिधारथ त्रीसलानंद; इंद्र चुश्चनणा वपाण,
 वहूल दाता सिंह अक जाण. ॥ १५ ॥ पदम
 प्रभु वासुपुज रातेवढण, चंद्रप्रभुसु वढीउ जल
 तन, मलय पार्श्वनील सुवयनेम, सांम सोले रगे
 हेम. ॥ १६ ॥ अष्टापद सिद्धा रीपन्नसपीर, चपा-
 वासपुजने पावावीर; श्रीअरीष्ट नेमी गढ गीर-
 नार, वीसे सीधा समेत गीर सार. ॥ १७ ॥
 श्रीजीन नायक लायक सुण्यां, नांम ठांम ले
 विधसुं जण्या; समतइपु रस अश्वरवी गिएया,
 प्रथम जिनने दासे जण्या. ॥ १८ ॥

॥ १६ ॥ संती मृगलंठन हथीणाजरे, विश्वसेन
 रायने अचीरावरे; चक्रायुद्ध समणी सुइ जणी,
 महेंद्रदत्तनी सोजा घणी. ॥ १७ ॥ कूथुनाथश्री
 देवीनंद, गजपुर राय सुरमहंद; सयंजु मुनि
 अजु अजा होय, सोमदत्त अजलंठन सोय.
 ॥ १८ ॥ अरेनाथ नागपुरी अजीरांम, सुदंसन
 देवी मायनो नाम; कूज रीपीया करु आवर्त,
 आपरे दाता दावर्त. ॥ १९ ॥ मलीनाथ मीथला
 कूजराय, प्रजावती गढलंठन थाय; जीसक
 मुनिवर वंधु अजा, विश्वसेन दांने नहीका
 कजा. ॥ २० ॥ मुंनीसुव्रत राजग्रीपुरी, सुमती-
 राय पोमावइ सुंदरी; इंद्रपुफवती वंधू सुसेन,
 कूर्म लंठणने उसन्नसेन. ॥ २१ ॥ नमी नीलो-
 त्पल लंठण जाण, बीजे विप्रामांय वषाण; मी-
 थला नगरी दीन दातार, कूज गणहर अनीला
 सार. ॥ २२ ॥ नेमीनाथ सोरीपुर जला; समु

चोबट मोले चोटे- बेसी, घाय ने घोदे घरने.
 ॥ जो० ३ ॥ आपी संघमां एक रुपैयो, वेनो
 करे नुकशान; लेस वातमां कलेश करे, वले
 ज्ञापानो नही ज्ञान. ॥ जो० ४ ॥ जीसके तरुमे
 लरु ज्ञाइ, उसकी तरुमे हमज्जी तयार; सुद्धी
 असुद्धी स्थान जोवे नही, वस्र वीगारु सार.
 ॥ जो ५ ॥ गाम सारु घरनो करवो, पांते थाय
 पवार, ज्ञानतणा पातां धूल थातां, लीथे न
 कांइ संजाल. ॥ जो० ६ ॥ धर्मध्यानना घरनासे
 नो, रकम मंरावे मोटी, देवा टांणे देवालीयो,
 दीयन दानत पोटी. ॥ जो० ७ ॥ उपश्राथी
 चोरी करने, जुवे रमवा जाय, कोइ शिपांमण
 देवेतो, लरुवा सामो थाय. ॥ जो० ८ ॥ धर्म
 तणी जो वात करे तो, वचमे आमो बोले;
 लोत्रे तमारो मन ललचांणो, लाज रती नही
 आणे. ॥ जो० ९ ॥ जो समजे तो नाक कपाणुं,

॥ कलशः ॥

सहू ज्वीयण तारण दूष नीवारणः चोवीसे
जिनराजएः गगरांणे जल ज्ञावसेतीः तवनए
समाजए. ॥ १ ॥ ज्ञानचंद सुवद सेवगः श्री
देवने देवराजएः कल्याण मुंनीवर सीष शीषज्जोः
दहे इम सुष साजए. ॥ २ ॥ ईती संपुर्णम्. ॥

॥ नं० ११३ ॥

॥ मारा ज्ञाग्य तणो नही पार ए ॥

जोयलो वांणीया ज्ञाज्ञना कांम, वगनी बुद्धी
थया वढनांमः टेरः उपासरार्थी लीये पतासा,
करावे सहूने दजे; ने वल घामे आंगलीये, ने
त्रीजु वेसामे षंदे. ॥ जो० १ ॥ वर्स एकमां एक
वगतजो, आवे धर्मने स्थान, मुफत मुमती
मागे मुरषो, रह्यो न षावा धान. ॥ जो० २ ॥
देवुं तो वले छुर रथो पण, देवा दे नही परने;

चोवट मोले चोटे वेसी, पाय ने षोदे घरने.
 ॥ जो० ३ ॥ आपी संघमां एक रुपैयो, वेनो
 करे नुकशान; लेस वातमां कलेश करे, बले
 चापानो नही ज्ञान. ॥ जो० ४ ॥ जीसके तरुमे
 लरु जाइ, उसकी तरुमे हमज्जी तयार; सुद्धी
 असुद्धी स्थांन जोवे नही, वस्त्र वीगाने सार.
 ॥ जो ५ ॥ गाम सारु परसो करवो, पांते थाय
 पवार; ज्ञानतणा पातां धूल थातां, लीये न
 कांइ संजाल. ॥ जो० ६ ॥ धर्मध्यांनना परसासे
 तो, रकम मंकावे मोटी, देवा टांणे देवालीयो,
 दीयन दांनत पोटी. ॥ जो० ७ ॥ उपश्राथी
 चोरी करने, जुवे रमवा जाय, कोइ शिपांमण
 देवेतो, लरुवा सामो थाय. ॥ जो० ८ ॥ धर्म
 तणी जो वात करे तो, वचमे आसो बोले;
 दोन्ने तमारो मन ललचांणो, लाज रती नही
 आणे. ॥ जो० ९ ॥ जो समजे तो नाक कपाणुं,

जगमे नथी अजाण्युं; वणीक नाम ते जुट न
 बोले, कदी न ओठो आपे. ॥ जो० १० ॥ धर्म
 तणी थापण ओलवतां, कांश् धुरत न करे
 विचार; डुरगतीनो ऋर नही राषे, परनारीसुं
 प्यार. ॥ जो० ११ ॥ चूंगी विना तो जरा न
 चाले, वीकी वजारां वीच फूके; पुंषु दिवस
 रात करे षीण, तो पण वीकी नवी मुके. ॥
 ॥ जो० १२ ॥ विर पीतानो पवित्र पूरो, दया
 दयामे धरम; वलज तेने कलंक लगाड्यो; करी
 अविचारी करम. ॥ जो० १३ ॥

॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ लं० ११४ ॥

॥ ईण-स्वार्थसिद्धरे चंदरवे. ए ॥

साधपणाको मारग लेने, निंदा कर रयो
 परकीजी; रात दिवस करे वंदगोश्; षोवे पुंजी

धरकीजी. ॥ १ ॥ कां३ आप थापीने परनो
 निंदक, तिणमे तेरे दोषोजी; बीजे संवर द्वारे
 ज्ञाष्या, किणवीध पामे मोषोजी. ॥ कां० २ ॥
 लोकांने प्रतीबोधज देवे, बुधवंत नही कहीजे-
 जी; प्रश्न व्याकरण सुत्रमे पाढ्यो, तीणने
 धीनकारो नही दीजेजी. ॥ कां० ३ ॥ नंदकने
 धर्म प्यारो न कहीजे, नही निर्मल कूलसु
 जातोजी; सांधां केरी हलकी कर्ता, लाजे जी-
 णरा तातोजी. ॥ कां० ४ ॥ दान तणो दातार
 न कहीजे, नही कहीजे सतवत सुरोजी; सोजा-
 वंत तिणने नहि कहीजे, जीणरे निद्यारो बल
 पुरोजी. ॥ कां० ५ ॥ रुपवंत निंदकने कहीजे,
 न कहीये पिंरुत ज्ञणीयोजी; बहू श्रुति तपसी
 नहि कहीजे, जिणने ज्ञांनीलेपे नहि गीणी-
 योजी. ॥ कां० ६ ॥ सहस्र मिथ्यात गयो नहि
 कहीजे, जलीमत सदा नही आश्जी; घणोः

उणने नहि कहीजे, दाप्यो बाधक पदवी
 मांझी. ॥ कां० ७ ॥ अवरसा दारी करेज निदा,
 आपतणो अधिकारोजी; केवलज्ञानी वेणज
 ज्ञाप्यो, तिको जमसी अनंत संसारोजी. ॥
 ॥ कां० ८ ॥ ठाणायंग सूत्रमे चाट्या, अजिण
 च्यार प्रकारोजी; क्रियाधारी होय नंदा मांके,
 ज्ञान ज्ञानी करे अहंकारोजी. ॥ कां० ९ ॥ क्रोध
 वमणठे तपस्या केरा, पीणमे करडे पारोजी;
 ज्ञोजन जीम्यां होय गई उलटी, प्रभु प्रत्यक्ष
 आपज ज्ञाप्योजी. ॥ कां० १० ॥ आप मांहे
 गुण कोइ पत्नीयो, तो कीजे घणी नरमांझी;
 मीत्रीजाव, सगलासुं राषे, ज्युं दीपे जगतरे
 मांझी. ॥ कां० ११ ॥ एसा जाव कोइ पुनवंत
 सुणसी, बुद्धवंतने सुणावजी, किरीया करर मांने
 तोके, ते जासे निरवांणोजी. ॥ कां० १२ ॥ संवत
 अठारे वर्स, वहोतरे, सेर जोधाणे चोमासोजी;

रीष-आसकर्ण जीण इणपर ज्ञाषी, गुण लीध
सुषपासोजी. ॥ कां० १३ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० ११५ ॥

॥ अलवेल्यानी राग. ॥

च्यार पहोरनो दिन हूवेरे लाल, च्या
पहोरनी रातरे: चतुरनर: दोय घनी करो आप
नीरे लाल, ज्यु परजव परची साथरे. ॥च०१॥
कोइ चतुर विचारीने चेतजोरे लाल: ॥टेर०॥
साध कहे नर सांजलोरे लाल, एले जनम
मतहाररे: च० दीणहीक सुषरे कारणेरे लाल
कांइ सहे जम माररे. ॥ च०को० २ ॥ घनीयन
आयु घटेरे लाल, थारे कवले उजो कालरे
सु: परजव जाणो एकलोरे लाल, कोइ न को
पोतानी संजावरे. ॥ सु० को० ३ ॥ कोइ राजा
हूंतो मोटकारे लाल, वरार जुपावरे. च०

मुठ्ठीयां वट घालतारे लाल, ज्यां नेहीले गया
 कालरे. ॥ च० को० ४ ॥ जे घाट हिमोले हिच-
 तारे लाल, बहु नर रहेता लालरे. च० मणों
 कटे नही जाणतारे लाल, ज्यांनेही लीधा
 माररे. ॥ सु० को० ५ ॥ आवाजी हठ चमेजी-
 सीरे लाल, मीळर वीठर जायरे. च० इण
 जवमे नही चेतीयारे लाल, ते परजव दुपीया
 थायरे. ॥ च० को० ६ ॥ मात पिता सुत काम-
 णीरे लाल, या अल्प दिवसनी वातरे. च०
 जोला नर चेत नहीरे लाल, पकीयाज माररे
 हातरे. ॥ च० को० ७ ॥ राजाहूंतो एक मोट-
 कोरे लाल, चढीयो फोजांले लाररे. च० मनमे
 आसार्थी घणीरे लाल, हुले सुंपेलाने माररे.
 ॥ च० को० ८ ॥ फोजवणी बहु फूटरीरे लाल,
 ले चढीयो चुपालरे. च० पेला तांइ पहूंत
 नहीरे लाल, वीचमेही कर गयो कालरे. ॥

॥ च० को० ९ ॥ जर्त वाहूवल जाणजोरे लाल,
 कोसां फोजां ज्यांरी लाररे. च० मर्ण थकी
 मरप्या घणारे लाल, त्याग दीयो संसाररे ॥ च०
 को० १० ॥ ढाल जली उपदेशरीरे, सांजलो
 नरनाररे. च० रूप रायचंडजी जोमी जुगतसुरे
 लाल, लावो लीजे लाररे. ॥ च० को० ११ ॥
 ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ न० ११६ ॥

॥ ज्ञानपंचमीनी सजाय ॥

पंचमी तप तुमे करोरे प्राणी, ज्युं निर्मल
 यामो ज्ञानरे; पहीली ज्ञान ने पिठी किरीया,
 नही कोइ ज्ञान समानरे. ॥ पं० १ ॥ नंदीसुत्रमे
 ज्ञान वषाण्यो, ज्ञानना पंच प्रकाररे; मती श्रुत
 अवधी अने मनपर्यव, केवल एक उदाररे.
 ॥ पं० . २ . ॥ मती अठावीस श्रुति चवदे,

अवधी असंख्य प्रकाररे; द्योय जेद मनपर्यव
 दाण्यो, केवल एक श्रीकाररे. ॥ पं० ३ ॥ चंद्र
 सुर्य ग्रह नक्षत्र तारा, तेज अठेस्युं आकासरे;
 केवलज्ञान समो नही कोइ, लोकालोक प्रका-
 सरे. ॥ पं० ४ ॥ पंच वर्षने पंचज मास, तप ए
 पूर्ण थायरे; ज्ञानावर्णि कर्मज तुटे, मुक्ती ले
 जावण जोयरे. ॥ पं० ५ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद
 करीने, माहरी पुरो उमेदरे; समय सुंदर कहे
 हुं पीण भागुं, ज्ञाननो पंचमो जेदरे. ॥ पं० ६ ॥
 ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० ११७ ॥

॥ धर्मरुचीनी सजाय लिषंते ॥

चंपा नगर नीरोपम सुंदर, जठे धर्मरुची शीष
 आवे; मास पारणे गरुअज्ञा लेइ, गोचरीये
 सीधावे. ॥ १ मुंजीवर० ॥ धर्मरुची शीष वंडु,

ज्वर पाप नीकाचीत संचीत; दूरगत दूर निकंदू.
 ॥ मु० २ ॥ निची द्रष्ट धरी धुंनी चाले, मुंनी-
 वर गुण जंमारो; जिहा अटण करता आवे,
 नागसीरी घरवारो. ॥ मु० ३ ॥ जहेर हलाहल
 करुवो तुंवो, मुनीवरने वेहरावे; सहेज उकरनी
 आवी हमघर, वाहीर कहो कूण जावे. ॥ मु०
 ४ ॥ पूरण जाणी पाठा वलीया, गुरु आगे
 आय धरीयो; कूण दातार मट्यौ रूप तुजने,
 पूरण पातर जरीयो. ॥ मु० ५ ॥ ना ना कहेतां
 मुंज वेरायो, जाव अधिक मन आणी; चापीने
 गरु कीदो निरणो, जहेर हलाहल जाणी. ॥
 ॥ मु० ६ ॥ अपज्य अज्ञोग्य कुटक समघारो,
 जो रूपजी तु घासो; निर्मल कोठो जेर हला-
 हल, अकाले मर जासी. ॥ मु० ७ ॥ अग्याले
 परठणने चाट्या, निरवद ठोरुरीषी आवे; बुंद
 एक परठी. तीण उपर, किड्यां वहू मर जावे.

॥ मु० ८ ॥ अल्प आहार ने हिंस्या मोटी,
 सरवथा अनरथ जाणी; उजल जावना जाइ
 मूनीसर, किनीयांरी करुणा आंणी. ॥ मू० ९ ॥
 देह परंतां दया निपजे, तो मोटो उपगारो;
 धीर धांरु सम जाणी मूनीवर, सगलाइ करगया
 आहारो. ॥ मू० १० ॥ प्रवल पिरु शरीरमे उठी,
 आवण सक्ति थाकी; पाडूगमण कियो संथारो,
 समता डढकर राषी. ॥ मू० ११ ॥ स्वार्थलिद्ध
 पहंतां शुद्ध ध्याने, माहा रमणी कवीमाण;
 चोसट मणरो मोती लटके, करणीरे परमाण.
 ॥ मू० १२ ॥ पवर करंता मूनीवर आवे, रीपजी
 कालज कीधो; धृगपरु इण नागश्रीने; मूनी-
 घरने विष दीधो. ॥ मू० १३ ॥ हुइ फजीती कर्म
 वहू वांधी, पहोती नरग मजारो, धनर धर्म-
 रुची मूनीवरने, करगया पेवोपारो. ॥ मू० १४ ॥
 पेंसठ साल सेर जोधाणे, सुषे कीयो चोमासो;

रतनचंद कहे ते मूंनीवरनो, नांम लीयां सीव-
वासो. ॥ मूं० १५ ॥ ईती संपूर्णम् ॥



॥ नं० ११८ ॥

संतोज्ञाइ कूवे ज्ञांग पनी, एकशरी हट नही
माने; सव मही आय अनीरे ॥ सं० १ ॥ वरु
घरांरीया वाजे सुंदर, वेस्यासुं जाय ज्नीरीरे.
॥ सं० २ ॥ काल मरजादा कुलरी लोपी, आ-
चाले गुमज जररे. ॥ सं० ३ ॥ सतगरु नाम
धरावेजी सगला, पीण इंद्रियां वश न करीरे.
॥ सं० ४ ॥ कहैत कवीर सुध धर्म न धाख्यो,
तो आगे नरग पनीरे. ॥ सं० ५ ॥ ईती संपूर्णः॥

॥ नं० ११९ ॥

मनारे तोने कीसवीध कर समजाउ, चेतन
थांनेकी; वार२ समजाउ: चे० टेरे० हस्ती होय

तो पकरु मंगाउः पाय जजीर ऊमाउंः मावत
 होय कर उपर वेसुं तोः आंकस देवस लाउरे.
 ॥ म० १ ॥ सोनो होवे तो सोगी मंगाउः करले
 तावदीराउंः ले फूंकणीयो फूंकणने वेसुं तोः
 पांणी करने चलाउंरेः ॥ म० २ ॥ लोह हूवेतो
 एरण रोपाउः दोय२ धवण धूषाउंः मार घणांरी
 घमचोल मचाउंः जंत्रीमी तार कढाउंरेः ॥ म०
 ३ ॥ ग्यांनी होय तो गाय रीजाउंः अंतर वीण
 वजाउंः कहेत कवीर सुणो ज्ञाइ साधोः जोतमें
 जोत मीलाउंरे. ॥ म० ४ ॥ ईती संपुर्णमः ॥



॥ न० १२० ॥

॥ दोहा ॥

नवमा अंग तीजा वरगमे, कया धनाना ज्ञाव;
 सांजलो चतुर नरां, धरी चीत उठावः ॥१॥
 वेरागी सीर सेहरो, धन धनो ऋषराय;
 तेह तणा गुण गांवतां, पातक डुर पुलायः ॥२॥

॥ ढाल १ ॥ रसीयानी रागः ॥

नगरी काकंदी होअती रलीयामणी, सहें

श्रावन उध्यांन हो; ऋवीकजनः परज्या लोक
सुषी तीण नगरमें, जीतशतरु राजान हो. ॥

॥ ऋ० १ ॥ ऋव धरीने हो ऋवीयण सांजलो,

टेरः ऋद्रा सार्थवाही तीहां वसे, धनसुं जीत
सके नही कोयहो. ऋ० तसघर धनो कवरजी

जनमीया, रुप देषी मगन होयहो. ॥ ऋ० ऋ० २ ॥

जोवन वयमे हो आयो जांणी करी, परणाई

वतीसे नारहो. ऋ० महेल तेतीसे हो लीला

कर रयो, नाटकना जीणकार हो. ॥ ऋ० ऋ० ३ ॥

घंटरस ऋोजन चीजां नवनवी, घणा दासीने

दास हो. ऋ० कोरु वतीसे हो सोवन दायजो,

वीलसे लील वीलास हो. ॥ ऋ० ऋ० ४ ॥

वीचरत वीर जिनेसर पांगर्यां, लपण सहेंश्रने

आठ हो. ऋ० वंदण आवी हो वारे पूरषदा,

लग रया धर्मना थाट हो. ॥ ज० ज्ञा० ५ ॥
 कर असवारी हो वंदण आवीयो, कोणक जेम
 धर कोरु हो. ज० पंच अज्जीगम सुधा साचवी,
 वांदे वे कर जोरुहो. ॥ ज० ज्ञा० ६ ॥ पेळी
 ढाल संपूर्ण थइ, समोसर्या जीनराय हो. ज०
 नगरीमें हगमग लागी अत्ती घणी, लोग टोले
 टोले जाय हो. ॥ ज० ज्ञा० ७ ॥

॥ ढाल २ ॥ तिण अवसर मुंनीराय. राग. ॥

धनो नामे कूंवार, वेठो गोष मजार; सुणजो
 चीतलाय, लोकांने जाता देषने. ॥ ए० १ ॥ कहे
 सेवगने एम, लोग जावे ठे केमः सुं० कूण
 उठव मेलो मंड्यो. ॥ ए० २ ॥ सेवग कहे जोकी
 हात, समोसख्या जगनाथ. सुं० पूरपदा जावे
 वांदवा. ॥ ए० ३ ॥ सुण सेवग नीवांण, वाली
 अमीय समांण. सुं० वांढवा मन उलस्यो. ॥

ए० ४ ॥ सकल सजी सीणगार, वहु लोगारे
 वार. सुं० जमाली जीम चालीयो. ॥ ए० ५ ॥
 यो जीहां जीनराय, पंच अजीगम साज.
 ० वेठो सनमुष वीरने. ॥ ए० ६ ॥ जगवंत
 उपदेश, काल घटे हमेश. सुं० जरामर्ण रोग
 ग र्यो. ॥ ए० ७ ॥ इथर संसारनी मांज,
 ीसी उनालारी सांज. सुं० समण वीधंसण
 हमी. ॥ ए० ८ ॥ मेलो मड्यो सराय, अजां-
 यो उठ जाय सुं० जीम वटाउ पावणो. ॥
 ए० ९ ॥ इथर कुटंव परीवार, फसीयो माला
 माल सुं० जमरा कमल तणीपरे. ॥ ए० १० ॥
 सांजल श्री जीनवांण, लागो वेरागनो वांण.
 सुं० धनो कहे कर जोभने. ॥ ए० ११ ॥ हूलेसुं
 संजम जार, ठोरु वतीसेइ नार. सुं० आउं
 आग्या लेकरी ॥ ए० १२ ॥ जापे श्रीजीनराय,
 जीम थाने सुष थाय सुं० जेजम करो देवाणुं

पीया. ॥ ए० १३ ॥ वांध्या दीन दयाल, एथई
वीजी ढाल. सु० माता पासे आवीयो. ॥ ए० १४ ॥

॥ ढाल ३ ॥ अलवेद्व्यानी ॥

घर जाई माताने इम कहेरे लाल, हुं लेसुं
संजमजार; सुणो मातजी हो, अज्ञा दीजे
मोत्रणीरे लाल. ढील म करो लीगार. ॥ सु० १ ॥
कीरपा करी दीजे आगन्यारे लाल. टेर० एह
वयण श्रवने सुणीरे लाल, मुर्ठागत थइ माय.
सु० सावचेत थइ चीतवेरे लाल आज्ञा दीधी कीम
जाय. ॥ सु० २ ॥ चारीत्र ठेवठ दोहीलोरे लाल,
टेर० पंचमाहावृत पालवारे लाल, करवो माथारो
लोच. ॥ सु० चा० ३ ॥ परुग धारापर चाल-
णीरे, लाल कणों उग्र विहार. सु० मोह माया दोय
जीपवारे लाल, शिलपालवो नववारु. ॥ सु०
चा० ४ ॥ उषद सावज ना करेरे, लाल मार्गडुकर

घोर. सुं: हरगज तो सुनायलेरे लाल, मत कर
 कूमी जोम. ॥ सु० चा० ५ ॥ पुत्र एकाएक माहरे,
 लाल अज्ञा देउ कीण रीत. सुं० ए कंचन ए कांमणी
 रे, लाल सुष नोगवो धर प्रीत. ॥ सु० चा० ६ ॥
 कुवर कहे माता सुणोरे; लाल गयो हुं नर्गनी गोदरे
 माय. सु० दूष अनंता मे सयारे, लाल कयोकठा
 लग जाय. ॥ सु० चा० ७ ॥ हरगज माने वर
 जो मतीरे, लाल ठोरुसुं माया जाल. सुं० माता
 वरजती थाके गर्दरे, लाल पूरी थइ तीजी ढाल. ॥
 ॥ सुं: की: ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ विठीयानी ॥

हरि लाला माहावल कूवर तणी परे, माता-
 जीसुं उतर दीधरे लाला; कृस्न थावरचानीपरे,
 मोटे मंमाणे दीष्या लीधरे. ॥१॥ बेरागी बेरागमे
 जीव रयो. टेर: गेणाने गांठा उतारीया, माता

॥ ढाल ५ ॥ तप वरुणे संसारमे ॥

सुकी ठाल काष्टनी पावनी, जेहवा पग दोय
 सुकारे; मांसने लोही सुसे गया, दीसे डूरवल
 बुपारे. ॥ १ ॥ धनो मुंनीसर तप तपे, सुरत
 जाय लागी मोषोरे; कायातो षंषर रुरावणी,
 सुको सर्पनो षोपोरे. ॥ ध० २ ॥ मुंग उरुद
 कोमल कूली, सुकी तेहनी फलीयांरे; तेहवी
 तो धना मुंनीराजनी, सुकी पगनी आंगली-
 यांरे. ॥ ध० ३ ॥ पंषी तो कागने मोरीया, तेहवी
 सुकी रीषनी जंघारे; गोमूतो गांठ वनस्पती,
 पीण प्रणाम चंगारे. ॥ ध० ४ ॥ साथलतो प्रीगु
 कूपलसारषी, कमीयां उंठ अर्द्धपगोरे; उदर तो
 जाणे सुकी दीवनी, पेट उंमो अथगोरे. ॥ ध०
 ५ ॥ आरासा उपरा उपरी मेलीया, जेहवी
 पासलीयां जाणोरे; हात कमासण जेहवा,
 पांसलीदारखी पीठांणोरे. ॥ ध० ६ ॥ ठाती

तो जाणो दूपनो वींजणो, वांहसुंकीषे जरु फली-
 यारे; हातनो पंजो वरुनो पांननो, कूलथफली
 सुकी आंगलीयारे. ॥ ध० ७ ॥ गलो तो सुको
 करवा जेहवो, माढी आंवकूली जाणोरे; सुकी
 जलोष होठ जेहवा, जीज्या सुकी साग पांनोरे.
 ॥ ध० ८ ॥ नाक वीजोरानी कातली, आंण्यां
 ठीद्र दोय विणारे; अथवा तो तारो परना-
 तीयो, कांन कांदा ठोत जीणारे. ॥ ध० ९ ॥
 सुको कोलो अथवा तुंवनो, जेहवो सुको रीषनो
 सीसोरे; काकना जुत काया कीसी, सुका वोल
 इकवीसोरे. ॥ ध० १० ॥ उदर कांन होट जीव
 ते, यामेचांमनसाजालोरे; सतरमे बोलांमे गाढ्या
 हारुका, नील दीसे महा वीकरालोरे. ॥ ध० ११ ॥
 ढीलो पीलांण तुरंगनो पागनो, तेहवा लटके
 दोय हाथोरे; आउवल हाले चालवे, धूजे कंपण
 वाय माथोरे. ॥ ध० १२ ॥ वाजे पीसाला तीलनी

सांकरी, तीम पमश हामोरेः ढांकी अगनतणी
 परे, मांहे तेज ठे गाढोरे. ॥ ध० १३ ॥ ढाल
 थइ ए पांचमी, मुंनी काया जोरकसीरेः परवा
 न राषी कांइ कीलरी, सुरत मुगतमे वसीरे.
 ॥ ध० १४ ॥

॥ ढाल ६ ॥ चोथा प्रत्येकतुधीना ॥

नगरी राजग्रही समोसस्था, जीणंदरायः
 करता उग्र वीहारः पुरपदा आवी वंदवाः श्रेण-
 करायः आयो वडू परीवारहोः ॥ १ ॥ धर्मकथा
 जीनवर कहीः श्रे० वांदे सीस नमायहोः दूकर
 करणी नीर्जराः जी० चवडे सहेश्र मांहे कूण
 थायहो. ॥ २ ॥ वीर जीणंद इम उचरेः श्रे०
 मुंनीवर चवडे हजारहोः दूकर करणी नीरजराः
 श्रे० धनो नामे अणगारहोः ॥ ३ ॥ कहे श्रेणक
 कारण कीसोः जी० कद्यो लारलो विस्तारहोः

वीरवांदी धनाजी तणाः श्रे० चर्ण वंदे वारंवार
 होः ॥ ४ ॥ सुकृत नरत्तव थेलयोः मोटा रीपः
 धन तुमचो अवतारहोः सेमुंष वीर वषांणीयाः
 मो० दूकर करणीरा करणहारहोः ॥ ५ ॥ नृपत
 गुण कीर्तिकरीः श्रे० वले वाद्यां जीनरायहोः
 राजा गयो नीजथांनकेः श्रे० मुंनीवरना गुण
 गायहो. ॥ ६ ॥ ठटी ढाल पुर्ण थइ. जी० विरा-
 ज्या नगरीरे वागहोः धनोजी जाग्या रातनाः
 मो० जाग्यो वदूत वेरागहो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ७ ॥ हूं वलीहारी जादवा ॥

धनोजी, रूपमन चितवे, तप कर तुटी हम-
 तणी कायके; वीरजीणंदने पुठने अज्ञाले संथारो
 ठायके. ॥ १ ॥ धन करणीहो मुनीराजनीः टेर०
 पोह उगे वाद्यां श्रीवीरनें, श्रीजीन अज्ञा दीवी
 फूरमायके, वीमलगीरीहो थीवरांसगे, चाल्या

समसत साद षमायके. ॥ ध० २ ॥ आयो सं-
 थारो एक मासरो, थीवर पाठा आया जीन
 जीरे गोरुके; जंरु उपगरण सुंपने, गोत्म पुठे वे
 करजोरुके. ॥ ध० ३ ॥ तप तप्यो षंदकनी परे,
 कहो सांमी वासो कहां कीधके; सागर नेती-
 सारे आउषे; नव महीनामे सवार्थसीध लीधके.
 ॥ ध० ४ ॥ माहाविदेह हमेसी जसी, विस्तार
 नवमा अंगरे मायके; सत ढालीयो संपुर्ण थयो,
 आसकर्णजी मुंनीगुण गायके. ॥ ध० ५ ॥ समत
 अठारे गुणसठे, वेसाषे वद पषरे मांयके; वीस-
 लपूर गुण गावीया, पुजरायचंदजीरे परसादके.
 ॥ ध० ६ ॥ उठो इधको जोकयो, तेहनो
 मीठ्यामीदूकरं होयके; बुधसारु गुण गावीया,
 सुत्रने अनुसारे जोयके. ॥ ध० ७ ॥ ईती
 धनाजीनो सतढालीयो संपुर्णम्: ॥

॥ नं० १११ ॥

(दोहा)

सासण नायक समरीये, त्रिसला देरानंदः
 कर्म हणी केवल लही, पाम्या परमाणंद. ॥१॥
 गोत्मसांमी गुणनिलो, लद्दी तणो जंमारः
 सुधे मन अराधता, पामे जवनो पार. ॥ २ ॥
 गुरुना चर्ण नमी करी, कहूं तपसीतणा गुण-
 ग्रामः ज्वीप्रांणी तुमे सांजलो, राषी एकचीत
 ठाम. ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ जलो मांरी जोरुरो ॥ ए राग ॥

जंवूछीपना जतमेरे, दीपतो सावरगामः अन
 धन लक्ष्मी अतीघणीरे, सोजा करी अजीराम.
 ॥ १ ॥ ज्वीकजन सांजलोरे, तपसी तणा गुण
 ग्रामः टेर० मोटा हूवा कला सीषीयारे, माहा
 चतुरसुजाणः परणी घरणी रुयनीरे, चाले आग्या
 प्रमाण. ॥ ज० २ ॥ संसारना सुष जोगवे,

जाण्यो इथर संसारः वेरागे मन वालनेरे, लीधो
 संजम ज्ञारः ॥ ज्ञ० ३ ॥ अमरसींगजी हुवा
 दीपतारे, ठेला तुलसीदासजी जांणः तसुपाटे
 कोजुरांमजीरे, चेलों रांम पीचांण. ॥ ज्ञ० ४ ॥
 तीणारे चेला हुवा दीपतारे, जसराज गुणवंतः
 चारीत्र पाळ्यो नीरमलोरे, सेणा सुधा संत.
 ॥ ज्ञ० ५ ॥ तपस्यातो कीधी अतीघणीरे, तीणरो
 सुणो वीचारः सतरे मास पमण कीयारे, दोदो
 मासी दोयवार. ॥ ज्ञ० ६ ॥ पांच पेंतालीस
 जाणजोरे, वासट कीया एकवारः दोय ठयां-
 लीस जांणजोरे, वावन कीया सुवीचार. ॥ ज्ञ०
 ७ ॥ एकावन इकतालीसथे कीयारे, दोय व-
 यांलीस वर्षाणः दोय इकीसने वीस दोयसु रे,
 च्यार पचीसज जांण. ॥ ज्ञ० ८ ॥ नववार पनरे
 कीयारे, सोले कीया एकवारः पनरे नवसोले
 एकठरे, वारे कीया दोयवार. ॥ ज्ञ० ९ ॥ आठ

वार दसतुमेकीयारे, पनरे अठाइ जाणः वांवीस
 कीया सुध जावसुरे, सांजलो चतुरसुजाण.
 ॥ ज्ञ० १० ॥ तपस्या तो कीधी अतीघणीरे,
 कयो कठालग जायः चोता आरानी वांनगीरे,
 पंचम आराने मांय ॥ ज्ञ० ११ ॥ गांम नगर-
 पुर विचरता, आया सूजटपुर मांयः नरनारी
 हरपीया घणारे, धर्मनी महिमा थाय ॥ ज्ञ० १२ ॥
 पांच सुंमतकर दीपतारे, पंषर कीदी देहः सार-
 वस्त सव काढनेजी, दीधो तनने ठेह ॥ ज्ञ०
 १३ ॥ चतुरवीध सिधने कहेरे, करसां संथारो
 सोय, साध श्रावग वरज्या घणारे, वरज्या न
 र्या कोय. ॥ ज्ञ० १४ ॥ साजा सुरा सेंठी करीरे,
 दीनो सथारो ठायः माघ शुक्ल तीथ अष्टमीरे,
 वर्स पच्यासीयारे मांय. ॥ ज्ञ० १५ ॥ संथारो
 हुवो दीपतोरे, धर्मध्यांन राजी थाटः हर्षज-
 ठाह हूज घणोरे, दीसे घणो गहे घाट. ॥ ज्ञ०

१६ ॥ नरनारी परगांमनारे, आवे दर्सन काजः
 सुरत देश राजी हूवेरे, धन मोटा मुंतीराज.
 ॥ ज० १७ ॥ सुस पचपांणवृत आषमीरे, क्रीधा
 वहुजनलोयः सुरवीर तपसीजीसारे, हूवा वीरला
 कोय. ॥ ज० १८ ॥ जसधारी जसराजजीरे,
 गुण तणो नही पारः धन धन मोटा मुनीवरुरे,
 नांम लीयां निस्तार. ॥ ज० १९ ॥ गुरुजाइ
 हुवा दीपतारे, वीर पुरुष वीर ज्ञांणः हुकम
 हुवा हाजर षमारे, न करे तांणातांण. ॥ ज०
 २० ॥ वीने अकल वीवेकमेरे, काहा चतुरसुजांणः
 कयो वचन लोपे नहीरे, सेवा करे वीरज्ञांणः
 ॥ ज० २१ ॥ सोजा लीधी जगतमेरे, तप जपमे
 रहे लालः च्यारुं सीध सेवे सदारे, उजा नीजर
 नीहाल. ॥ ज० २२ ॥ सवा सोले वर्स पाली-
 योजी, तपसी संजमजारः वाकी सर्व वर्स जाणजो
 रे, पांच वर्स लीयो आहार. ॥ ज० २३ ॥

तपसी तणा गुण वीनतीजी, कीनी किचीत्
 मात्रः संवत अठारे पीचीयासीयेरे, चैत्र मास
 विष्यात. ॥ न० २४ ॥ इसा ज्ञाव सुणी करीरे,
 कीनो श्रीजीनधर्मः रत्नचितामण धर्मठेरे, तुटे
 आतुइ कर्म. ॥ न० २५ ॥

॥ कलश ॥

जसराज मुनीसरः झूकर तपकरः जीनमार्ग
 उजवालीयोः दीन एकोतर केरो सथारोः सुध
 मने कर पालीयोः ॥१॥ आउ वर्स पेंसट केरोः
 जोगवी उजल मन एः संवत अठारे वर्स ठीया-
 सीयेः वेसाप वट तीज दीन एः ॥ २ ॥ दोय
 पहेर दुलीयां त्रीजे पहेरेः कालंमासे कालज
 कीयोः इसा मुंनीना गुण गातांः नवीक जनम
 गह गयो ॥ ईती जसराजजी मुंनीना गुण
 संपुर्णम् ॥

॥ नं० १२२ ॥

॥ नवकारमंत्रजीनो ध्यान धरो. ए. ॥

गुरु अमृत जीम लागे मीठा, मेतो नीठर
 नेणां दीठाः चीत नीत मारो दर्शन पावेः ॥१॥
 कोइ गुरुचीना ज्ञान नही पावे. टेरः गुरु सीरपो
 कोइ नही दाता, गुरु दीठा दील पावे साताः
 गुरु मीट्यां मीध्यात मीट जावे. ॥ को० २ ॥
 गुरकने एक अमर जमी, गुर मीलीया माने
 सुजनी घमी; मारे हर्षहीया मांहे नही मावे,
 ॥ को० ३ ॥ गुरतो मारे घटरे दीयो, गुरमी-
 लीया मानेतरे पूलीयो हीयो; गुरु नीतर चीता
 आवे. ॥को०४॥ गुरु मीलीया जाणे कल्परुंधो,
 गुरु मीलीयां जाग जावे जुषो; त्रपतत नमन
 होय जावे. ॥ को० ५ ॥ चितामण जीम गरु
 वाणी, गुर मीलीयां मीले नीरवाणी; फेर गर्जा-
 वास मांहे नही आवे. ॥ को० ६ ॥ गुरु मुज

हीवनांमे रया वसी, जीम रेसम मांहे रगरयो
 फसी; कीरमचीरो रंग कदे नही जावे. ॥ को०
 ७ ॥ गुरु सारषो नही उपगारी, गुररी वाणी
 माने लागे प्यारी; सुंणीयां जीवने समता आवे.
 ॥ को० ८ ॥ मेतो आज गुरांनो दर्शन कीधो,
 जाणे अमृतनो प्यालो पीधो; तुरत मन मांहे
 त्रपत होय जावे. ॥ को० ९ ॥ मे गुरुना चर्ण
 पुन जोगे जेव्या, गुरु मनरा सांसा, सहू मेव्या;
 अच जीवको मारो जोला नही पावे. ॥ को०
 १० ॥ गुर सीरपी वस्तु नही दूजी, गुरु मीलीया
 तरे सुध श्रद्धा सुजी; गुरु वीना मार्ग कूण पावे.
 ॥ को० ११ ॥ गुरु नीर्मल मोत्यांरी माला, गुरु
 कीस्तुरी सरीषा काला, माने सुगंधवस्त सदा
 सुहावे ॥ को० १२ ॥ गुरु मारा ज्ञानसुंजरीया,
 गुरुकोरु जवारा, कर्म हरीया, गुरु मुक्त मेलमे
 लेजावे. ॥ को० १३ ॥ गुरु मुष दीठां हुवे सुष

साता, रहीजो गुरांने वचने रंग राता, गुणवंत
 गुरांना गुण गावे. ॥ को० १४ ॥ गुरु दर्शन
 मारे नयणे वसीयो, जीम मोरमगन मेहरो,
 रसीयो, पीण मेह मोररे माग्यो नही आवे.
 ॥ को० १५ ॥ गुरु मुप दीठां हुवे रंगरलीयां,
 जीम चीत हरणी चंपारी कलीयां, जीम जोगी
 जमररे मन जावे. ॥ को० १६ ॥ सपरे मन
 कीजो गुरुनी सेवा, गुरना कांने मत सुणजो
 केवा, निदक नयणे दीठां नही सुंहांवे. ॥ को०
 १७ ॥ गुरुना गुण नही जावे कया, पुजरायचंदजी
 कहे चाळं गुरुनी मया, धनशुजीके गुरुने रिंजावे.
 ॥ को० १८ ॥ संवत अठारे चालीसे पेमो,
 सांमीये गाममे धर्मनो पेमो, जठे साध साधवी
 आवे ने जावे. ॥ को० १९ ॥

॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ न० ॥ १२३ ॥

शास्त्रका व्याख्यानः समाप्त होवेः जत्र सव
श्रावगः पमे होकरः बोलनेका खट

⊗द्रव्यः लिपंते ॥⊗

खटद्रव्य जहांमे कह्यो ज्ञानर, आगम
सुंणत वर्षाणः पंचास्ती काया नव पदारथ, पंच
जाण्या ज्ञान. चारीत्र तेरे कया जीनवर, ज्ञान
दर्शन परधान ॥ १ ॥ जो शास्त्र नीत सुणो
ज्वीयण, आणे सुद मन ज्ञान. टेरेः चोवीस
तिर्थकर लोक मांही तिरण तारण जहाज नव
वासु नव प्रती वामुदेवा; वारे चक्र वृत जाण,
वलदेवनवसव, हूवा त्रेसट, घणा गुणांरी घान.
॥ जो० २ ॥ च्यार देसना दीवी जीनवर, कीयो
पर उपगार, पंच अणुवृत च्यार शिक्षा, तीन
गुण वृतधार, पंच सवर जीनेसर जाण्या दया
धर्म निधान. ॥ जो० ३ ॥ अंग इग्यारे उपंग

वारे, वारमो इष्टीवाढ जाण, चवडे पूर्व केरी
 विद्या, श्रीजीन वचन प्रमाण, जे कोइ अराधे
 ज्ञवी ज्ञावसेती, थासे पढ नीखाण. ॥जो०४॥
 अवर कहां लग करु वर्णव, तीनलोक प्रमाण,
 सुणत पाप पुलाय जावे, थाय पदनी खाण,
 देव वीमांणीक मांहे पदवी, कही पंच परधानः
 ॥ जो० ५ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० १२४ ॥

श्रावग फोगट नाम धरावे रे, दील मांहे
 जरा दया नहीं आवे: टेरे: होको तमाषुसी
 गरेट चीलम पीवे, एतो कंदमूल करुण पावे;
 ज्ञद अज्ञदना जेढ न जाणे, त्यारे ज्ञांगना
 रगना लगावे. ॥ श्रा०१ ॥ अणठांण्यां पणीमां
 पके, त्यारे ज्ञेसां जीमरोल मचावे; होलीयांमे
 धेले ने गेरीयांमे गावे, यांने सर्म जरा नहीं

आवे. ॥ श्रा० २ ॥ श्रावन ज्ञाद्रवो आयो
 मेवानी जाउ, कुंगर चक्र जावे; कीकीयां
 गजैयाने मारे गढैया, गोटां करर पावे. ॥ श्रा०
 ३ ॥ पट्टु प्रवीना त्याग न जाणे, एतो धर्म-
 स्थाने नही आवे; परनारीसे प्रीत लगावे,
 ते तो वेड्याने घर जावे. ॥ श्रा० ४ ॥ आयो
 दीन धंधामांहे पोवे, अने सांज पड्यां रोटी
 पावे; कीकी कन्नेरी मोर कागला, रात पड्यां
 सुइ जावे. ॥ श्रा० ५ ॥ सुलीया गुलीया अनाज
 परीदे, एतो पापे पिरु जरावे; इणजवको तो
 लालच करे, पीण मरीयने डूर्गती जावे. ॥ श्रा०
 ६ ॥ अमल मगावे ने पेढीय चपावे, एतो नीला
 फूल मरावे; षोकोजी केवे इण पोटलाने, सादू-
 जी केम समजावे. ॥ श्रा० ७ ॥ ईती संपुर्णम्:॥



॥ नं० १२५ ॥

॥ असवारीनी रांग ॥

धना मुनी धन मानवजव पायो, श्रीमुष
 युं फूरमायोः ॥ ध० टेः ॥ श्रेणक पूढे वीरजी
 ज्ञाषे, उत्तम मुनीश्वर साराः रजमांहे तज हेत
 रतमजोगे, इधक धनो अणगारा. ॥ ध० १ ॥
 श्रेणक राजा आत्महीत काजा, धना मुनीपे
 आवेः सीस नमावे गुण मुष गावे, जोतां तृपत्त
 न थावे. ॥ ध० २ ॥ नार वतीसे तजी अंप-
 ठरसी, धन वतीसे कोमोः संसारने पुठ दीवी
 मुनीवरजी, सीवपूरमाहे दोमो. ॥ ध० ३ ॥
 निरंतर तप वेलेर, पारणे उठीत आहारो; वणी
 मग काग स्वांन नही वंढे, कीम तुम कंठ
 उंतारो. ॥ ध० ४ ॥ चवढे हजार मुनीसरमाहे,
 आपने वीर वषाणोः दर्शन आपनो पुनवंत
 पावे, मे पीण आज पीठांणो. ॥ ध० ५ ॥ वार

इकीस जलमांहे धोइ, ते पिरु षाइ जल पीवो,
 एसो तप सुणतां उर मेरो कंफे, धनर थारो जीवो.

॥ ध० ६ ॥ नव मास लग सजम पाली, स्वा-
 र्थसीद्ध मुनी जावे: रामचंद्र कहे एसा मुनी-
 वरजी, क्यु नही सुक्ति सीधावे. ॥ ध० ७ ॥
 ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० १२६ ॥

॥ अथ कीसनांजी माहाराजनो शिलोको ठे ॥
 सरसती सीवरु माता सुपदाइ, सुद्धी बुधी
 दीजो सारदा माइ: केशुं सीलोको कपटने
 त्यागी, हुवा कीसनाजी मोटा वरुजागी. ॥१॥
 जीणरा गुण तो जुगतीसुं गावुं, सारदमाताने
 सीस नमावुं: पीयर कोटनी प्रगतो सवांणो,
 मजल सासरो सुंताघर जांणो ॥२॥ वेटी जस
 रुपरी बुदरी सागर, डेलनीया कूजमे दीसेउ

जागरः माता हस्तु देतश्रु पूत्री जाइ, जीणने
 जसरुपजी मजल परणाइ. ॥ ३ ॥ मुतावालो
 जीम जलरा वासी, जीणरे न्जारज्या धर्ममे
 साचीः साची न्जारज्या वकी सुन्नकारी, पुत्र
 जनमीयो जवरो जयकारी. ॥ ४ ॥ अवल वरस
 पांचमो आठो, लीनो वालोजी सुरगमे वासोः
 वीचरता मुनीवर पुजजी आया; श्रावग उठे ने
 सामा जव धाया. ॥ ५ ॥ वांणी इमृतसुं दीनो
 वर्षाण, काया मायारा कूमा कमठांणः दारा
 सुत बंदव जुठी जीदगानी, नवसागरमे जुळे मत
 प्रांणी. ॥ ६ ॥ लेसी संजम तो मुगतपद पासी,
 मीनषा जनम फेर कव आसीः एसो उपदेस
 रुगनाथने लागो, जाणे सुतो कोइ निर्दसुं
 जागो. ॥ ७ ॥ सार असार संसार कूमो, जपे
 जीनवरने सोही नर सुरोः हूकम देरावो संजम
 पालुं, दोष वयालीस सादूरा टाळुं ॥ ८ ॥ धन

श्रे वेटा तुतो वरुजागी, थारी तो जोत जिन-
 वरसुं लागी: आंणे मावेटा सजम लेसां, पाली
 परवाते खाने होसां. ॥ ९ ॥ माहासतीयांजी
 धर्ममे धीर, नामे ठोगांजी मोटा हमीर: वांटे
 रुगनाथ वे कर जोनी, सुणजो सतीयां वीणती
 एक मोरी. ॥ १० ॥ साचो संजम मारे चित
 लागो, दूप ढालीद्र दर्शनसुं जागो: पाली पुज
 पुनमचंदजी पदास्था, मनरा मनोरथ सगलाजी
 सार्या. ॥ ११ ॥ समत उगणीसे अठावीसो
 जाणुं, वेसाय सुदरी आठम वषाणुं: दोनुं मा
 वेटा दीप्या सीरधारी, उत्तमपुर सारी जाळ
 वलिहारी ॥ १२ ॥ मुंनी दयाल सजम लीनो,
 सालेचा कूलने उजवाली दीनो: पय शुक्लने
 आठम अनुसार, जीण दीन सतीयांजी कीनो
 विहार. ॥ १३ ॥ गाम नगरपुर विचरता जावे,
 केतां कवी कोइ पार न पावे: काया वृद्ध की

सनांजीरी जाणो, पांच ठाणेंसु कीनो पीयांणोः
 गढ जाळंधर सेर सुज्जकारी. ॥ १४ ॥ सुंदर
 सोज्जंता श्रावग नरनारी, पोसा पक्कीकमणा
 समायक राजपाटः थानकमे रेवे सदा मदथाट,
 पनरे वरस एक थानक वीता. ॥ १५ ॥ सीवपुर
 जावणरी लागी मन चिंता, वर्स तीहूंतर महा
 सुदवारोः दस दीनारो आयो संथारो, फागण
 वद तीजने संथारो सीनो. ॥ १६ ॥ कीसनाजी
 वासो सुर्गमे लीनो, वाजा गाजाने वेकूटी
 वाजे, ढोल नगारा नोपत वाजेः उमे गुलाल
 जाळर ऊणकारो. ॥ १७ ॥ कीसनाजी पुगा
 सर्ग मजारो, ओठव अपार कीनो नरनारीः
 चंनण काष्ठसुं काया सुधारी. ॥ १८ ॥ अबतो
 टोळांमे सतीयांहे च्यार, वरु वरदूजी गुणरा
 ज्ञकारः सोवे सीणगारांजी जवरा गुणजाण,
 रेणी करणी तो रतनारी पांन. ॥ १९ ॥ दीपे

दीपांजी सारग प्रांणी, देवे वषाण मधुरी वाणी:
 वरती वीरांजीरी सदा सुन्नकारी, कीनो चूनोजी
 अठाइ तप ज्ञारी. ॥ २० ॥ नवी आरज्यां बलज्ज
 कुमारो, विद्या ज्ञणे सूत्र अनुसारो: वरस अ-
 तुतर असाढ मासो, एक कोटकी कीनो
 चोमासो. ॥ २१ ॥ कांने सुणीने केसव लालजापी,
 सुणजो श्रावगां कही हूं साची: ज्ञाव धरीने
 ज्ञक्तिसुं गावे, सीपे सिलोको सदा सुप पावे.
 ॥ २२ ॥ ईती सपुर्णम्. ॥

॥ न० १२७ ॥

॥ कर्म समो नही कोइ ए राग. ॥

सासन नायक वीर, जीनेसर, मार्ग सुद
 वतायो; जीण मार्गने उथापी पापी, जाणे
 इंद्रजाल रचायो हो. ॥ १ ॥ कूमती ज्ञावना
 कवासु आइ: देर: एसी आगे कीणहीन ज्ञाइ

थारा संजममे लाय लगायने, आ कांइ मांकी
 ठगाइरे. ॥कू० २॥ डव्ये सादूनो संगज धरीयो,
 दोषीलो आहार जलावे; ग्रहस्थोरे घर आरंज
 नीपजावे; पठे निदवने ज्ञावना ज्ञावेरे. ॥कू०३॥
 ज्ञावना सुणके मन होयगो राजी, जाणे आज
 माल हात आवे; ऊटपट पातरा जोलीमे
 घाली, लारे चलीयो जावेरे. ॥ कु० ४ ॥ नेत-
 रीयो पावणो आवे, तेनीया निदक जावे; आ-
 हाररे मांही दोष लगावे, जीज्या वस नही
 थावेरे. ॥ कु० ५ ॥ श्राध वालाको वसबुलावे,
 काग उमंता आवे; कागला परे जीणघर ताके,
 नीदव ज्ञावना ज्ञावेरे. ॥ कु० ६ ॥ कीण घर
 लपसी कीण घर सीरो, जीणरे लाग रया ठे
 बीरा; थोमीसीवेला पठे आइजां, जीतरे सांमीजी
 रहीजो धीरारे. ॥ कु० ७ ॥ उन उंगारी फलीयां
 लेजावे, वस्तु काची जो ठेपे; हेटो वेटने वटवा

लागे, धरणो दीयो कीण लेपेरे. ॥ कू० ८ ॥
 ग्रस्थी पांवणो घरे ले आयो, चावल उतारण
 रया वाकी; जीतरे पांवणा वारे वेठावे, निन्व
 टेकज रापीरे. ॥ कू० ९ ॥ पांवणो वाट जोवे
 रसोश्नी, दोनु वेठा करेह थाइ; पावणो पठे
 पेली थाने धपावे, याकरी थे अधिकाइरे. ॥ कू०
 १० ॥ रांकी जुनी होवे एकली वाइ, घरपुलो
 मेढ्यो नही जावे; दूजाकना सुंनेतो दीरावो,
 सांमलीवाइ जावना जावेरे. ॥ कू० ११ ॥

॥ ईती संपूर्णम्: ॥

॥ नं० १२८ ॥

देष्यो२ वीदाता तेरो अन्यावः ॥ दे० टेर० ॥
 बालकको वीदवा कर देवे, जुनीया सुषसे माने
 सुराकू नीरधन कर देवे, मुरष मोजा माणे
 ॥ दे० १ ॥ पारसके गले पथर बांधे, मुरषे

गले हंस; सुंवको, वहू पुत्र देती, दाताके नीर-
 वंस. ॥ दे० २ ॥ चंनण काष्ट सुगंधी अठी,
 रतनागर जल धारा; सोना सुंदर नाह सुगंधी,
 किस्तुरी रंग काला, धोलार कीया बुगलेका
 वनाव. ॥ दे० ३ ॥ केतुम लिपतां निद्रा आइ,
 के तुम वीजीया षाइ; फतेराज कर जोरु
 वीनवे, जइ वावली कांइ. उलटा उलटातो
 अंटमतीना चलावेरे. ॥ दे० ४ ॥

॥ इती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ११७ ॥

हरि मारा जीवा पटब्यारे, तु सतनी पेती
 करजे; जेहथी जवसागर तुं तरजेरे. ॥ मा० १ ॥
 आत्मरुपी जुमी करीने, षम्या षातमांही जरजे;
 मोह मायानो सुर काढीने, कर्णिनो कोदालो

हात धरजेरे. ॥ मा० २ ॥ संवर रूपी पाज
 वांधने, आश्रव उजासु परहरजे, कसाय कचरो
 डुर करीने, आत्मचुमी सुध करीजे. ॥ मा० ३ ॥
 धर्म नामना धोरी करने, सजम हल जोतरजे;
 जतनारूपी जोतर वालीने, सुरता रास हाते
 धरजे. ॥ मा० ४ ॥ वीवेकनो वावणीयो लेइने,
 सत्य वीज बहु वाइजे; ज्ञानरूपी उग्या अंकूरा,
 संवेग वारु तु करजे. ॥ मा० ५ ॥ मनरूपी
 मालौ घालीने, टोयो तनरो करजे; सदगुणरूपी
 गोपण लेइने, गुरुगम गोला फेकजेरे. ॥ मा०
 ६ ॥ मोहकरूपी मालज पाकयो, ग्यांनरी गुणां
 नरजे; पापनी पसुना परीहरने, सुज ध्यान तु
 धरजेरे. ॥ मा० ७ ॥ काम क्रोध मद मोह
 ठगारा, पाप चोर परहरजे; अनंतगुण आतम
 नरीने, सीवरमणी तु वरजेरे. ॥ मा० ८ ॥ एहवी
 रीते पेती करने, सुज पजानोतु नरजे; आत्म

गुण प्रगट करीने, गज मुंनीगुण धरजे. ॥मा०ण॥

॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० १३० ॥

॥ गरवानी राग ठे. ॥

जीनंद थारो आसरो हम लीनोजी, मेतो
लीनो सुधारस पीनो. ॥ जी० टेरः ॥ श्री चिता-
मण सुणो सांमीजी, तुमे पुरण अंतरजामीजी;
ज्वीयण जीवना वीसरामीजी, में प्रणमुं सदा
सीरनांमी. ॥ जी० १ ॥ मे पुन उदे प्रभु पायो
जी, घर आंगण सरुतरु फलीयोजी; जीन मुष
मंगल गायोजी, तनमन हरष सवायोः ॥ जी०
२ ॥ मेतो पातक कीनो ज्ञारीजी, सेव्या अना-
चार अविचारीजीः अनर्थ ज्ञाप्या माहा
दुषकारीजी, सोथे देष रया अवतारो. ॥ जी०
३ ॥ मे कूरु कपट बलढायोजी, सुंस लेशने

दोष लगायोजी; फीर पीठतावो नही लायोजी
 एसो अकर्म काम कमायो. ॥ जी० ४ ॥ पं
 आश्रवमे रंगरातोजी, क्रोध मान माया लोच
 मातोजी; रागद्वेष सुजोसज पातोजी, तोस
 अष्टादशको तांतो. ॥ जी० ५ ॥ तुमे अग
 जन अवीकारीजी, तुंमने सहू अर्ज हमारीज
 डुर कीजो गुण नमारीजी, जीउश कोरु बल
 हारी. ॥ जी० ६ ॥ तुमे त्रीचुनके सीरवाजोर्ज
 जीगमीग जोतमांहे गाजोजी; नवशरा पोस
 जाण कीवाजी, वंठीत सफल करो माहाराज
 ॥ जी० ७ ॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ नं० १३१ ॥

हारे जीवा तने वरजुचुं वीखीयारस प्याल
 मत पीजे मेरे जीवा तोय वरजुंठुं. परनारीन
 संगत मत कीजे: देर: नारी नागण सारपीरे

मत कीजे: तौने खीणमें करे खरव. ॥जीवा०१॥
 इणन्नव राजा कंससीरे. मत० थारी उतरजांय
 सब आव. ॥ जी० २ ॥ पदम नाम हूरमत
 गइरे म० गया कीचकरा प्राण ॥ जी० ३ ॥
 एह मरने पहुंता नारकीरे. म० ज्यांने मारे ठे
 जमरांण. ॥ जी० ४ ॥ लंकागढको अधप तीरे.
 म० जीको ले गयो रघुपतकीनार. ॥ जी० ५ ॥
 लठमण हाथे मारीयोरे. म० वोतो पहुंतो
 नरक मजार. ॥ जी० ६ ॥ जीन रूपने जीन
 पालजीरे. म० ए बंधव होता दोय. ॥जी० ७॥
 रेणादेवीरे वस पनीयारे. म०लीजो सूत्र झाता
 जोय. ॥ जी० ८ ॥ जिन रूप सांमां जोवीयोरे
 म० लीयो त्रिसुले पोय. ॥ जी० ९ ॥ मरने
 माठीगत गयोरे. म० ओ न्नवश् दुषीयो होय.
 ॥ जी० १० ॥ कंड्रप कंड्रप वस पनीयोरे. म०
 लायो म्हवलकी पटनार. ॥ जी०११ ॥ मलीया

सतीवंठयो नहीरे. म० जिणरी वलजल होय
 गइ राष. ॥जी० १२॥ इत्यादिक बहुला हुवारे.
 म० केइ वनाशरा जान. ॥ जी० १३ ॥ परनारी
 वसकटमुंवारे. म० इण जुगमे हुवा हेरान.
 ॥ जी० १४ ॥ धन मुनीवर संसारमेरे: गुण कीजे:
 ये दीजो सूपात्र दान. ॥ जी० १५ ॥ कनीराम
 कहे जुगतसुरे. गु० इणसुं पामो मोक्षनिधान.
 ॥ जी० १६ ॥ लगणीसे चालीसमेरे गु० ठोमो
 परनारी दुखदाय. ॥ जी० १७ ॥

॥ न० १३२ ॥

॥ राग प्रज्ञाती. ॥

घरके लोग अनारी जया, घरके लोक
 अनारीरे० टेर० ममता माता हे दुख दाता,
 जैसें नागण कालीरे० लोचन वाप हे वमोज
 जागर, उसने राहा वीगारीरे० ॥ धर० १ ॥

दुवध्या मासी जव जव आवे, दील न राखे
 करारीरे० क्रोध भ्रात हे घेटो दुरगुण, हे उस-
 का सीरदारीरे० ॥ घर० २ ॥ कर्म कपुत हे
 धरमे तीनुं, कुमती नार मतवारीरे० मोह कांम
 काहे दोनुं हे, वजत वमे वाटपारीरे० ॥ घर०
 ३ ॥ डुर बुधी हे साली घरमे, रेतीतार मता-
 रीरे० सुमत सवी उंरेवण न देवे, घरसे देत
 नीकालीरे० ॥ घर० ४ ॥ कुल गुरु हे अवोवेक
 हे निसाचर, वेहि पंक्ति आचारीरे० यो परि-
 वार नस्यो घर नितर, फीर क्या गती तुंमां-
 रीरे० ॥ घर० ५ ॥ ब्रह्मदत्त धिज ऐसे घरमे,
 केसें मीले वीहारीरे० शिवानंदसें सतगुरु सेवो,
 तो होय हंस उवारीरे० ॥ घर० ६ ॥

॥ ईति संपुर्णम् ॥

॥ नं० १२७ ॥

ग्यांन नही पायारे नहीं पाया, तनें कुगुरु
 कांन लगाया० ॥ ग्यांन० ॥ परमतके परसग
 वीचमें, ज़रमत जनम गमाया; साचा सतगुरु
 मुजत नांही, हीये हाथ नही आया० ॥ ग्यांन०
 १ ॥ अचके अवसर क्युं नही चेतें, लंपट
 लोन्न लोन्नाया; धीन्नी रमेमिलसी मही, पर
 ज़वमे पीचताया० ॥ ग्यांन० २ ॥ मेरो चित
 एक जिमराज चर्णमे, उर मनमे नही ज्ञाया;
 जिमतिम करने पार उतारो, वेठो चरनकी
 ठाया० ॥ ग्यांन० ३ ॥ जीनटास केणेको ग-
 रजी, करणेकी नही काया, ठग खाणेका दांत
 कपटका, लोकाने और वताया० ॥ ग्यांन० ४ ॥

॥ इति सपुर्णम् ॥

॥ अथ चोवीसी क्षीपतेः ॥

॥ उमादे ज्ञटीयांणीना गीतनी ए रागः ॥

श्री आदेश्वर स्वामी हो, प्रणमं शीर नांमी
 तुम ज्ञणी, प्रजु अंतरजांमी आप, मोपर मेर
 करीजे हो मेटी जे चिंता मरन तणी मारा
 काट पुरा कृत पाप० ॥ श्री० १ ॥ आद धर्म-
 नीकीनी हो, ज्ञर्तक्षेत्र सर्पणी कालमे, प्रजु
 युगद्वपा धर्मनोवार, पहीला नरवर मुनीवरहो,
 तिर्थकर जीनद्वारा केवली, प्रजु तीर्थ श्याप्या
 च्यार० ॥ श्री० २ ॥ मामरु देव्या थारी हो,
 गज होदे मुक्ती पदारीया, तुम जनज्याही पर-
 मांण, पीता नाज महाराजा हो, ज्ञव देवतणो
 करी नर थया, प्रजु पांभ्या पद निरवाण० ॥
 ॥ श्री० ३ ॥ ज्ञरतादीकसो नंदन ॥ ॥ पूत्री

प्रभुतीन नूवनमे वीष्यात० ॥ श्री० ४ ॥ इत्या-
 दिक वहू तीरीया हो जीन कूलमे प्रभु तु
 मजपना, आगममे अधीकार, ओर असंख्या
 तारया हो, उदारया सेवग आपना, प्रभु सरणां-
 रोआधार ॥ श्री० ५ ॥ असरण शरण कही जेहो,
 प्रभु वीरद वीचारो साहवा, अहो गरीवनीवाज,
 शरण तुमारी आयो हो, हू चाकरनीज चरणां
 तणो मारी सुणीये अरज अवाज० ॥ श्री० ६ ॥
 तुंम करुणा कर ठाकूरहो, प्रभू धर्म दीवाकर
 जग घणी, प्रभू नव दूपडुकत टाल, विनयचढने
 आपोहो, प्रभूनीज गूण सपत स्वासती दीना-
 नाथ दयाल० ॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल २ कूवीशनए ॥

श्री जीन अजीत नमो जयकारी, तु देव-
 नको देवजी, जीय सत्रु राजाने वीजीया रांणी
 को, आत्म जात तुमेवजी० ॥ श्री० १ ॥ पूजा

देव अने एज गमे, ते मुज दाय न आवेजी,
 तहमने तह चीते हमने, तुंही जइधक सु-
 हावेजी० ॥ श्री० २ ॥ सेव्या देव गणा जवश्मे
 सो पीण गरज न सारीजी, अवके श्रीजीन
 राज मील्योतुं, पूरण पर उपगारीजी० ॥
 ॥ श्री० ३ ॥ त्रीश्रु वनमे जस उजल तेरो, फे-
 लरयो जग जांणेजी, वंदनी कपुजनी कस कलको,
 आगम एम वषांणेजी० ॥ श्री० ४ ॥ तुं जग-
 जीवन अंतरजामी, प्राण आधार पीयारोजी,
 सब वीध लायक सत सहायक, जक्त वत्सल
 वृध थारोजी. ॥ श्री. ५ ॥ अष्ट सीध नवनी-
 धको दाता, तो सम अवरन कोयजी, वधे तेज
 सेवगको दीनश् जेथ तेथ जय होयजी. ॥ श्री.
 ६ ॥ अनंत ज्ञान दर्शन संपती लेइ, शजगयो
 अवीकारीजी अवीचल जक्ती वीनेचंद, कूद्यो
 तो जांणुं रीजवारीजीः ॥ श्री. ७ ॥

॥ ढाल ३. ॥

आज मांरां संज्ञव जीनके, हीत चीत
 सुंगुण गासांराज, मधुर २ सुर राग अलापी,
 गहरे साद गूजा सांराज. ॥ आ. १ ॥ नृपजी
 तारथ सेन्या रांणी, तसु सुतसे वगथासां राज नव
 धाजक्तजाव सुंकरने, प्रेम भगन होयजा सांराज
 ॥ आ. २ ॥ मन वचकायलाय प्रजुसेती नीस-
 दीन सासज सासां, राज संज्ञव जीवनकी मोहन
 मुरत, दीये निरतर ध्यांसां राज. ॥ आ. ३ ॥
 दीनदयाल दीनबंधवके, पांता जादक हांसां राज
 तन धन प्रांण समरपी प्रजुके, इन परवे गरिजां
 सांराज. ॥ आ. ४ ॥ अष्टक रमदल अती जो-
 रावर, तेजी त्यां सुषपासां राजजालम मोहमार
 फोजांमे, साहस करी जगासांराज. ॥ आ. ५ ॥
 उवट पंथ तजी दूर गतको, सुज्ञगत पथ संज्ञासां
 राज आगम अर्थ तणे अनुसारे, अनुज्ञव

दसा अज्यां सांराज. ॥ आ. ६ ॥ कांम क्रोध
मद लोत्त कपट तज, नीज गुण सुंलीवलासां
राजवीनेचंद संजव जीन तुठां आवागमण मीटां
सांराज. ॥ आ. ७ ॥

॥ ढाल ४. ॥

श्री अज्ञोनंदन दुप नीकंदन, वंदन पूजन
जोगजी; आसा पूरो चिंता चूरो, आपो सुप
आरोगजी० ॥ श्री० १ ॥ केइ सेव करे शंक-
रकी, केइ जजे मुरारजी, गणपती श्रुय उजा
केइ समरे; हूंसी मरुं अवीकारजी० ॥ श्री० २ ॥
संवर रायसी धारत रांणी, तेहनो आतम जा-
तजी; प्राण पीयारो साहेव साचो, तूंहीजी
सातने तातजी० ॥ श्री० ३ ॥ देवकृपा सुंपां
मेली ठमी, सोइन जवको सुषजी; तोतूं ठांश्न
जव परजवमे, कडे यनपांमे दूपजी० ॥ श्री० ४ ॥

यद्यपी इंद्र नदनी वाजेः तदपी करतनी
 हांलजीः तुं पूजनीक नेरेंद्रइंद्रकोः दीन दयाल
 कृपालजीः ॥ श्री० ५ ॥ जवलग आवा गमण
 न बुटेः तवलग ए अरदागजीः संपत सहीत
 जान समगत गूणः पाउ इढ वीसवासजीः
 ॥ श्री० ६ ॥ अधमउ धारण वीरदती हारोः
 चावो इण ससारजीः लाज वीनेचंदकी अवतोनेः
 जवनीदी पार उतारजीः ॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल० ५ ॥

सुमतजीने सरसाहवोजीः मेयरथ नृपनो
 नदः सुमंगला माता तणोजीः तनय सदा
 सुषकदः ॥ १ प्रभु त्रीभुवन तीलोजीः ॥ सुमतीश
 दातारः महामहीमां नीलोजीः प्रणमु वार
 हजारः ॥ प्र० २ ॥ मधू करनो मन मोहीयोजी
 मालती कूसम सुवासः त्यूंमुज मन मोयो

सहीजी: जीन महीमा सुवीलास: ॥ प्र० ३ ॥
 ज्युं पंकज सुर्य मुपीजी: वीकसे सुर्य प्रकाश
 त्यूं मुज मन गहगहेजी: सुनी जीन चरी
 हूलास: ॥ प्र० ४ ॥ पपश्योपी उर करेज
 जान वर्षा ऋतु जेह: त्यूं मोमीन नीशदी
 रहेजी: जीन समरणसुं नेह: ॥ प्र० ५ ॥ का
 जोगनी लालचाजी: थीरता न धरे संन: वी
 तुंम जजन प्रतापतीजी: दाजे दूर मत वं
 ॥ प्र० ६ ॥ जवनीध पार उत्तारीयेजी: ज
 बल्ल जगवांन: वीनेचंदकी वीनतीजी: मां
 कृपानीधांन: ॥ प्र० ७ ॥

॥ ढाल ६ ॥

पदम प्रभु पावन नांम तीहारो: पतीत उद
 हरण हारो: ॥ प० टेक ॥ जद पीजी वर ज्नी

कसाइः अती पापीष्टज मारोः तद पीजी वहिं
 स्यात्तज प्रञ्च जजः होत हींस्यासु न्यारोः ॥
 प० १ ॥ गौत्रांमण प्रमदा वालककीः मोटी
 हिस्या चारोः तेहनो कर्णहार प्रञ्च जजलेः
 होत हिंस्यासु न्यारोः ॥ प० २ ॥ वेश्य चूगल
 ठीनाल जुवारीः चोर महा वटपारोः वो इत्या-
 दीक जजे प्रञ्च तोनेः तो नीवृते ससारोः ॥ प०
 ३ ॥ पाप परालको पूजवन्यो अतीः मांनुं मेर
 अकारोः ते तुमनांमहुंता सनसेतीः सहे जे पर
 जलत संसारोः ॥ प० ४ ॥ परम धरमको मर
 समहारसः सो तुम नाम उचारोः यांसम मंत्र
 नहीं कोइ दूजोः त्रीचुवन मोहनगारोः ॥ प०
 ५ ॥ तो सुमरण वीनइ नकली युगमेः अवर
 न कोइ आधारोः मे वली जाउं तो समरण
 परः दीन २ प्रीत वधारोः ॥ प० ६ ॥ सुसमा
 रांणीको अग जातलुंः श्रीधर राय कूमारोः

वीनेचंड कहे नाथ नीरंजणः जीवन प्राण
हमारोः ॥ प० ७ ॥

॥ ढाल ७ ॥

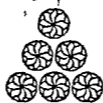
प्रतीष्ट सेन नरेसरको सुतः पृथ्वी तुम्ममहेतारीः
सुगण सनेही साहेव साचोः सेवगने सुषकारीः
॥ श्री० १ ॥ श्री जीनराज सुपासः पूरो आस
हमारीः ॥ टेक० ॥ धर्म कांम धन मुक्त इत्या-
दीकः मनवठीत सुष पूरोः वार २ मुज वीनती
एहीः जव २ चिंता चूरोः ॥ श्री० २ ॥ जगत
सीरोमण जक्ती तीहारीः कल्प वृद्ध समजाणुंः
पूर्ण वृम प्रजु परमेश्वरः जव रतने पीठाणुंः
॥ श्री० २ ॥ हूं सेवग तुं साहीव मेरोः पावन
पुरष वीज्ञांनीः जन्म २ जीत तीथ जाउं तोः
पालो प्रीत, पूरांणीः ॥ श्री० ४ ॥ तारण तोरण
असरण शरणकोः वीर दइ सो तुमं सोहेः तो

सम दीनदयाल जगतमेः इन्द्र नरेंद्रन कोहेः
 ॥ श्री० ५ ॥ स्वयंभु रमण वनो समुद्रांमेः
 सेल सुमेर वीराजेः तुग कूर त्रीभुवनमे मोटोः
 जक्ती कीयां दूष ज्ञाजेः ॥ श्री ६ ॥ आगम
 अगोचर तुं अविनासीः अलक अपंरु अरुपीः
 चाहत दर्शन वीने चंड तेरोः सत चीताणद-
 सरुपीः ॥ श्री ७ ॥

॥ ढाल ट ॥

जय २ जगत सीरोमणीः हूं सेवकने तुं धणी
 अवतो सुंगामी ज्ञणीः प्रभु आसा पूरो हम
 तणीः १ मुज महेस्करोः चंदा प्रभु जगजीवन
 अतरजामीः जवदूष हरो, सुणीये अर्ज हमारी,
 त्रीभुवन सांमी. ॥ २ ॥ चंदपूरी नगरी हती,
 महासेन नामे नरपती; राणी श्री लिद्धमावती,
 तसु नंदन तुं चढती रती. ॥मु० ३॥ तु सर्वज्ञ

महाज्ञाता, आत्म अनुभवको दाता; तुमतुमं
 लहीये साता, धनरजे जगमें तुम ध्याता ॥ मु०
 ४ ॥ सिवसुष प्रार्थना करसुं, उजल ध्यान हीये
 धरसुं; रसना तुम महीमा करसुं, प्रभु इनवीध
 न्नवसायर तीरसुं. ॥ मु० ५ ॥ चंद चिकोरनके
 मनमे, गाज अवाज हूवे घनमे; पीयु अन्नी-
 लाषां त्रीया तनमे, ज्युं वसीये प्रभू मेरा चीत
 मे. ॥ मु० ६ ॥ जो सुन्न नीजर साहव तेरी,
 तो मानो प्रभू वीनती मेरी; काटो कर्म नृम
 फेरी, प्रभू पुनरपी नहीं परुं न्नवफेरी. ॥ मु०
 ७ ॥ आत्मज्ञान दसा जागी, प्रभू तुम सेती
 लावन्या लागी; अन्य देव नृमना जागी,
 वीनेचंद तीहारो अनूरागी. ॥ मु० ८ ॥



॥ ढाल ए ॥

काकंदी नगरी जली हो, श्री सुग्रीव
 जूपाल; रामातसु पटरागणी हो, तसु सुत परम
 कृपाल. ॥ १ ॥ श्री सुवद जीनेश्वर वंदीये हो,
 टेरः त्यागी प्रजूता राजनी हो, लीधो सजम-
 नार; निज आतम अनुज्ञावथी हो, प्रजू पांम्या
 पद अवीकार. ॥ श्री० २ ॥ अष्ट करमनो राजवी
 हो, मोह प्रथम द्वय कीन, सुद समकीत
 चारीत्रनो हो, परमपायक गुण लीन. ॥ श्री० ३ ॥
 ज्ञानावर्णि दर्शनावर्णी हो, अंतराय कीयो
 अंत; ज्ञान दर्शन वले एत्रीहूं हो, प्रगब्धा
 अनंत. ॥ श्री० ४ ॥ अवावाह सुष पामीया
 हो, वेदनी कर्मष पायः अवगाहना अटल
 लही हो, आजपय करने जीनराय. ॥ श्री० ५ ॥
 नाम कर्मनो देकरी हो, अमुर्ति कहायः अग्रह
 लघूपणो अनुज्ञव्यो हो, गोत्रकर्मथी मुकाय.

॥ श्री० ६ ॥ अष्टगुणां कर ओलज्यो हो, ज्योती
रुप जगवंतः वीनेचंदके उर वसो हो, अहोनीस
प्रभू पूफदंत. ॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल १० ॥ जदवारी राग ॥

श्री झढरथ नृपती पीता, नंदा थारी
मायः रोमर प्रभू मोजणी, शितल नांम कहाय.
॥ १ ॥ जयश जीन त्रीभूवन धणी, करुणानीधी
कीरतारः सेव्यां सरुतरु जेहवो, वंठीत सुष
दातार. ॥ ज० २ प्राण पीधारो तुं प्रभू, पती-
वरता पती जेमः लगन निरंतर लग रही, दीनर
इधक प्रेम. ॥ ज० ३ ॥ सीतल चंदननी परे,
जपता नीसदीन जापः विषय कषायनी उपनी,
मेटो जवदूष ताप. ॥ ज० ४ ॥ आरतरुद्र पर-
णांमथी, उपजे चिंता अनेकः ते दूषकाए मां-
नसी, आपो अवीचल विवेक. ॥ ज० ५ ॥ रोगा

दीक पुध्यात्रीपा, शस्त्र अस्त्र प्रहारः सकल
 सरीरी दूष हरो, हीतसुं वीरद विचारः ॥ ज०
 ६ ॥ सुप्रसन होय सीतल प्रभू, तुं आसा
 विश्रामः विनयचंद्र कहे मोक्षणी, दीजे मुक्ती
 मुकांस. ॥ ज० ७ ॥

॥ ढाल ११ ॥

चेतन जाण कल्याण करणको, आण
 मिल्यो अवसररेः शास्त्र प्रमाण पीठाण प्रभू
 गुण, मन चंचल थीर कररे. ॥ १ ॥ श्रीयंश
 जीनेंद्र सीमररे. देर० सास उसास विलास
 नजनको, द्रढ विसवास पकररेः अजपाच्यास
 प्रकाश हिये वीच, सोसी मरण नीजवररे. ॥
 ॥ श्री० २ ॥ कंड्रप क्रोध लोत्त मद माया,
 ए सवही परहररे; सम्यक द्रष्टी सहीज सुष
 प्रगटे, ज्ञान दसा अनुसररे. ॥ श्री० ३ ॥

फुठ प्रपंच जोवन तन धन अरु, सजन सनेही
 धररे; ठीनमे ठोरु चले परजवकूं, बांध सुजा
 सुज्ज थररे. ॥ ध० श्री० ४ ॥ मांणस जन्म पदारथ
 जीनकी, आसां करत अमररे; ते पूर्व श्रुक्रत
 कमायो, धर्म मरम दील धररे. ॥ ४ श्री० ५ ॥
 विश्वसेन नृप वीश्रा राणीको, नंदन तुम वीस-
 ररे, सहेजे मिटे अज्ञान अविद्या, नक्तिपंथ
 पग नररे. ॥ ४ श्री० ६ ॥ तुं अविकार विचार
 आत्म गुण, नृम जंजालमपररे; पुढगल चाय
 मिटाय विनेचंद, तुं जीन तेन अवररे. ॥ ४
 श्री० ७ ॥

॥ ढाल १२ ॥

प्रणमुं वासपुज्य जीननायक, सदा सहायक
 तुं मेरो, विषमी वाट घाट नय थानक, पर-
 माश्रय सरनो तेरो. ॥ प्र० १ ॥ पल दल प्रवल
 डुप अनि ढारुण, जो चोतर्प ढीये घेरो; तो

तिण कृपा तुंमारी प्रचुजी, अरीयण हूय प्रगटे
 वेरो. ॥ प्र० २ ॥ विकट पहारु उजारु विचाले,
 ओर कूपात्र करे हेरो; तिण वीरीयां करी तोय
 तीमरण, कोजयन ठीन सके केरो. ॥ प्र० ३ ॥
 राजा पातस्या जो कोइ कोपे, अती तकरार
 हरे ठेरो; तदपीलु अनुकूल हूवे तो, ठीनमांहे
 मुट जाय केरो ॥ प्र० ४ ॥ राक्षस चूत पीसाच
 नाकणि, साकती जय नावे नेमो; दुष्ट मुष्ट
 उल ठेड्र न लागे, प्रचू तुम नांम जज्यां गेरो;
 ॥ प्र० ५ ॥ वीस्फोटक कूष्टादीक सकट, रोग
 असाध्य मिटे देहरो, विष प्यालो इमृत होय
 प्रगटे, जो विसवासजी नंद केरो ॥ प्र० ६ ॥
 मात जया वसु नृपके नदन, तत्व जथारथ
 बुध प्रेरो; वे कर जोमी विनेचंड विनवे,
 वेग मिटे मुज जव फेरो. ॥ प्र० ७ ॥

॥ अ० ४ ॥ पन्नणे श्रीमुप सरस्वति, देवीआपो
 आप; कही न सके तुंमसता, अलष अजपा
 जाप. ॥ अ० ५ ॥ मनबुध वाणी तो विषे,
 पहूचे नही लीगार; साषी लोका लोकनो, निर-
 वीकल्प निर्वीकार. ॥ अ० ६ ॥ मा सुजसा
 सिहरथ पीता, तसुसुत अनंत जीनंद; विनेचंद
 अव ओलप्यो, साहीव सहेजानंद. ॥ अ० ७ ॥

॥ ढाल १५ ॥

धर्म जिनेसर मुज हिवमे वसो, प्यारा प्राण
 समान; कबुह न विसरुं हो चीतारुं सही,
 सदा अपंरुत ध्यान. ॥ ध० १ ॥ ज्यूं पणीहारी
 हो कूंन न वीसरे, नेटवो वरत निधान; पलक
 न वीसरे हो पदमनी पिज ज्ञणी, चकवो न
 विसरे ज्ञान. ॥ ध० २ ॥ ज्यूं लोज्जी मन धनकी
 लालसा, जोगीके मन जोग; रोगीके मन माने

उषधी, जोगीके मन जोग ॥ ध० ३ ॥ इण
 पर लागी हो पूरण प्रीतनी, जाव जीव परयंतः
 जवेर चाहूं हो नपने आंतरे, जयजंजन जग-
 वंत. ॥ ध०४ ॥ काम क्रोध मद मठर लोभथी,
 कपटी कूटल कठोरः इत्यादिक अवगुण कर
 हूं जयों, उदे कर्मके जोर. ॥ ध० ५ ॥ तेज
 प्रताप तुमारो प्रगटे, मुज हीवनांमे आयः
 तो हूं आतमगुण संजालने, अनंत बल कही
 वाय. ॥ ध०६ ॥ जानुनृप सुवृताजीननी तणो,
 अग जात अजीरांमः विनयचढने बलज तुं
 प्रभु, सुध चेतन गुणधांम. ॥ ध० ७ ॥

॥ ढाल १६ ॥ रसीयानी

वांसुसेन नृप अचला पटरागनी, तसुसुत
 कूल सीणगारहोः जीनेसरः जनमत संत्री करी
 निज देशमे, मीरगी मार निवारहो ॥जी० १॥

निज रूपमे लागी; तुमही मम एकता जाणुं,
 एकत जर्म कल्पना मांनु. ॥ कूं० ६ ॥ श्रीदेवी
 सुर नृप नंदा, अहो सर्व इश्वर सुष कंदा;
 विनेचंद लिन तुम गुणमे, न व्यापे अवीधा
 जनमे. ॥ कूं० ७ ॥

॥ ढाल १८ ॥

तुं चेतन ज्ञज अरनाथने, ते प्रभु त्रिभु-
 वन राय; तातसु दरसन देवी माता, तेहनो
 पुत्र कहाय. ॥ १ ॥ साहव सीधो, अरहनाथ
 अवीनासी: सिव सुष लीधो, विमलवीज्ञान
 विलासी. ॥ सा० २ ॥ कोरु जतन करतां नही
 पांमे, एहवी मोटी मुम: तेजीन जक्तकरने लहये,
 मुक्ती असोल कटुम. ॥ सा० ३ ॥ समकीत सहीत
 कीया जिनजक्ती, ज्ञान दर्शन चारीत्र: तप
 विरज उपीयो गतीहार, प्रगटे परम पवित्र.

॥ सा० ४ ॥ स उपयोग सरूप चितानंद,
 जीनवरने तुं एकः दैत अवीद्यावी नरम मेटो,
 वाधो सुपे विवेक. ॥ सा० ५ ॥ अल्प अरूप
 अपंरुत अविचल, आगम अगोचर आपः नीर-
 वीकलपनी सकलंक निरजन, अदञ्चुत जोत
 अमाप. ॥ सा० ६ ॥ अल्प अनुन्नव इमती
 धांको, प्रेम सहीत नीत पीजेः हु तु ठोरु विने-
 चंद्र अतस, आतमरांम रमीजे. ॥ सा० ७ ॥

॥ ढाल १ए ॥

॥ लावणी ॥

मलीजीन बाल वृमचारी, कून्न पीता पर-
 नावती मैयाः जीनकी कुमारी. टेरः मालती
 कूप कदरा मांही, उपना अवतारीः मालती
 कूशम मालती-वंठा, जननी उरधारी. ॥म० १॥
 तीणथी नांम मलीजिन थाप्यो, त्री लुवन

गोटथी, एहवी अनुग्रहकरो परीवृमके. ॥ श्री०
 ३ ॥ सादपणो नही संगर्यो, श्रावग वृत नही
 कीया अंगीकारतो; आदर्या तो न अराधीया,
 तेहथी रुलीयो हूं अनंत संसारतो. ॥ श्री ४ ॥
 अवसमकीत वृत आदरु, तदपी अराधी उतरुं
 नवपारतो; जनमजीतव सफलो करुं, इणपर
 वीनवूं वार हजारतो. ॥ श्री० ६ ॥ सुमती
 नराधीप तुंम पीता, धनश् श्रीपदमावती माय
 तो; तसुसुत त्रीनवन तीलकलु० वंद तवीने
 चंदसीसन मायतो० ॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल २१ ॥ ख्यालकी ॥

वीजेसेन नृप विप्रा राणी, नमीनाथ जीन
 जायो; चोष्ट इंद्र मील कीयो ओठव, सुरनर
 आणंद पायोरे. ॥ १ ॥ सुग्यांनी जीवा, नजलेरे
 जीन इक्वीसमाः टेरः नजन कीयां नवशनां

उक्त, दुष दूजाग मीट जावे; कांम क्रोध
 मद मठर त्रस्ता, दूरमती नीकट न आवेरे.
 ॥ सु० १ ॥ जीवादीक नव तत्व हिचे धर, गेय
 हेय समजीजे; तीजी उपाधेय ओलषने, समकीत
 निरमल कीजेरे. ॥ सु० ३ ॥ जीव अजीव वदते-
 तीनु, गेह जथा रथ जांनुं, पुन्य पाप आश्रव
 परहरीये, हेय पदारथ मानुरे. ॥ सु० ४ ॥ संवर-
 मोक्ष निरजरा, नीजगुण उपादे आदरीये, कारण
 कारज समज जली वीध, ज्नीन शनीरणो करीयोरे.
 ॥ सु० ५ ॥ कारन ज्ञानसरूप जीवको, कारज
 कियो पसारो, दोनुं सापी सुध चेतन, आपो
 पोज त्यारोरे. ॥ सु० ६ ॥ तुसो प्रचु प्रचु सो तुंहे,
 दैत कल्पनामेटो, सत चेतन आनंद विनेचद,
 परमारथ प्रचु ज्ञेव्यारे. ॥ सु० ७ ॥

॥ ढाल २२ ॥

समुद्र वीजे सुत श्रीनेमीसर, जादवकूलनो

हार; परणीने कीम परहरो, यांरो कीम नीकले
 जमवार. ॥ १ ॥ जंबू कयो मानले रे जाया,
 मत ले संजमजार. टेर: ए आतुइं सुंदरी जंबू,
 तुम वीना वीलषी थाय; रवी आथम्यां जीण-
 परे, थारो वदन कमल कुमलाय. ॥ जं. १ ॥
 मतीहीणा ठे मानवी माता, मीध्यातमे जर-
 पूर; रुपे रमणी जे रमे, ज्यांने दूरगत नही ठे
 दूर. ॥ ३ ॥ माता मोरी सांजलो, जणनी लेसुं
 संजमजार: टेर: पाली पोसी मोटो कीयो,
 जंबू इम कीम दो ठीटकाय; मात पीताने मेलो
 रोवता, थारे दया नही दिलमाय. ॥ जं. ४ ॥
 एक लोटी पाणी पीउ, जीणमे मातपीता
 अनेक; सगलांरी दया पालसुं, आप समाणा
 लेष. ॥ मा: ५ ॥ थे मारे आंधां लाकनी; थे
 मारे प्राण आधार; तुज वीना मारे जग सुनो,
 नावे जांण मजांण. ॥ ज. ६ ॥ मातपीता मेलो-

वरुणे, मीलीया अनंती वार; तीर्ण तार्ण एको
 नही, पूत पीता परीवार. ॥ जं० ७ ॥ ए आंतुही
 सुंदरी, सुप वीलसो ससार; दीन णठा पमीया
 पवे, थे जल लीजो सजमन्नार. ॥ जं० ८ ॥
 रतन जरुतनो पिजरो, सुवो तो जाणे वंद;
 सुप वीलसे संसारना, झानी जाणे फंद. ॥ मा०
 ९ ॥ आंतुइ कांमणी जंबू, समजाइ एकण
 रात; जीनजीनो धर्म उलण्यो, संजम लेसी
 मोरी सात. ॥ मा० १० ॥ मोह मती राषो
 मारा मातजी, मोह कीयां वधे कर्म; आहट
 दोहट मन मत करो, थे तो करो श्रीजीनधर्म.
 ॥ मा० ११ ॥ मात पीताने तारीया, तारी आ-
 तुही नार; सासु ससराने तारीया, जंबू लीनो
 संजमन्नार ॥ जं० १२ ॥ पांचसे चोराने तारीया
 जंबू, लीनो संजमन्नार; इग्यारे जीव मुगते
 गया, ज्यारि वरत्या जेजेकार. ॥ जं० १३ ॥ जंबू

पुराण कृपा वीनेचंद प्रचुकी, अवते उलष पामी.
॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल २३ ॥

अश्वसेन नृप कूलतीलोरे, वांमादेवीलो
नंद; चितामण चीतमे वसेरे, दूरटले दूषकंद.
॥ १ ॥ जीवरे तुं पास जीनेसर वंद. टेरः जरु
चेतन मीस्र तपणेरे, कर्म शुजाशुज थाय; तेवी
जृम जग कदपनारे, आत्म अनुजव न्याय.
॥ जी० २ ॥ वेमी जय माने जथारे, सुंनधर
वेताल; त्यूमुर्ष आत्म वीषेरे, जांळयो जग वृम-
जाल. ॥ जी० ३ ॥ सर्प अंधारे राशकीरे, रूपो-
सीप मंजार; मार्ग आउ वर्णवारे, तुं आत्म
संसार. ॥ जी० ४ ॥ अगन वीषे नही जो मणीरे,
मणीसे अगन न होय; सुपनेकी संपत नहीरे,
ज्युं आत्ममे जग जोय. ॥ जी० ५ ॥ वांज पुत्र
जनमे नहीरे, संग सुसे नीरनाह; कूस मन

लगि व्योममरे, ज्युं जगत न आत्म मांह.
 ॥ श्री० ६ ॥ अजोनी ठे आत्मारे, हू निचे
 त्रीहुं काल; वीनेचद अनुभव जगीरे, तुं नीजरूप
 संजाल. ॥ जी० ७ ॥

॥ ढाल २४ ॥

धनश जनक सिधारथ राजा, धन त्रसलादे
 मातरे प्रांणी; ज्यां सुत जायो गोदपे लायो,
 वृद्धमान वीप्यातरे प्रांणी. ॥ १ ॥ श्रीमहावीर
 नमो वरनांणी, सासण जेहनो जांणरे, प्रवच-
 नसार विचार हीयामे, कीजे अर्थ प्रमाणरे
 ॥ श्री० २ ॥ सुत्र अने आचार तपसीया, च्यार
 प्रकार समाधाररे; ते करीये ज्ञवसागर तरीये,
 आगमज्ञाव अराधरे. ॥ श्री० ३ ॥ जो कंचन
 त्रीहुं काल कहीजे, जुपन नाम अनेकरे, ल्यु
 जग नाम चराचर जोनी, हे चेतन गुण ते करे.
 ॥ श्री. ४ ॥ अपणो आपवीपे थीर आत्म, सोह

जल चेतियोरे जले गया मोक्ष मजार. ॥टेरः॥
॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० १३० ॥

॥ ठाकूर जले वीराजोजी. ए राग. ॥

साहेव जले वीराजोजी, चोवीसे महाराज;
मुक्तीमे जले वीराजोजी: टेर: रूपज अजीत
संजव अजीनदन, सुमती पदम सुपास; चंढा
प्रजुने सुवढ जीनेसर, सीतल दो वीसवास.
॥ सा० १ ॥ श्री श्रेयांस वासपुज्य समरो,
वीमल वीमल मतीवंत; अनंतनाथ प्रजू धर्म
जीनेसर, शांत करो श्रीसंत. ॥ सा० २ ॥ कूंथु-
नाथ प्रजू करुणा सागर, अरहनाथ जगदीस;
मलीनाथ श्रीसुंनीसुवृत, नीत्य नमावूं सीस.
॥ सा० ३ ॥ इकवीसमा श्रीनमीनाथ नीरुपम;
रीष्ट नेमी जगधार; तोरणसे पाठा फीख्या, प्रजू

सीवरमणी ऋरतार. ॥सा०४॥ पारसर सारषा,
 प्रचूना वास रीषानाथ; वृद्धमांन सासनका
 सांमी, प्रणमुं जोकी हात. ॥ सा० ५ ॥ तुंम
 वीनां दूष पांयो अनंता, जनम मरण जंजाल;
 तीलोक ऋष कहे जीम तीम करने, तारो दीन
 दयाल. ॥ सा० ६ ॥

इति समाप्तम्

॥ कूरुलीया ॥

सुज्ज दीन चतुर मास कीयो, एमढावादके
 माय, सांमीजी माहाराजका, दर्शन कीयां
 सुष थाय. २ दयाल मुंनी दीपत एसे, सरढ
 पुनमकी रेण; चद्रमा चलकत जेसे, केसु कवीता
 कहे. श्रावक नीत वंदन जाते, करते मोटा
 पाप, सर्वीनर संपत पाते ?

